स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

मई 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

!! श्रमण संघ अविचल मंगल!!

।। जय आत्म - आनन्द - देवेन्द्र - शिव - महेन्द्र।।

श्रमण संघ

की स्थापना आज से 72 वर्ष पूर्व
अक्षया तृतीया सन् 1952 को
सादड़ी शहर (राजस्थान) की धरा पर
जैन कांफ्रेंस के
तत्कालीन पदाधिकारियों धर्माचार्यो/मुनिराजो के
त्याग - समर्पण - अथक पुरुषार्थ से
श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन समाज को
एक सूत्र एकता संगठन में पिरोने के
उद्देश्य से हुई थी।

इसके प्रति सदा सम्मान निष्ठा विश्वास
बनाए रखना हमारा परम् कर्तव्य है
तथा इसके संवर्धन सेवा अक्षुण्णता में
सहभागिता निभाकर शासन
भक्ति अवश्य करें ।

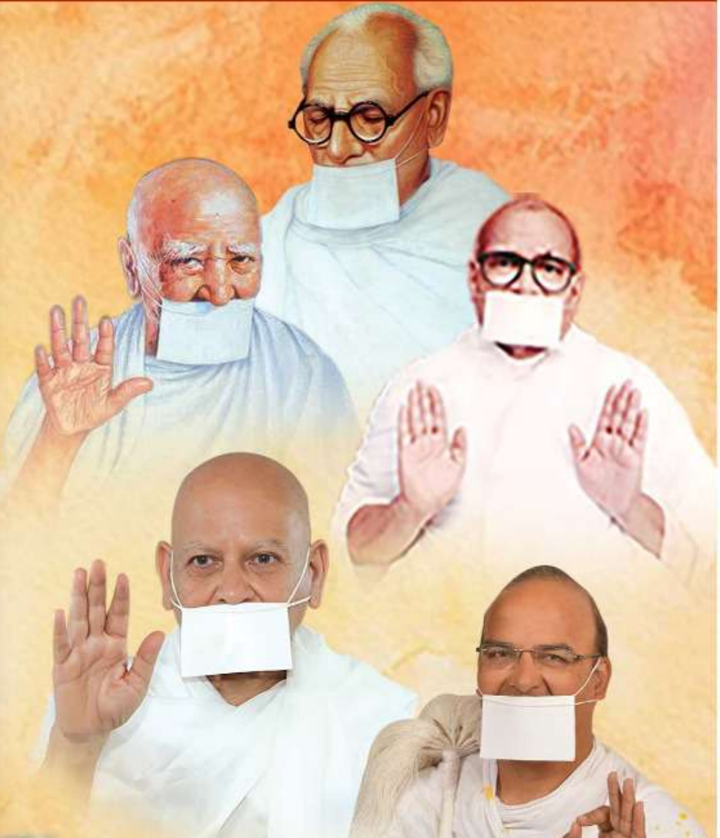

सूरत - ध्यानयोगी, युगपुरूष श्रमण संघीय आचार्य भगवंत डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज सा. चतुर्विध संघ के सान्निध्य में आखातीज (अक्षय तृतीया) के पारणे सम्पन्न।

सूरत : श्रमण संघीय आचार्य भगवंत के वंदन - दर्शन का लाभ लेते जैन समाज गौरव असम के राज्यपाल श्री गुलाबचंद जी कटारिया व अन्य महानुभाव।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 05 | मई - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09-10
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	11
श्रमण संघ निष्ठा पत्र	-	12
जटिल परिस्थितियों में...	- आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	13
अक्षय तृतीया, श्रमण संघ...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	14
श्रमण संघीय विज्ञप्ति	-	15
संघ सम्मान ही आत्म सम्मान	- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	16-17
आशा बलवान	- उपाध्याय पू. श्री कन्हैयालालजी म.सा.'कमल'	18
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	19-20
अनाशक्त योगी, गणाधीश..	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	21-23
संयम प्रकाश ...	- प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनिजी म.सा.	24-25
महासती सुन्दरी	- जिनशासन की श्रेष्ठ मणियाँ	26-27
आत्मा और परमात्मा	- प्रवर्तक पू. श्री मदनमुनिजी म.सा.'पथिक'	28-29
जैन धर्म में संघीय साधना...	- महासती पुष्पवती जी म.सा.	30
कष्टों से भागों मत सिर्फ...	- साध्वी युगल निधि-कृपाजी म.सा.	31-32
अक्षय तृतीया :...	- डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन, अजमेर	33-36
संस्कार रक्षा युद्ध में...	- श्री विजयकुमार चोपड़ा जैन, अजमेर	37
परिस्थित को जाने, समझे...	- श्री अनिल चतर जैन, जयपुर	38
वृद्धावस्था को सुखमय...	- श्री अभयकुमार जैन, भवानी मंडी	39-42
राष्ट्रसंत श्री कमलमुनिजी...	- सौ. मधु संचेती जैन, बिगोद	43
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा मार्च माह में सम्पन्न		44
समाचार प्रकाश		45-48
शोक समाचार		49-50

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत	98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे	98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर	93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर	98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद	92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई	98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई	94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर	98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली	98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर	78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली	98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता	98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना	70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे	98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई	98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी	87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर	94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली	98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे	98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे	98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर	93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर	98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत	70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई	98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर	83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर	94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर	98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर	92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती	98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर)	98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर	98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद	92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली	93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना	98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर	98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत	98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

E-mail: ajvk1973@gmail.com

बिना एकता के जिंदगी वीरान होती है ...

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव ने जितना विकास किया है उतना इस पृथ्वी पर किसी भी अन्य जीव का विकास नहीं रहा। अनेकों चुनौतियों का सामना करते हुए प्रकृति की बधाओ। को पार करते हुए मानव ने यहाँ की यात्रा की है। इस यात्रा में मानव का एक महत्वपूर्ण साथी रहा जिसके बिना यह विकास संभव नहीं।

मानव जीवन के विकास में एकता का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कल्पना कीजिए कि यदि मानव साथ रहना, एक दूसरे का सहयोग करना नहीं सीखता तो आज हम कहाँ होते। क्या यह उन्नति विकास आविश्कार जो आज हमारे पास है क्या वो होता? जीवन कितना वीरान होता जहां प्रेम सौहार्द नहीं वहाँ अपनत्व नहीं। एकता विभिन्न स्तरों पर मानव समाज को समृद्धि और समानता की दिशा में अग्रसर करती है।

सामाजिक विकास : एकता, सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। जब लोग एक-दूसरे के साथ एकता में रहते हैं, तो सामाजिक समानता, सहिष्णुता और समरसता की भावना विकसित होती है। इससे विभिन्न समाज के सदस्यों का सम्मान और समानता का भाव बढ़ता है, जो समृद्ध समाज के निर्माण में मदद करता है।

आर्थिक विकास : एकता, आर्थिक विकास के लिए भी आवश्यक है। जब लोग एकता में रहते हैं, तो उन्हें अधिक सहयोग और साझेदारी का मौका मिलता है। यह साझेदारी उन्हें अधिक उत्पादक और समृद्ध बनाती है, जिससे आर्थिक विकास होता है।

राजनीतिक विकास : एकता, राजनीतिक संघर्षों को सुलझाने में मदद करती है और एक संरक्षित और समर्थ समाज की नींव रखती है। जब लोग एकता में रहते हैं, तो उन्हें अपने राष्ट्र की स्थिरता और प्रगति के लिए मिल-जुलकर काम करने का मौका मिलता है।

मानवाधिकारों की सुरक्षा : एकता मानवाधिकारों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है। जब लोग एकता में रहते हैं, तो वे एक-दूसरे के साथ साझा किए गए मूल्यों और आदर्शों का समर्थन करते हैं, जिससे मानवाधिकारों की रक्षा होती है।

एकता मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में विकास और समृद्धि के लिए आवश्यक है। यह समाज को सुधारती है, राष्ट्र को मजबूत करती है, और मानवाधिकारों की सुरक्षा और संरक्षण में मदद करती है।

अक्सर समाज में लोग एक दूसरे की बात का बहुत जल्दी बुरा मान जाते हैं या किसी को आगे बढ़ता देख मन में इर्श्या पाल लेते हैं। फिर उस व्यक्ति की निंदा करके स्वयं को संतुष्ट करते है। यदि इर्श्या के स्थान पर प्रेम हो, मन में सौहार्द हो, एकता की भावना जब संघ, समाज का विकास होता है, केवल समाज नहीं अपितु परिवार में एकता का महत्व अत्यधिक है। परिवार वह स्थान है जहाँ हमें पहली शिक्षा, संदेश, और संस्कार मिलते हैं। एकता के बिना परिवार में संघर्ष, असन्तुलन और विघ्न हो सकते हैं, जो परिवार के स्वरूप को क्षति पहुँचा सकता है।

एकता के माध्यम से, परिवार के सभी सदस्यों के बीच संबंध मजबूत होते हैं। यह संबंध विश्वास, समर्थन और सहयोग पर आधारित होते हैं, जो हर परिवार के आत्मविश्वास और सशक्तता को बढ़ाते हैं। एकता के माध्यम से, परिवार के सदस्य एक-दूसरे का समर्थन करते हैं, जिससे उनकी संभावनाएं और सपने पूरे होने की संभावना बढ़ती है।

परिवार में एकता संघर्षों और समस्याओं को हल करने में मदद करती है। जब परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं, तो वे किसी भी परिस्थिति का सामना करने में सक्षम होते हैं और जीवन की मुश्किल स्थितियों को आसानी से पार कर पाते हैं। जिस परिवार में एकता है वह

परिवार बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना भी कर सकता है।

अत्यंत महत्वपूर्ण है कि परिवार में प्रेम व एकता को बढ़ावा दिया जाए और सभी सदस्यों को महत्वपूर्ण समझा जाए। इसके लिए सामाजिक समरसता, संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना आवश्यक है वर्तमान की आधुनिक जीवन शैली में, लोगों के बीच संचार के माध्यम बदल गए हैं। आज किसी के पास एक-दूसरे के लिए समय नहीं है। जितना हम एक-दूसरे से दूर होते चले जा रहे हैं उतना ही मानसिक अवसाद का शिकार रहे हैं। आधुनिक जीवनशैली में, भौतिक दूरी के कारण लोगों के बीच संचार कम हो गया है। बिजनेस या कैरियर के लिए लोग अक्सर अलग शहरों या देशों में रहते हैं, जिससे परिवार के सदस्यों के बीच भौतिक दूरी बढ़ गई है।

तकनीकी उन्नति के साथ, लोग अब अपने परिवार के सदस्यों के साथ इंटरनेट, सोशल मीडिया, और अन्य डिजिटल माध्यमों के माध्यम से संचार करते है जिस कारण वास्तविक संवाद की कमीं होती है और भावनाओं को समझने में कठिनाई होती है।

बिजी जीवनशैली और काम के जोर-शोर के कारण, लोगों के पास अपने परिवार के लिए समय की कमी होती है। इससे परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों में कमी आती है।

समर्थन का अभावः आधुनिक जीवनशैली में, परिवार के सदस्यों के बीच समर्थन का अभाव हो सकता है। व्यस्तताओं और स्थानीय समाज के दबावों के कारण, लोग अक्सर अपने परिवार के साथ समय बिताने के लिए समर्थ नहीं है। वर्तमान के आधुनिक युग में हमे एकतांनत सामंजस्य की अत्यधिक आवश्यकता है। एकता समाज परिवार को मजबूत बनाती है। यदि विघटन होगा तो विकास नहीं होगा। इसके लिये एक-दूसरे की भावनाओ का सम्मान करना चाहिए। धन के साथ प्रेम भी बढ़े इस बात का भी ध्यान रखना होगा, क्योकि यदि जीवन में एकता नहीं तो प्रेम नहीं और प्रेम नहीं तो जीवन नीरस और उबाऊ है।

आवश्यकता है इस बात की हम एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए जीवन व्यतीत करे। कभी किसी की कोई बात बुरी लगे उसे क्षमा करना सीखें। किसी से भूल हो जाये तो अपने अभिमान को हटाकर उस को समझायें। यदि पूरे विश्व को अपना मित्र समझा, संसार में प्रेम एकता का विस्तार होगा।

जैन धर्म के अनुसार अक्षय तृतीया का संबंध भगवान ऋषभदेव से है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव अपने साधना काल में एक वर्ष तक निराहार रहे, क्योंकि भगवान ऋषभदेव ने ही असि-मसि-कृषि का ज्ञान संसार को दिया और एक राजा का कर्त्तव्य निभाया। ऋषभदेव ही प्रथम साधु आदि योगी हुए। उनसे पूर्व कोई गृहत्यागी होकर श्रमण नहीं बना था। इस कारण उस समय जनता को दान के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। इसलिए किसी को भी आहार दान का ज्ञान नहीं था। एक वर्ष की तपस्या होने पर राजा श्रेयांस ने भगवान ऋषभदेव को इक्षुरस का दान दिया, जिससे प्रथम दानी राजा श्रेयांस को प्रथम आहार दान का लाभ मिला। इस दिन वैशाख शुक्ल तीज का था। इस कारण इस दिवस को अक्षय माना गया। इस कारण से सम्पूर्ण जैन समाज अक्षय तृतीया को तपस्या व दान के महापर्व के रूप में मनाता है।

अक्षय तृतीया पर दिया गया दान अक्षय है। सनातन परम्परा में भी इस दिन का विशिष्ट महत्व है। भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में होती है। सतयुग व त्रेता युग का आरंभ इसी दिन से है। श्री हरि विष्णु के नर-नारायण, हयग्रीव, परशुराम का अवतरण हुआ। देवी गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण इसी दिन माना जाता है। जैन धर्म के अनुसार अक्षय तृतीया को श्रमण संस्कृति के नए युग का आरंभ माना जाता है। भरत क्षेत्र का युग परिवर्तन भोग भूमि और कर्म भूमि के रूप में हुआ था।

अक्षय तृतीया पर ध्यानयोगी आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. एवं सभी वर्षीतप आराधक साधु-साध्वी जी महाराज की तपस्या की बारम्बार अनुमोदना करते हैं। सभी तपस्वियों को तपस्या में साता रहे। सभी तपस्वी श्रावक-श्राविकाएं भी अनुमोदनीय है। उन सभी भाई-बहनों का भी धन्यवाद जो अपना अमूल्य समय, ज्ञान, समर्थन अच्छे कार्यों में देते है। आप सभी पाठकों को अक्षय तृतीया पर्व एवं श्रमण संघ स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। ❖❖

अध्यक्षीय उद्‌गार

श्रमण संघ स्थापना दिवस का स्मरण

E-mail : rjachallani@gmail.com

– **आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

श्रमण संघ का गठन 72 वर्ष पूर्व मारवाड़ की धरा सादड़ी में अक्षय तिथि पर तत्कालीन विभिन्न-विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्यों, मुनिराजों के अथक पुरुषार्थ, त्याग, दूरदर्शिता, वृहद संगठन के सपने को साकार करने के उद्देश्य से हुआ। इससे पूर्व क्षेत्रीय साधु सम्मेलनों में इसकी अलग-अलग भूमिका भी महत्वपूर्ण रही। इस हेतु स्थानीय संघों के साथ जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली का अतुल्य सहयोग प्रयास रहा, जिसके फलस्वरूप स्थानकवासी समाज एक सूत्र में बंधकर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ कहलाया तथा सर्वसम्मति से प्रथम आचार्य के रूप में पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज विभूषित हुए। तत्पश्चात द्वितीय आचार्य के रूप में आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि महाराज तथा तृतीय आचार्य के रूप में पूज्य श्री देवेंद्रमुनिजी महाराज ने इस धर्म बगिया का बखूबी सिंचन किया तथा वर्तमान में चतुर्थ आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी महाराज के कुशल नेतृत्व निश्राय में लगभग 1300 श्रमण-श्रमणी धर्म जागरण का निरंतर कार्य कर रहे हैं।

श्रमण संघ की स्थापना के पश्चात शासन सेवा, संघात्मक विकास के अनेक अमूल्य ऐतिहासिक कार्य सुसम्पन्न हुए।

मैं स्थानकवासी समाज को भाग्यशाली समाज मानता हूँ और कहता हूँ आपने श्रमण संघ के रूप में संगठित होकर एक भव्य आदर्श स्थापित किया है। इधर-उधर बिखरे हुए मोतियों को एक माला में पिरोकर एकमेव स्तुत्य कदम उठाया है। शताब्दियों से बिखरा समाज आज श्रमण संघ के रूप में नित्य नए आयाम स्थापित कर रहा है। यह हम सभी के लिए परम आनन्द की बात है कि अपने अस्तित्व से लेकर आज तक श्रमण संघ अपनी उपस्थिति न सिर्फ स्थानकवासी अपितु समग्र जैन जैनैतर समाज में स्थापित करते हुए धर्म मार्ग पर आरूढ़ है।

हम सभी श्रमण संघ स्थापना दिवस पर अपने पूर्व तथा वर्तमान पदाधिकारी संतों/मुनिराजो का विशेष हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि चतुर्विध श्रीसंघ की सुदृढ़ता के लिए मन-वचन-कर्म से सदा प्रयत्नशील रहेंगे। इसी क्रम में श्रमण संघ को और सुदृढ़ व्यापक बनाने के उद्देश्य से आचार्य भगवंत के मंगल आशीर्वाद व युवाचार्यश्री की पावन प्रेरणा से जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा विशेष पहल करते हुए **'श्रमण संघ निष्ठा पत्र'** का प्रारूप तैयार किया गया, जिसे सभी प्रमुख संत-सतीवृंद की सेवा में भेजकर आशीर्वाद प्राप्त हुआ। जैन कॉन्फ्रेंस के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारीयो के सहयोग से अक्षय तिथि के पावन अवसर पर जिसका देशभर में विधिवत् शुभारंभ हुआ।

चेन्नई महानगर में युवाचार्य भगवंत की पावन निश्रा में इसका शुभारंभ हुआ तथा श्रद्धेय गुरुदेव ने इस प्रकल्प की अनुमोदना की। हमें अधिकाधिक रूप से इस निष्ठा पत्र के फार्म को भरना है और दूसरों को भी इसे भरने की प्रेरणा देना है। आपकी सुविधार्थ इस अंक में भी यह फार्म प्रकाशित किया जा रहा है।

अक्षय-तृतीया का पावन पर्व प्रत्येक वर्ष की वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। इस वर्ष 10 मई को यह विशेष दिवस हम सभी ने मनाया। अक्षय अर्थात जिसका कभी क्षय न हो, जो कभी नष्ट न हो। एक ऐसी तिथि (दिन) जिस दिन किया जाने वाला प्रत्येक कार्य अक्षय हो जाता है। अनेकों परिवार इस दिन की प्रतीक्षा करते हैं कि अपने रूके हुए सभी शुभ कार्य इसी दिन करें। किसी भी व्यक्ति को कोई भी कार्य करना हो तो वे इस दिन कर सकते हैं। धन्य हैं वे तपस्वी जिन्होंने तप का मार्ग अपनाया और इस दिन पारणा अपनाया। **गुरु भगवंतों का चातुर्मास स्थलों की ओर विहार गतिमान हैं सभी सेवा का लाभ लेवे, इन्हीं मंगलभावनाओ के साथ जय जिनेन्द्र !** ❖❖

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली - 110001

फोन.: 011.233 63729, 23365420 मोब.: 7289900012

Email-: aissjc1906@gmail.com

!! श्री महावीराय नमः !! !! श्रमण संघ अविचल मंगल !!

॥ जय आत्म - जय आनंद - जय देवेन्द्र - जय शिव - जय महेन्द्र॥

आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म. सा. के मंगल आशीर्वाद एवं

युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा. की पावन प्रेरणा से

पासपोर्ट साईज फोटो

क्रमांक ....

"श्रमण संघ निष्ठा पत्र"

1. मैं, ... परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों एवं आचार्य भगवंतों द्वारा निर्मित एवं वर्तमान आचार्य भगवंत द्वारा निर्देशित "श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के प्रति पूर्ण निष्ठा, आस्था एवं श्रद्धाभाव रखता / रखती हूँ ।
2. श्रमण सघीय गुरु परम्परा की ही मेरी तथा मेरे परिवार की गुरु धारणा / आम्नाय रहेगी ।
3. श्रमण संघीय साधु-साध्वीवृंद का यदि मेरे क्षेत्र में विचरण एवं स्थिरता रहेगी तो उनके दर्शन - वंदन, सेवा तथा जिनवाणी श्रवण का पूर्ण लाभ लेने का मेरा लक्ष्य रहेगा ।
4. श्रमण संघ के गौरव को बढ़ाने में सहयोगी बनूंगा । श्रमण संघ विरोधी किसी भी प्रकार की गतिविधियों एवं भ्रामक बातों को मैं सदैव नकारूंगा तथा न ही सुनूंगा, न ही आगे बढ़ाऊंगा ।
5. मैं प्रतिदिन नियमित रूप से अपने घर में नमस्कार महामंत्र का जाप तथा श्रमण संघ के सभी आचार्यो तथा ईष्ट गुरूदेवो पूज्यवरो की जयकार करूंगा । यथावसर धार्मिक अनुष्ठान करूंगा ।
6. मैं वर्ष में एक बार आचार्य भगवंत एवं परम्परागत पूज्य जनों के सपरिवार दर्शनार्थ जाने का भाव रखूंगा ।
7. मैं देव - गुरु - धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित रहूँगा तथा जिनवाणी एवं आगम के प्रति श्रद्धाभाव रखूंगा तथा साथ ही साथ मैं पूर्णतः सप्त कुव्यसन मुक्त मैत्री एवं धर्म युक्त जीवन जीने का पुरुषार्थ करुंगा ।

परिवार के मुखिया का नाम : .... पिता / पति : ....

गौत्र : .... मूल निवासी : .... उम्र : ....

लौकिक शिक्षा : .... व्यवसाय : ....

अन्य परिजन / नाम / मुखिया के साथ संबंध / मो. 1.. 2. ....

3. .... 4. ....5. ....

....

पूरा पता : ....

ग्राम : .... जिला : ....प्रान्त : .... पिन कोड : ....

दूरभाष : .... मोबाईल : .... व्हाट्सऐप : .... ई-मेल : ....

रूचि : ....

अन्य विवरण : ....

....

दिनांक : .... हस्ताक्षर : ....

उपरोक्त फार्म को भरकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली अवश्य भेजे ।

जटिल परिस्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय

- आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

कभी-कभी मनुष्य के सामने ऐसी स्थिति समुत्पन्न हो जाती है, जो स्पष्टतः अधार्मिक, अनैतिक दिखाई देती है। स्पष्ट परिलक्षित होता है कि अमुक व्यक्ति ने निश्चित ही पापाचार किया है।

ऐसी दशा में गम्भीर व्यक्ति का भी मानस खलबला उठता है, हृदय कठोर दण्ड सुना देता है, मृत्यु दण्ड भी दे देता है, उस व्यक्ति को बोलने तक का अवसर नहीं देता है, लेकिन नैतिकता का तकाजा है कि चाहे स्पष्टतः व्यक्ति अपराधी ही दृष्टिगत हो रहा हो, फिर भी आवेगों में बहकर कभी कोई निर्णय नहीं करना चाहिए, अन्यथा वह धर्मानुमोदित दिखाई देने वाला निर्णय भी अनैतिक और पापपूर्ण बन जाता है।

ऐसी ही स्थिति अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह के सामने समुपस्थित हो गई थी जिसमें नैतिक निर्णय की प्रमुख भूमिका एक महान जैनाचार्य ने वहन की। घटना इस प्रकार है -

बादशाहों के रनिवास तो बड़े होते ही हैं। उनके रनिवास में उनकी स्त्रियों (बेगमों) की संख्या अधिक होती है और लड़कियाँ भी बहुत होती हैं। बादशाह बहादुरशाह की अनेक पुत्रियों में से एक कुंवारी युवा पुत्री गर्भवती हो गई। यह सूचना प्राप्त होते ही बादशाह एकदम तिलमिला गये। उनकी आंखों से अंगारे बरसने लगे। बिना विशेष छानबीन किये और मामले को गहराई से समझे बिना ही आदेश दे दिया - 'ऐसी पापिनी कन्या का मुँह भी देखना पाप है, उसे जल्दी से जल्दी खत्म कर दिया जाय।'

जोधपुर नरेश अजितसिंहजी के प्रधान खींवसीजी भंडारी ने यह आदेश सुना तो वह इस युवा कन्या से मिले, भांति -भांति के प्रश्न किये, लेकिन उन्हें वह लड़की दुराचारिणी नहीं मालूम हुई। उन्होंने बादशाह को बहुत समझाया, किन्तु वह अपने कठोर निर्णय से टस से मस न हुआ।

उस समय जैनाचार्य श्री अमरसिंहजी म. दिल्ली में ही विराजमान थे। खींवसीजी भंडारी उनके दर्शन करने गये तो उनके मुँह पर उदासी थी। आचार्यश्री के पूछने पर उन्होंने अपनी उलझन प्रकट की - कन्या निर्दोष मालूम पड़ती है फिर भी बादशाह उसे दोषी मानकर मृत्युदण्ड देने पर उतारू हैं। आचार्यश्री ने उन्हें समझाया तो बादशाह ने खींवसीजी भंडारी से यह संपूर्ण रहस्य जानकर मृत्युदण्ड का आदेश स्थगित कर दिया और उस कन्या के चारों ओर कड़ा पहरा लगवा दिया। उस कन्या के गर्भ से जो पिंड निकला वह थोड़ी ही देर में बुलबुले के समान विनष्ट हो गया।

बहादुरशाह प्रभावित हुआ। उसने आचार्यश्री से जीव-वध न करने और मांस न खाने के नियम ग्रहण किये। सामान्य दृष्टि से बादशाह का कुवारी कन्या को इस स्थिति में मृत्युदण्ड देना उचित ही कहा जाता, इसे सभी धर्मानुमोदित और नैतिक ही कहते, कोई भी इसे अनैतिक न कहता, किन्तु नीति अथवा नैतिक निर्णय सामान्य दृष्ट्या नहीं लिए जा सकते। बहुत बार ऐसे निर्णय अनैतिक भी हो जाते हैं।

इसीलिए दण्ड निर्णय के विषय में और विशेष रूप से मृत्युदण्ड के निर्णय के विषय में आधुनिक न्याय की भी यही मान्यता है कि मृत्युदण्ड या तो दिया ही न जाए और यदि देना ही पड़े तो बहुत ही छान-बीन के बाद ही दिया जाए और यदि बाद में ऐसे तथ्य (facts) सामने आते हैं, जिनसे यह व्यक्ति निर्दोष प्रमाणित होता है तो उसका जीवन लौटने में न्याय सक्षम नहीं है।

न्याय के इस सिद्धान्त के अनुरूप ही नीति का विवेक-निर्णय का सिद्धान्त है। इसका हार्द यही है कि सतही तौर पर किसी भी बात का निर्णय नहीं करना चाहिए अपितु बहुत ही गहराई से छान-बीन कर ठोस जानकारी के आधार पर यथातथ्य निर्णय करना आवश्यक है अन्यथा नैतिक लगने वाले निर्णय भी घोर अनैतिक बनते देर नहीं लगती। विवेकपूर्ण नैतिक निर्णय के लिए नीति का यह श्लोक पूर्णतया सटीक है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं, गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः।।

कोई काम सहसा नहीं करना चाहिए। अविवेक ही बड़ी-बड़ी आपत्तियों का कारण है। सोच-विचारकर कार्य करने वाले के पास संपदाएँ स्वयं ही चली आती हैं। ❖❖

अक्षय तृतीया, श्रमण संघ स्थापना व गुरु ज्ञान के प्रति समर्पण

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

अक्षय तृतीया के दिवस भगवान ऋषभदेव को 13 माह के तप के पश्चात् इस अवसर्पिणी काल में प्रथम सुपात्र दान श्रेयांस कुमार के निमित्त से प्राप्त हुआ। तभी से अक्षय तृतीया पर वर्षीतप के पारणा करने की परम्परा आज भी चली आ रही है।

बड़ा तप - अरिहंत भगवान फरमाते हैं कि सबसे बड़ा तप कौन सा है? उपवास नहीं, मासखमण नहीं, 6 माह का तप नहीं, अनशन से कायोत्सर्ग तक 12 तप नहीं।

फिर प्रश्न होगा कि कौन सा तप जिससे जन्मों-जन्मों के पाप कर्मक्षय हो सकते हैं, होते हैं, हुए हैं?

अनन्त जीव उस तप से क्षायिक सम्यक्त्वी, केवली, सिद्ध हो गए, हो रहे है, आगे भी होंगे। वो तप है **'स्वरूप-स्थिरता'** जीव का जीव में एक घड़ी के लिए स्थिर होना क्षायिक सम्यक्त्व और ये स्थिरता बढ़ती जाए। बंद आँखों से या खुली आँखों से एक मुहूर्त तक पहुंच जाएं याने 48 मिनट तक पहुँच जाएं तो केवलज्ञान उत्पन्न हो जाएं। अनादि का मिथ्यात्व व मोह कर्म क्षय हो जाएं।

प्रेरणा :- पंचम आरे में पूर्ण 48 मिनट नहीं कर सकते परन्तु उसमें कुछ न्यून तक पहुँच कर जन्मों-जन्मों के पाप कर्म क्षय किए जा सकते हैं। सभी तपस्वी भाई-बहन जो भी वर्षीतप, एकान्तर तप की आराधना करते हैं और अक्षय तृतीया का पारणा करते हैं वे सभी आत्म-ध्यान से **'स्वरूप बोध'** प्राप्त कर **'स्वरूप में स्थिरता'** का अभ्यास करें। इससे आपका अनादि का शत्रु, कर्मों का राजा, मोह कर्म व मिथ्यात्व को जीतने का अवसर मिलेगा। बाह्य तप के साथ आभ्यंतर तप अवश्य करें। आभ्यंतर तप यानि -

एक-एक समय का उपयोग करना ।
भूतकाल के चिंतन का त्याग ।।
पुद्गल के चिंतन का त्याग ।
भविष्यकाल के संकल्प-विकल्प से मुक्ति ।।

संसार व संसारियों को समय नहीं देना। क्योंकि इतना बड़ा कार्य हमारे पास पड़ा है, अनन्त काल का मिथ्यात्व व मोह क्षय करना। अतः प्रत्येक आत्मार्थी वीतराग पथ का पथिक, स्वरूप बोध प्राप्त कर स्वरूप में स्थिरता का अभ्यास करें।

अपने जीवन का लक्ष्य तय करें। लक्ष्य सिद्धशिला है तो कर्म क्षय होंगे तभी साधना में तीव्रता आयेगी। एक-एक समय का उपयोग होगा। मौन पालना नहीं पड़ेगा, अन्तर मौन घटेगा। ध्यान करना नहीं पड़ेगा, ध्यान होगा।

श्रमण संघ स्थापना दिवस पर चतुर्विध संघ से आग्रह है कि जीवन के एक-एक समय का उपयोग आत्मार्थ के लिए प्रदान करें।

देह की अनुकूलता, शरीर की साता, इन्द्रियों के माध्यम से संसार को अपने भीतर भरने का त्याग कर प्रतिकूलता को स्वीकार करें।

भीतर का अनन्त सुख जो प्रत्येक जीव के भीतर भरा है पर प्रकट नहीं हो रहा। प्रश्न होगा, क्यों नहीं हो रहा है? तो अरिहंत प्रभु फरमाते है - पुद्गलों के साथ जो जुड़ाव है, पुद्गल में जो सुख ढूंढने के संस्कार है, विषयों में सुखाभास को सुख मानकर तृप्त हो रहे है, इसी कारण गुण भीतर होते हुए प्रकट नहीं हो रहे।

अतः श्रमण संघ स्थापना दिवस पर यही प्रेरणा है कि प्रत्येक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका अपने भीतर रहे गुणों को प्रकट करने का पुरुषार्थ करें तो निष्चित कर्मक्षय करते हुए वर्तमान में सुख का अनुभव करेंगे और नवीन कर्म के बंधन भी रूकेंगे। हम इस अनुभव से गुजर रहे है। आप भी इस अनुभव युक्त साधना के लिए आमंत्रित है।

गुरु ज्ञान अवतरण पर यही संदेश है कि जीवन में गुरु का बहुत बड़ा महत्व होता है। गुरु हमें अरिहंत से जोड़ देते है। अरिहंत बनने की साधना देते है और हमारा मार्गदर्शन करते हुए हमें प्रेरणा व उत्साहित करते हैं। हमारे भीतर की शक्तियों को जागृत करते हैं। मेरे जीवन में इस भव में बहुश्रुत श्रमण संघीय सलाहकार महाश्रमण गुरुदेव श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. निमित्त बने और उन्होंने हमें साधना में सहयोग देते हुए आगे बढ़ाया। आगे बढ़ते हुए स्वयं अरिहंत परमात्मा परम गुरु बनकर हमें पल-पल जगा रहे हैं और वीतराग पथ पर आगे बढ़ा रहे हैं।

वीतराग पथ के पथिक को किसी न किसी आत्मज्ञानी गुरु से शिक्षा प्राप्त कर साधना में आगे बढ़ना चाहिए। अन्त में निश्चय से आपकी आत्मा ही गुरु बनकर मार्गदर्शन करती हैं। व्यवहार व निश्चय में मिले सभी गुरुजनों के प्रति अनन्त अनन्त कृतज्ञता।

अक्षय तृतीया, श्रमण संघ स्थापना दिवस एवं गुरु ज्ञान अवतरण दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं। ❖❖

जय सीमन्धर श्रमण संघ जयवंत हो जय महावीर

॥ जय आत्म ॥ ॥ जय आनन्द ॥ ॥ जय देवेन्द्र ॥ ॥ जय ज्ञान ॥ ॥ जय शिव ॥

आचार्य शिवमुनि

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की ओर से
महाराष्ट्र प्रांत के प्रवर्तक महाश्रमण श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. की अनुशंसा से
महाराष्ट्र प्रांत में विचरणरत् साध्वी समुदाय की सुव्यवस्था एवं
श्रमण संघ के उत्थान में सहभागिता हेतु

खद्दरधारी कर्नाटक गजकेसरी पूज्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. की परम्परा से

नवकार आराधिका महासाध्वी डॉ. श्री प्रतिभाकंवर जी म.सा. को

"महाराष्ट्र प्रवर्तिनी"

पद से अलंकृत करता हूँ।

महासाध्वी जी श्रमण संघीय संविधान अनुसार श्रमण संघीय समाचारी का स्वयं पालन करें।
श्रमण संघ के आचार्य, युवाचार्य, प्रवर्तक एवं सभी पदाधिकारियों का सम्मान करें।
श्रमण संघ के उत्थान में महाराष्ट्र प्रांत में विचरणरत् सभी साध्वीयों की
सारणा, वारणा, धारणा, सेवा, सुश्रुषा, ज्ञान, ध्यान को पुष्ट करते हुए
श्रमण संघ की गरिमा-महिमा बढ़ाए।
श्रमण संघ में निष्ठा, संगठन और साधना को महत्व देकर जिनशासन की प्रभावना करें।
चतुर्विध श्रीसंघ महासाध्वी जी के इस कार्य में अपना सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

सहमंगल मैत्री,

दिनांक -: 25-04-2024

स्थान -: आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत (गुजरात)

शिवमुनि

(आचार्य शिवमुनि)

www.jainacharya.org
shivacharyaji@yahoo.co.in
09350111542
http://www.facebook.com/shivmuni
http://www.twitter.com/jainacharya
http://acharyashivmuni.blogspot.in/
http://www.youtube.com/jainacharyaji
JAINACHARYA

संघ सम्मान ही आत्म सम्मान

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

संघ शक्ति है, उर्जा है। अलग-अलग रहे तिनको से कतरा बनता है और एकत्रित तिनकों से कचरा साफ होता है। सूरज की बिखरी किरणे मात्र उष्मा देती है और वे ही पर्यावरण से केन्द्रित होने पर ऊर्जा बनती है। प्रत्येक इकाई में रहने वाली योग्यता एकत्रित होने पर पूर्णतया से प्रकट होता है। पदार्थ की यही व्यवस्था साधक जगत में भी लागू होती है। संघ यह साधक वर्ग की क्षमताओं के प्रकटीकरण का पारंपरिक अधिष्ठान है। संघ की विशेषताओं को नंदीसूत्र में भिन्न-भिन्न उपमाओं के माध्यम से उल्लेखित किया गया है। युगों के भवन, आगमों के रत्न, श्रद्धा का राजमार्ग चारित्र के प्राचीर से सुशोभित संघरूपी नगर है। संयम की धुनी, तप के आरे, सम्यतत्व की परिधि युक्त अन्य चक्र से अपराजित संघ रूपी चक्र है। शील (सदाचार, ब्रह्मचर्य) रूपी पताका, तप-व्रत-नियम रूपी अश्व से युक्त स्वाध्याय की सुमधुर ध्वनि से गुंजित, संघ रूपी रथ है। कर्म रूपी रज से उत्पन्न, भवजल प्रवाह से ऊपर उठे हुए, पांच महाव्रत रूपी पराग, सत्ताईस, गुणरूपी केसरयुक्त श्रावक-श्राविका रूप मधुकरों से घिरा, जिनेश्वर देव रूपी सूर्य से खिलने वाले श्रमण-श्रमणी रूप पत्रों से सुशोभित, पद्मकमल के समान संघ है।

संघ के महिमा वर्णन, गुण दर्शन का उद्देश्य है संघ की गरिमा का बोध होना। संघ का सम्मान जिनेश्वर देव का सम्मान है। तीर्थंकर परमात्मा का, अनंत सिद्धों का सम्मान है। जिन शासन प्रभावक महान आचार्य परम्परा का, श्रुतधुर, बहुश्रुत, वाचना प्रमुख महापुरुषों का सम्मान है। संघ का सम्मान तीर्थंकर गणधरों द्वारा प्ररूपित आगम का, आज्ञा का सम्मान है। संघ के सम्मान में साधना में शुद्धता, दृढ़ता, पवित्रता, तेजस्विता, वृद्धिंगत होती है। इसी मंगलमय भावना से हमारे पूर्वाचार्यों ने अलग-अलग सम्प्रदाय के रूप में विकीर्ण (बिखरी हुई) स्थानकवासी परम्परा के समान आचार विचाराधारा के परम्पराओं को श्रमण संघ के रूप में एकत्रित किया। एक समाचारी एक आचार्य की व्यवस्था को स्वीकारने हेतु उदार उदात्त भावना से अपने पद, वर्चस्व, अधिकार का विसर्जन किया। संगठन, सहयोग, सहभाग तथा सम्मान को सर्वोपरी मानकर नई व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान की।

आज इसी दूर दृष्टि पूर्ण तथा त्यागपूर्ण बलिदान का यह फल हमारी आज की पीढ़ी को प्राप्त हो रहा है। उत्तर से दक्षिण तक हजारों क्षेत्रों में रहने वाले परिवार श्रमण संघ के उस गरिमामय परम्परा से जुड़े है। हमारे संघ के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है अपने गुरुदेवों के बलिदान का महत्व जानकार संघ की गरिमा, संघ के सम्मान को अक्षुण्ण रखने हेतु कटिबद्ध होने का, रहने का। श्रमण संघ से अलग रही तथा अलग हुई दोनों परम्पराए श्रमण संघ के उन महापुरुषों की दुहाई देकर आज श्रमण संघ के परम्परागत परिवारों को साम्प्रदायिक घेरे में जकड़ने के लिए प्रयासरत है। गुरुधारणा धार्मिक, सैद्धांतिक, तात्विक अध्ययन, ज्ञान-ध्यान आदि के माध्यम से वे गांवों, शहरों में अपनी परम्परा के स्थापना विस्तार हेतु पूर्ण सामर्थ्य लगाए हुए है। छोटे-छोटे गांवों में जाना, वहाँ कुछ दिनों के लिए रूकना आदि ऐसे उपक्रम है जिनसे लोगों में उन सम्प्रदायों के प्रति विशेष अनुराग हो जाता है। परिणाम यह होता है कि उस क्षेत्र में अन्य सम्प्रदाय के साधु-साध्वी जी के लिए भी पहुंचना रहना मुश्किल हो जाता है।

श्रमण संघ में सरलता का विशेष संस्कार है। इस कारण अनेकों बार सामान्य बातें भी दूसरे लोगों के लिए जनता में भ्रम फैलाने हेतु अधिक काम आती है। आज अनेकों नये आज के साधक वर्ग द्वारा श्रमण संघ में प्राप्त स्वतंत्रता, स्वायत्त का दुरुपयोग होता दिखाई दे रहा है। हम अपनी मर्यादाओं का ध्यान स्वयं नहीं रखेंगे तो वे हमारे विषय में दुष्प्रचार, विषैल प्रचार में सहायक बनती है। हम कई बार अनजाने में अपनी आधुनिकता अथवा साहसिकता के आवेष में अकरणीय, अशोभनीय कार्य करते हैं। टैक्नोलॉजी के इस युग में 'हम किसी के काम नहीं' यह मानसिकता साधक वर्ग में बढ़ती जा रही है, यह हमारे लिए धर्म प्रचार का कम अपप्रचार का अधिक कारण बन रही है। श्रद्धा की अभिवृद्धि

की बजाय अश्रद्धा को पनपा रही है। किसी विशिष्ट व्यक्ति की भूलें पूरे संघ को प्रश्नचिन्ह के कटघरे में खड़ा कर रही है।

आज पूरे भारतवर्ष में जितनी जैन परंपरा है, उन सभी के श्रमण संघ एक ऐसा संघ है, जिसमें सर्वाधिक पी.एच.डी. के स्नातक है ऐसा कहा जाता है। आज हमारी इन प्रतिभाओं का सम्मान, उपयोग श्रमण संघ की गरिमा, अभिवृद्धि में होना चाहिए। ज्ञान-त्यागी-तपस्वी प्रतिभाशाली अनेक विविध शक्तियाँ श्रमण संघ में है। उनके क्षमता की प्रस्तुति सही तरीके से हो। संघ का गौरवशाली इतिहास लक्ष्य में लेकर वर्तमान में क्षुद्र बातों को छोड़ हम अपनी क्षमताओं का उपयोग संघ विकास, संघ के उज्जवल भविष्य के लिए करें यह हमारा लक्ष्य बने। हमारे संघ की समस्त प्रतिभाओं से, नई ऊर्जाओं से हार्दिक विनम्र आग्रह है। सोशल मीडिया के मोह को छोड़ प्रत्यक्ष में उपलक्ष्य अवसरों को अधिक महत्व दें। संघ का सम्मान हम सभी का सम्मान है। संघ के सम्मान को आघात न पहुंचे इसका हम ध्यान रखें तथा संघ के किसी भी सदस्य को कोई आंच न आए इस हेतु जागृत रहे। ❖

खुद से खुद की बात...

रचयिता - शिखरचंद छाजेड़ जैन, करही (मध्य प्रदेश)

जीवन भर किया, जगत से खूब संवाद
कभी वाद, कभी विवाद, पर हुई ना कभी-
खुद से खुद की बात
मैं कौन ?
आया कहाँ से ?
जाऊँगा कहाँ ?
कब तक यहाँ ?
इन सब बातों की,
आई न कभी याद
हुई ना कभी - खुद से खुद की बात
निशदिन-
इसकी-उसकी फरियाद
अनमोल मानव जीवन हुआ बर्बाद
लेने-देने की शिकायत
तेरे-मेरे की पंचायत
हर घड़ी, हर पल
बस एक ही तूफान
रोटी - कपड़ा और मकान
खेती - बाड़ी - दुकान
कल-कारखाने
थोथी शान
जाने दिये कितने ही इम्तिहान
किये खोखले आव्हान
फिर भी मन-
हुआ सदा लहूलुहान
सारभूत तत्व 'आत्म-कल्याण'
फिर भी बना मैं नादान
अबोध से बोध को आऊँ
समय रहते सँभल जाऊँ
अहिंसा-संयम-तप अपनाऊँ
यही जीवन का सार
फरमाते तीर्थंकर भगवान
रखकर समझ सच्ची
सोच सदा अच्छी
श्रवण-चिंतन-मनन के बाद
करूँ उस दिन की याद
जिस दिन-
छूटेंगे-टूटेगें सब संवाद
फिर किसको ? किसकी याद ?
जीवन भर किया
जगत से खूब संवाद
कभी वाद, कभी विवाद
पर हुई ना कभी-
खुद से खुद की बात
'खुद से खुद की बात...'

❖❖

आशा बलवान

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'

शरीर गल गया, सिर सफेद हो गया, मुँह में बिल्कुल दांत न रहे। बूढ़ा लाठी के सहारे चलता है। फिर भी आशाओं के समूह को नहीं छोड़ता। इसलिए जो लोग आशा के दास है, वे सारे जगत के दास है और आशा जिनकी दासी बन गई, उनका सारा जगत ही दास बन गया।

एक शिष्य गुरु के निर्देशानुसार जप-तप साधना करता था। सेवा भी करता था, पर उसके मन को शांति नहीं मिलती थी। एक दिन उसने गुरु से पूछा - 'गुरुदेव, मै त्याग करता हूँ, तप करता हूँ। आतापना करता हूँ, कष्ट उठाता हूँ, फिर भी चित उद्विग्न रहता है।'

गुरुदेव कहा - 'शिष्य, आत्मचिंतन करो कहीं तुम फल की आशा से तो उद्विग्न नहीं हो।' दुख का कारण आशा है। आशा की ही बहन है तृष्णा। तृष्णा आशा को बढ़ाती है और अधिक धन प्राप्त हो जाए, यह इच्छा तृष्णा है। करोड़पति को अरबपति बनने की तृष्णा रहती है। एक दिन में अरबपति बनूंगा, यह आशा तृष्णा को और ऊपर से बल देती है। आशा और तृष्णा दोनों मिलकर व्यक्ति को जीवन के अंत तक दुःखी देखते हैं। भगवान महावीर से जब यह पूछा गया कि 'दुखों पर किस प्रकार विजय प्राप्त कर मुक्त बना जा सकता है। तो उन्होंने एक ही सूत्र दिया - **कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं** अर्थात् तुम कामनाओं पर नियंत्रण कर लो, कामनाओं पर नियंत्रण करने के बाद निश्चित रूप से तुम दुःखों से मुक्त बन जाओगे। किन्तु आप आशा से अर्थात् कामना से मुक्त होने का प्रयास ही कहाँ करते है? आप तो रात-दिन ममता को पुष्ट कर रहे है। 'योग शास्त्र' में आशा को राक्षसी और विष की बेल कहा है।

अर्थात् मनुष्यों के लिए आशा ही राक्षसी है और आशा ही विष की बेल है। आशा ही पुरानी मदिरा है। अतः सब दोषों की खान ऐसी आशा को धिक्कार है। आशा के दो प्रसंग मुझे याद आ रहे है।

एक बार एक याचक, धर्मराज युधिष्ठिर के पास दान लेने आया। युधिष्ठिर ने कह दिया - 'अब तो संध्या हो गई है, आप कल आना।' भीम ने सुना तो वे नाचने लगे। युधिष्ठिर ने पूछा - 'भीम ! तुम अच्छे-भले मेरे पास बैठे थे तो तुम्हें अचानक क्या हो गया जो खुशी से नाच रहे हो?' भीम ने कहा - 'भैया, आपने याचक से कहा कि कल आना, इसका मतलब हुआ कि आपने काल को जीत लिया है और आपको कालजयी देखकर मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा।' युधिष्ठिर सोचने लगे - 'कल उठने की आशा पर सोया हुआ कोई भी व्यक्ति आज तक नहीं जग सका।' युधिष्ठिर ने अपनी भूल सुधार ली और याचक को उसी समय दान दे दिया।

दूसरी ऐतिहासिक घटना है कि शाह सुजा ने अपनी शहजादी को फकीर के पास रोटियां लेकर भेजा, परंतु फकीर के पास दूसरे दिन कल के लिए भी रोटियां रखी हुई थी। वे उन्हें फेंकते हुए फकीर शहजादी से बोले - 'फकीर बन जाने के बाद भी यदि कल की आशा मै रखता हूँ तो इसका अर्थ हुआ कि मैं दुःखों को मेरे करीब बुला रहा हूँ।'

मुख्य आशाएं दो है एक तो लाभ की, दूसरी जीवन की आशा। मनुष्य के जीर्ण हो जाने पर भी धन की आशा और जीवन की आशा जीर्ण नहीं होती - **धनाशा जीविताशा च जीर्यतोऽपि न जीर्यति।** योगी-यती, संन्यासी भी आशा से मुक्त नहीं है। जो योगी संसार से आशा छोड़कर प्रपंचों से व पापों से निराश रहता है, वही जगत गुरु बनता है।

बंधुओं ! अंत में यही कहूँगा कि आप झूठी मोह जन्य आशा को त्यागकर अपना जीवन सुखी करें। आशा के सुखद व दुःखद दोनों पहलुओं पर चर्चा हुई। आप विचारपूर्वक लोभाशा-दुराशा से तो अवश्य बचे। यदि आशा और कामना रखनी है तो ऐसी आशा एवं कामना से जुड़ो कि जिससे आत्मानुभव हो एवं आत्मानुभव के बाद कर्मों के क्षय का पुरुषार्थ करते हुए आप जन्म और मृत्यु के दुःखों से सदैव के लिए अपने आपको मुक्त कर सको। बस, ज्ञान सुधारस का अमृत पान करते हुए जीवन के विकास को आप सम्यक् रूप से संपादित करें, यही मेरी शुभकामना है। ❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

इस प्रकार पंजाब में जैन तिथि पत्र का प्रश्न कई वर्षों तक अत्यन्त गंभीर मतभेद का कारण बना रहा। इसमें विशेष बात यह भी थी कि दोनों पक्ष के आन्दोलनकर्ता इस विषय की गहराई में जाकर उसको समझने का प्रयत्न न करते हुए कषाय के वशीवर्ती होकर आन्दोलन कर रहे थे, जोकि एक उन्नतशील तथा जागृत समाज के अनुरूप आचरण नहीं था। जब यह आन्दोलन मुनियों से होकर गृहस्थों में भी आ गया तो इस मतभेद को दूर करने के सम्बन्ध में पंजाब जैन सभा की ओर से कई बार प्रयत्न किया गया। संवत् 1981 वि. की तारीख 19 जनवरी 1924 को लाहौर में मुनि श्री लालचन्दजी महाराज की उपस्थिति में उनकी सम्मति तथा स्वीकृति से कुछ प्रतिष्ठित साधु मुनिराजों तथा 15 श्रावकों की एक कमेटी नियुक्त की गई। इस कमेटी के आदेशानुसार मंत्रियों ने परिश्रम करके साधु मुनिराजों को जालन्धर नगर में एकत्रित करके उनका एक सम्मेलन किया। यह सम्मेलन लगभग एक सप्ताह तक चला।

इस सम्मेलन में गणावच्छेदक मुनि श्री लालचन्दजी महाराज, गणी उदयचन्दजी महाराज तथा महासाध्वी पार्वतीजी महाराज के मध्य पड़े हुए मतभेदों को दूर किया गया। इसके पश्चात जंडियाला में फिर मुनिराजों को एकत्रित किया गया। यहाँ भी कुछ मतभेदों को दूर कर फिर सबको प्रयत्न करके अमृतसर में एकत्रित किया गया। यह वार्तालाप अमृतसर में कई दिन तक चलता रहा। अन्त में मुनिराजों, आर्यिकाओं तथा श्रावकों की सर्वसम्मति से 21 अप्रैल 1924 को संवत् 1981 वि. में ही एक पूर्ण निर्णय कमेटी नियत की गई। इस कमेटी में आठ साधु श्री पूज्य महाराज की ओर से, आठ साधु विपक्ष की ओर से तथा 15 उन श्रावकों को रखा गया, जो 19 जनवरी 1924 को लाहौर की कमेटी में रखे गए थे। इस प्रकार इस निर्णय कमेटी में कुल 31 सदस्य रखे गए।

इसी समय सर्वसम्मति से यह भी तय किया गया कि इस कमेटी की बैठक 25 दिसम्बर 1924 को होशियारपुर में की जाए। किन्तु होशियारपुर की इस बैठक में श्री पूज्य महाराज के आठों साधुओं के पहुंच जाने पर विपक्ष की ओर से कोई साधु महाराज नहीं आए।

इसके अगले ही दिन होशियारपुर में 25 दिसम्बर 1924 को पंजाब जैन सभा की अंतरंग कमेटी का अधिवेशन भी किया गया। इसके सभापति जम्मू तथा काश्मीर राज्य के भूतपूर्व सचिव दीवान बिशनदास जी (सी.एस.आई.,सी.आई.ई.) थे। इसमें कई नगरों के चुने हुए श्रावकों के अतिरिक्त होशियारपुर के प्रधान श्रावक भी उपस्थित थे। इस बैठक में प्रस्ताव संख्या दो निम्नलिखित रूप से पास किया गया- "चूंकि अभी तक भी निर्णय कमेटी की सम्मति हो तो एक छोटी सी सहायक उपसमिति नियत कर दी जावे, जिसमें निम्नलिखित चार सदस्य हों। यह उपसमिति पत्री संबंधी प्रश्न पर सर्व सम्भव साधनों से जितना ज्ञान प्राप्त कर सके एकत्रित करके अपनी रिपोर्ट निर्णय कमेटी के सन्मुख उपस्थित करें। निर्णय कमेटी में उपस्थित होकर उस रिपोर्ट पर विचार किया जाए और निर्णय कमेटी पूर्ण आयोजन तारीख 21 अप्रैल 1924 के प्रस्ताव के अनुसार संग्रहित करे।"

श्वेताम्बर ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा 'रिपोर्ट पत्री निर्णय कमेटी' नाम से सन् 1925 के अन्त में छपवा कर प्रकाशित भी किया गया।

क्रमशः पत्री के सम्बन्ध में संघ में मतभेद इतना अधिक बढ़ा कि कुछ लोग दूसरा आचार्य तक बनाने का विचार करने लगे। गणी उदयचन्दजी से प्रस्ताव किया गया कि वह नए आचार्य का पद संभाल लें, किन्तु गणी उदयचन्दजी म. ने संघ की एकता को बनाए रखने की दृष्टि से इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा - "हम सब पूज्यश्री सोहनलालजी म. के सेवक हैं। वे हमारे आचार्य हैं और हम उनके साधु।" यह ठीक है कि इस समय विरोध चल रहा है और उनके साथ सम्बन्ध टूटा हुआ सा है, किन्तु हमको आचार्यश्री का सम्मान करना ही चाहिये। आचार्यश्रीजी के पास के संत

हमको वंदना करें या न करें, हम अवश्य वन्दना नमस्कार के द्वारा आचार्यश्रीजी का सम्मान करेंगे। आप लोगों के लिये न सही, किन्तु मेरे लिये आचार्यश्रीजी के अतिरिक्त एक और वन्दना भी आवश्यक है। वह मेरे गुरुदेव को वन्दना है। गुरुदेव श्री गैंडेरायजी महाराज पूज्य श्री की सेवा में है। मैं उनको भी वन्दना करूंगा। गुरुदेव के प्रति विनय भाव मैं नहीं छोड़ सकूंगा।

गणी उदयचन्दजी के इन उद्‌गारों का आदर करते हुए विरोधी मत रखने वाले सभी साधु गणीजी को आगे करके पूज्यश्री की सेवा में पहुंचे। उन्होंने गणीजी के आदेशानुसार उनकी वन्दना आदि की सभी विधि की। जब इन साधुओं के साथ पत्री और परम्परा के प्रश्न को लेकर चर्चा चली तो पूज्यश्री ने आगम पाठ निकालकर सब साधुओं के सम्मुख रख दिये और उनके सम्बन्ध में चर्चा करने को कहा। इस पर गणी उदयचन्दजी ने सविनय निवेदन किया - "भगवन् ! मैं तो श्री चरणों में प्रार्थना करने आया हूँ, शास्त्रार्थ करने नहीं आया। आप जानते हैं कि यदि मैं वादी के रूप में आता तो उसका स्वरूप कुछ और ही होता। हम तो आपके सेवक हैं। हमारा काम प्रार्थना करना है तथा आपका काम उस पर ध्यान देना है। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप वर्तमान समय की स्थिति को देखते हुए यदि पत्री का प्रचलन स्थगित कर देने की कृपा करें तो संघ में शांति स्थापित हो जाएगी।" किन्तु आचार्यश्री ने पत्री के प्रचलन को स्थगित करना उचित न समझा और संघ में मतभेद बना ही रहा। तथापि कुछ लोग संघ में एकता स्थापित करने का प्रयत्न करते रहे जो कालान्तर में सार्थक हुआ।

जैन कॉन्फ्रेंस की पहल व प्रयास : इसी कारण पत्री तथा परम्परा पक्ष के बढ़ते हुए मतभेद को दृष्टि में रखते हुए श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली ने अपनी जनरल कमेटी की एक बैठक 15 जून 1926 को वि. संवत् 1986 में की। इसमें उसने प्रस्ताव नं. 11 के अनुसार निश्चय किया कि कुछ निश्चित व्यक्तियों का एक डेपूटेशन अमृतसर में श्री पूज्य महाराज की सेवा में उपस्थित होकर उनसे इस विषय पर वार्तालाप करें। जैन कॉन्फ्रेंस ने उस डेपूटेशन में निम्नलिखित श्रावकों को सदस्य बनाया गया।

1. सेठ गोकुलचन्दजी नाहर (दिल्ली), **2.** सेठ वर्द्धमानजी पित्तलिया, रतलाम (म. प्र.), **3.** सेठ अचलसिंहजी, आगरा (उ. प्र.), **4.** सेठ केसरीमलजी चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान), **5.** श्री धूलचन्दजी भंडारी, रतलाम (म. प्र.), **6.** लाला टेकचन्दजी, जंडियाला गुरु (पंजाब), **7.** सेठ हीरालालजी नांदेचा, खाचरोद (म. प्र.)

यह प्रतिनिधि मंडल निर्णयात्मक निश्चय करके तारीख 7, 8 तथा 9 अप्रैल 1931 को अमृतसर में श्री पूज्य सोहनलालजी महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ। इस प्रतिनिधि मंडल के आने के अवसर पर अमृतसर में पंजाब महासभा एवं पंजाब भर के प्रमुख श्रावक भी एकत्र हो गए थे।

डेप्यूटेशन ने स्थानीय सद्‌गृहस्थों तथा अन्य स्थानों के गृहस्थों की उपस्थिति में आचार्यश्रीजी की सेवा में यथायोग्य नम्रतापूर्वक विनती की - "गुरुदेव! हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप जैन तिथि पत्रिका के प्रचलन को अभी स्थगित करके समाज की एकता को बढ़ाने में सहायता देने की कृपा करें और जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रकाशित टीम को स्वीकार करने की कृपा करें।"

प्रतिनिधि मंडल का यह निवेदन सुनकर श्री पूज्य महाराज ने उत्तर दिया - "यद्यपि जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रकाशित की गई रिपोर्ट में शास्त्रानुसार कई बातें विचारणीय तथा संशोधन की जाने योग्य हैं, किन्तु श्रीसंघ की एकता के विचार में हम अपनी संप्रदाय को इस टीम के अनुसार कार्य करने की आज्ञा देना स्वीकार करते हैं तथा जैन कॉन्फ्रेंस का यह कर्त्तव्य होगा कि वह अपनी टीम को शास्त्रानुसार बनावे। इस कार्य के लिए तथा श्रद्धा, प्ररूपणा, साधु समाचारी दीक्षा आदि के सम्बन्ध में विचार करने के लिये अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन का आयोजन करें। यह सम्मेलन किसी ऐसे स्थान पर शीघ्र से शीघ्र किया जावे, जहाँ पंजाब के साधु भी सुगमता से पहुंच सकें। इस सम्मेलन में इन सभी विषयों के सम्बन्ध में शास्त्रनुसार निर्णय किया जावे। यह आवश्यक है कि इस मुनि सम्मेलन में जैन कॉन्फ्रेंस की वर्तमान टीम की अवधि समाप्ति होने के पूर्व ही भविष्य के लिये नई टीम बना ली जावे।

(... क्रमशः)

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

अनासक्त योगी, गणाधीश, पूज्य श्री उमेशमुनिजी म.सा. 'अणु'

किसी भी महान व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना सहज नहीं होता और वो भी ऐसे जिनमें सागर की गंभीरता हो, आचार में दृढ़ता हो, विचारों में एकता हो और ऊपर से संयम का वज्र कवच हों। मालवा की शस्य श्यामला उर्वरा भूमि में सिर्फ जीवन पोषक धान्य ही नहीं अपितु "मानव रत्न" भी पकते हैं और जब कोई जीव इसी मालव भूमि में संस्कार बल का सामर्थ्य लेकर जन्म धारण करता है तो अमावस की गहन अंधकारयुक्त रात्रि भी मिथ्यात्व को हटाकर पूनम के चाँद की तरह पुलकित हो उठती है। बस ऐसा ही कुछ प्रसंग था जब मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की "थांदला" नगरी में "घोड़ावत परिवार" में श्रद्धेय, जिनशासन गौरव, गणाधीश पूज्य श्री उमेशमुनिजी म. 'अणु' का जन्म हुआ।

तीर्थंकर व चक्रवर्ती की माता 14 स्वप्न देखती है उन्हीं 14 स्वप्नों में से सिंह का स्वप्न जब माता "श्रीमती नानीबाई" ने देखा तो उन्हें गर्भ में आये जीव का अलौकिक अनुभव हुआ। पिता श्री रिखबचंदजी ने उन्हें कहा - "एक पवित्र आत्मा ने जन्म धारण करने के लिये तुम्हारे गर्भ में प्रवेश किया, ऐसा स्वप्न संकेत हैं।" तब माता ने कहा - "तब तो मेरा मातृत्व धन्य हो जायेगा, धन्य हो जायेगी मेरी कोख।" चारों ओर ऐसा लगने लगा मानों गर्भस्थ जीव भी प्रशस्त स्थान से च्यवकर आया था।" आत्म कल्याण की कामना के साथ-साथ विश्व कल्याण का सुनहरा भविष्य संजोकर। आपके गर्भ में आने से पूर्व माताजी तपस्या करती रहती थीं।

समय आगे बढ़ा, जब पुण्यात्मा के जन्म की खुशियाँ मनाती है तो इस धरती की दशों दिशाएं पुलकित हो उठती है, प्रत्येक जीव को आभास हो जाता है कि "किसी श्रेष्ठ जीव का आगमन हो चुका है।" यह वह समय था - फाल्गुन वदी (सोमवती) अमावस्या की रात, वि.सं. 1988, सोमवार दिनांक 7 मार्च 1932 जब अमावस्या के गहन अंधकार ने संपूर्ण वातावरण को घेर रखा था। चारों और केसर वर्षा से वातावरण सुगंधित बन गया था, क्योंकि किसी त्यागी आत्मा ने जन्म जो ले लिया था। अपने 9 भाई-बहनों में पाँचवें नम्बर की सन्तान बनी आत्मा के उपर अपनी माता का स्नेह कुछ विशेष था जो बिल्कुल प्राकृतिक था। नगर में दीक्षा महोत्सव का उत्सव चल रहा था जो नवागंतुक शिशु का नाम रखा गया "उत्सवलाल"। आपको माता नानीबाई एवं पिता श्री रिखबचंदजी की गोद में धर्म के संस्कार प्राप्त हुए हैं। कुछ पूर्व भव के संस्कार तो कुछ परिवार के धार्मिक संस्कारों में ओच्छध को प्रवेश दिलाया गया तब उनका नाम रखा 'उमेशचन्द्र घोड़ावत'। आपकी प्राथमिक शिक्षा थांदला के जैन स्कूल में हुई। आपका जन्म नाम ओच्छवलाल था। जिसे आपके शिक्षक मामा बालेश्वरदयाल जी (स्वतंत्रता सेनानी) ने उमेशचन्द्र किया। कक्षा छः तक आते-आते उमेश के मन में साहित्य व कविता लेखन की रूचि के बीज पल्लवित होने लगे थे। मोती जैसे सुन्दर अक्षरों के कारण साधु-साध्वी आपसे लेखन करवाने लगे, जिससे आपकी धर्म के प्रति अभिरूचि गहरी हुई।

समय फिर कुछ आगे बढ़ा...। बालवय में ही समस्त ज्ञान संस्कारों से उनके जीवन में कब संसार के प्रति विरक्ति का दीप प्रज्ज्वलित हो उठा यह तो वे शायद स्वयं भी कभी न जान पाये होंगे। पढ़ने में अत्यन्त रूचि होने के बावजूद कक्षा 7 के बाद का व्यावहारिक शिक्षण उन्होंने बंद कर दिया और जान लिया कि इस पढ़ाई का साधना के मार्ग में कोई उपयोग नहीं है। 'उमेश' अब मन से वैरागी बन गये और उनकी हर क्रिया में वैराग्य प्रकट होने लग गया था। अब तो बस प्रतीक्षा थी द्वितीय मनोरथ के पूर्ण होने की की 'वह दिन धन्य होगा, जब मैं पंच महाव्रत रूपी निर्ग्रन्थ दीक्षा अंगीकार करूंगा।'

समय अपनी चाल से आगे सरकता गया..। साहित्य में अत्यधिक रूचि होने के कारण 17-18 वर्ष की आयु में 'अर्पिताणु के नाम से पत्र-पत्रिकाओं में धार्मिक लेखन का कार्य प्रारम्भ कर विया जो बाद में 'अणु' नाम से परिवर्तित हो गया । अणु अर्थात् लघु, छोटा । आज दुनियाँ की दृष्टि में आप निःसंदेह महामहिम है, गणाधीश है, महानायक है, महामुनि है। फिर भी अपने आपको 'अणु' ही मानते हैं। जब एक जल बिन्दु सागर में मिलता है तब वह बिन्दु सागर कहलाता है वैसे ही 'अणु' जब अनेक सद्गुणों को प्राप्त कर लेता है तब वह 'अणु' होते हुए भी विराट् रूप धारण कर लेता है। कहा भी तो है जो स्वयं को लघु, नम्र, विनय से पूर्ण

बना लेता है वहीं ऊपर उठता है। विशाल बना देता है। बस पूज्य गुरुदेव का यही लघुपन उन्हें विराट और विशाल बना देता है।

समय बढ़ रहा था तो बस जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही..। मन में सिर्फ एक ही लगन कि परिवार से दीक्षा की आज्ञा लेना। कविवर्य प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सूर्यमुनिजी म. का शिष्य मंडली के साथ थांदला नगर में पदार्पण होना तो मानो ऐसा हुआ कि सूरज स्वयं चलकर घर आया हो। उमेश की भावनाओं को आधार स्तम्भ प्राप्त हो गया। उम्र से अभी किशोर थे, किन्तु प्रज्ञादृष्टि से गुरु चरणों में समर्पित होने को लालायित थे। बस एक ही विनंति की 'भगवन्! मैं स्वयं आपश्री के चरणों में समर्पित होकर मानव भव के चरम और परम लक्ष्य को पाना चाहता हूँ। गुरुदेव ने कहा- 'वत्स ! तुम्हारी भावना सफल होगी, सफलता तुम्हारा वरण करेगी।' परिवारजन पुत्र की धार्मिक भावनाओं से अनजान तो नहीं थे लेकिन वे नहीं चाहते थे कि उनकी आकांक्षाओं का शिखर साधु बनकर अध्यात्म की राह पर चले, इसलिये उनकी सगाई करने का निश्चय किया। किन्तु होनी को तो कुछ और ही.. इसलिये सगाई के वक्त घर से भागकर रात भर एक सुनसान गढ्ढ़े में छिपे रहे। सगाई के बंधन से मुक्त होने के बाद उमेश ने एकान्त, आत्मचिन्तन और अधिकाधिक धर्माराधना से स्वयं को जोड़ दिया। सारे प्रयास, कोशिश, आग्रह, विनंति सिर्फ एक ही दिशा में कि दीक्षा के लिये घर से आज्ञा पत्र मिल जाये, लेकिन समय अभी आया कहाँ था ?

युवावस्था आने पर विवाह संबंध आपकी इच्छा के विपरीत तय कर दिया गया, परन्तु आप तो संसार से विरक्त होना चाहते थे, इसलिए मौखिक व लिखित में आज्ञा मांगी, लेकिन दीक्षा की आज्ञा नहीं मिली। तब भी आपने पैदल विहार आदि प्रारंभ कर दिया तथा लोच करना भी दीक्षा के पूर्व ही सीख लिया था। इसके साथ ही आपने जमीकन्द, रात्रि भोजन त्याग, प्रतिदिन नवकारसी, पौरसी, उपवास आदि नियम ग्रहण करके इनका पालन प्रारंभ कर दिया। समय की बढ़ती चाल ने जन्म लिया 'साहस' को साहस था घर छोड़कर जाने का माता ने सहयोग दिया, पहुँचे सीधे गुरु चरणों में। वैराग्य अपने उत्कृष्ट चरम सीमा पर था और योगानुयोग कविवर्य प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सूर्यमुनिजी म. का वि.सं. 2010 का चातुर्मास थांदला में होना तय हुआ। संवादों के आदान-प्रदान चलते रहे, परिवारजनों की रोकने की कोशिशें निष्फल साबित होती जा रही थी, अंततः परिवार वालों ने जान लिया था कि संयम साधना से सिद्धत्व को पाने की इच्छा सशक्त और सुदृढ़ है जिसे वे मिटा नहीं सकते हैं और आज्ञा पत्र प्राप्त हो गया। प्रतीक्षा की घड़ियां रंग ला चुकी थी और अवसर मानों प्रतीक्षा कर रहा था।

आपकी इच्छा व संयम के प्रति निष्ठा को ध्यान में रखते हुए आपके परिजनों ने आज्ञा प्रदान की और अन्ततः समय मानो थम गया.. रूक गया.., दिन था - चैत्र सुदि तेरस, वि. सं. 2011, गुरुवार, दिनांक 15 अप्रैल 1954 महावीर जन्म कल्याणक का पुण्य दिवस। अंतर जागरण की महायात्रा का प्रारम्भ होने जा रहा था। माता ने अपने हृदय थाल में मंगलमयी कामनाओं को संजोकर अपने लाड़ले की अंतिम आरती उतारी.. कितना हृदयस्पर्शी दृश्य रहा होगा।

परम पूज्य महाराष्ट्र मंत्री श्री किशनलालजी म., पण्डित रत्न, प्रसिद्धवक्ता परम पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म., प्रवर्तक पण्डित रत्न श्री सूर्यमुनिजी म. के मुखारविन्द तथा अनेक संत-सतियों की साक्षी से थांदला नगरी में दीक्षार्थी की दीक्षा-विधि सम्पन्न करवायी, करेमि भंते का पाठोच्चारण करवा कर नवदीक्षित का नाम रखा - 'श्री उमेशमुनिजी म. ' जो कविवर्य प्रवर्तक पूज्य श्री सूर्यमुनिजी म. के पंचम शिष्य के रूप में घोषित किये गये। इस समय आपके मुखमण्डल पर त्याग की आभा, प्रसन्नता की प्रभा व संयम की विभा झलक रही थी। आपका मन गा रहा था - आज मैंने 'लक्ष्य' पाया, जिन्दगी का ध्रुव सितारा पाया।

समय अब कभी नहीं रूका.. बस अपनी निर्बाध गति से अनवरत चलता रहा जब आपश्रीजी की संयम यात्रा ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की ज्योति से संपूर्ण लोक को जगमगा रही थी। अपने ज्ञान क्षेत्र को अधिकाधिक विस्तार देते चले गये और उसी ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र बिखेरते चले गये। 'प्रवर्तक पद' उपाधि 'शासन गौरव' की ख्याति, 'अध्यात्म योगी' और भी कई विशेषणों से सज्जित नामावली आपके नाम के आगे जुड़ती चली गई। जिनशासन की प्रभावना का अलौकिक यश आपको मानो वरदान में ही मिला।

समय के बहते हुए झरने में से आपके साहित्य की कई फुहारें निकली, जो युगों-युगों के लिए अमर हो गई। आपके द्वारा लिखित रचनाएं जिनमें मौलिक रचनाएं, अनुवाद, सम्पादन और विवेचन है। लक्ष्य की ओर उठो-बढ़ो, के केशी-गौतम संवाद, तत्त्वार्थ सूत्र, मोक्ष-पुरुषार्थ भाग 1 से 7

आदि 50 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनसे सभी लाभान्वित हो सकते हैं। ईस्वी सन् 1987 में पूना सम्मेलन में पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा., उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा., महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा., सलाहकार श्री रतनमुनिजी म.सा., प्रज्ञामहर्षि सलाहकार श्री सुमनमुनिजी म.सा. आदि संतों ने आपको उपाचार्य पद देने का प्रस्ताव रखा, परन्तु आपने उस समय 'मुझे अपना समय स्वाध्याय-ध्यान आदि में लगाना है।' ऐसा कहकर नम्रतापूर्वक संतों को स्पष्टतः पद के लिए मना कर दिया था।

आपश्री ने अब तक 50 हजार कि.मी. से अधिक का विहार किया है। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान में अब तक आपके 54 चातुर्मास हो चुके हैं। दैनिक चर्या में आपके द्वारा कुछ दृढ़ क्रियाएं - जिनमें प्रतिदिन प्रातः 2 बजे से स्वाध्याय प्रारम्भ करके 1500 से 2000 तक गाथाओं का स्वाध्याय, 36 वंदना करना, दोपहर में नींद नहीं लेना, प्रतिदिन पद्मासन में एक घंटे का लोगस्स का ध्यान करना आदि क्रम अनवरत जारी है। आप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान हैं। आपने कई ग्रंथों का आलेखन किया है।

आपमें सेवा की उत्कृष्ट भावना है। गुरुवर श्री सूर्यमुनिजी म., गुरुभ्राता श्री सुरेन्द्रमुनिजी म., श्री रूपेन्द्रमुनिजी म. के अस्वस्थता के काल में की गई सेवा-सुश्रुषा अनन्य श्रद्धा भावना प्रकट करती है। आपके मुखारविंद से अभी तक लगभग 80 से भी अधिक दीक्षाएं दी जा चुकी हैं। वर्तमान में आपके आज्ञानुवर्ती साधुओं की संख्या लगभग 25 और साध्वियों की संख्या लगभग 107 है।

आचार्य प्रवर श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. ने आपके बारें में फरमाया- 'संपूर्ण श्रमण संघ में प्रवर्तक श्री उमेशमुनिजी म. ही एक ऐसे संत हैं, जो समय-समय पर आगमानुसार सत्य बात निर्भयतापूर्वक साथ ही विनम्रता से लिखते एवं बोलते हैं। मुझे गौरव है ऐसे संत-रत्न को पाकर।'

श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. 'कुमुद' के शब्दों में - 'आप अपने आप को 'अणु' लिखते हैं, अणु की तरह छोटा समझते हैं यही इनकी महानता का विधायक तत्त्व है।'

भीष्म पितामह श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. ने कहा कि 'आप अपनी क्रिया स्वाध्याय, ध्यान, साधना से सम्पूर्ण जैन समाज में एक आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

शाश्वत सुख पाने के लिए मुख्य चार बातें भगवान् ने बताई हैं - सम्यक् - ज्ञान, दर्शन चारित्र और तप। मानव जीवन अत्यन्त विशाल है। बस, जरूरत है विशालता महानता प्रकट करने की। आपश्रीजी ने सही दिशा में पुरुषार्थ किया है, आप मानव से महामानव बने हैं एवं आपकी छवि इस जगत् में परमात्म स्वरूप है।

जीवन की महानता प्रकट करने हेतु सर्वप्रथम आपने अपने आन्तरिक संकल्प को दृढ़ बनाया है। दृढ़ संकल्प एवं दृढ़ मनोबल जीवन को मजबूत एवं पुरुषार्थी बनाकर ही रहता है एवं दृढ़ संकल्प से आपने अपने मन को, विचारों को अपने लक्ष्यों पर केन्द्रित किया है, विचारों एवं मन की एकाग्रता, साधना एवं सिद्धि प्राप्ति का सरल उपाय है।

आपने जीवन की महानता का आनंद लेने के लिए मन एवं विचारों तथा मन की एकाग्रता के विषय में चिन्तन किया है एवं गहराई तक इसका ज्ञान प्राप्त किया है। इस तरह आपने अपने जीवन को गुणरूपी सुवास से महकाया है। सद्गुण प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त किया है। आपने अपनी आत्मा के शुद्ध स्वरूप को जाना है एवं आत्म साधना की है और यही आत्म- साधना, आत्म ज्ञान के महान् शिखर पर ले जाकर आत्मा को परमात्मा बनाने में समर्थ बनता है। इस तरह आपने अपने जीवन में उत्तमता, महानता पाने के लिए शाश्वत सुख पाने के लिए आत्म-स्वरूप शुद्ध ज्ञान को प्राप्त किया है। यही आत्म-स्वरूप शुद्ध ज्ञान आप जग में लुटा रहे हैं।

उमेश तो समाज के कंटक उठाने आए हैं।
मोक्ष के साधन-जग हेतु जुटाने आए हैं।
उग्र तपस्या से जो कुछ पाया है जीवन में -
उसे भी मुस्करा कर लुटाने आए हैं।

महामहिम प्रज्ञा पुरुष की श्रेष्ठता का वर्णन और अधिक कर सकूँ ऐसी मुझमें वो योग्यता ही नहीं है। मैं कहाँ तक वर्णन करूँ। कितना भी कुछ कहूँ हर बार अधूरा ही रह जाएगा। आपका विराट् रूप कल्पना तट पर नहीं समाता। हर बार शेष रह जाएगा। (यह आलेख जब आप गणाधीश थे, तब का है।)

करीव 58 वर्ष के सुदीर्घ संयम साधनामय जीवन के धनी गणाधीश श्री उमेशमुनिजी म. 'अणु' का वि.सं. 2068 चैत्र कृष्णा 12, दिनांक 18 मार्च 2012 के दिन उज्जैन में देवलोकगमन हो गया। ❖❖

संयम प्रकाश : शिवाचार्य संयम उत्सव पर विशेष

- श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनिजी म.सा.

आत्मार्थी साधक - साधिकाओं हम सभी त्याग, वैराग्य, वीतरागता के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए प्रत्यक्ष-परोक्ष जिनवाणी, अरिहंतवाणी से प्रेरणा प्राप्त कर सद्गुरु से जीवन में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते है। सद्गुरु हमें संयम की प्रेरणा प्रदान करते है। जो साधक संयम को ग्रहण करता है वो महान साधक बन जाता है। हम उसके संयम के संकल्प व संयम दिवस की अनुमोदना करते है और प्रेरणा प्राप्त करते हुए जीवन में संयम के आचरण की उत्कृष्ट भावना करते है। राग से वैराग्य की ओर बढ़ते है, त्याग से वैराग्य आता है, वैराग्य से वीतरागता प्राप्त होती है।

ज्ञान व गुरु - जीवन में ज्ञान का बहुत बड़ा महत्व है। अनादिकाल से जीव ने कर्म बंधन किए उसका मूल कारण अज्ञान था। अज्ञान से ज्ञान प्राप्ति के लिए जीवन में सद्गुरु की आवश्यकता है। सद्गुरु कौन इसका समाधान श्रीमद् राजचन्द्रजी ने आत्म सिद्धि शास्त्र में फरमाया कि -

आत्म ज्ञान समदर्शिता, विचरे उदय प्रयोग।
अपूर्व वाणी परम श्रुत, सद्गुरु लक्षण योग।।

जो गुरु स्वयं आत्मज्ञानी है अर्थात् जो भेद-विज्ञानी है वो हमें भेद-विज्ञान से ज्ञान करवाता है कि तुम हो कौन? तुम्हारा स्वरूप क्या है? गुरु हमें तत्व का बोध करवाते है, तत्व के बोध से जीव आत्मज्ञानी, क्षायिक सम्यक्त्वी बनकर अन्ततः केवलज्ञानी बनता है और निर्वाण को प्राप्त करता है। इसके लिए शिष्य की भी योग्यता चाहिए।

सेवे सद्गुरु चरण ने, त्यागी दई निज पक्ष।
पामे ते परमार्थ ने, निज पद नो ले लक्ष ।।८।।

शिष्य की पात्रता - शिष्य वो जो अपने पक्ष का त्याग करके सद्गुरु की आज्ञा को मानता है, उनकी सेवा में रहकर साधना करता है वो परमार्थ को प्राप्त कर लेता है। निज पक्ष का अर्थ अपने विचार, अपनी धारणाएं, संस्कार का त्याग करना। **निज पद अर्थात्** आत्म स्वरूप, आत्म श्रद्धा, आत्म स्थिरता को प्राप्त कर आत्म ज्ञान, क्षायिक सम्यक्त्व, केवलज्ञान को प्राप्त कर अन्ततः निर्वाण को, सिद्ध पद को, निज पद को प्राप्त कर लेता है। इसके लिए संयम आवश्यक है।

प्रश्न होता है संयम क्या है? जैनागमों में संयम का बड़ा महत्व है। मूल रूप में संयम अर्थात् सम-यम नियम, अणुव्रत, महाव्रत द्वारा अपने जीवन में पांच इन्द्रियों व मन पर विजय प्राप्त करना। मन, बुद्धि, इन्द्रियों के पार जाकर निज आत्मा के दर्शन करना, उस पर श्रद्धा करना, उसमें स्थित होना, यही संयम है। इसे ही जैन दर्शन में त्रिरत्न कहा है, यही मार्ग है।

'सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्षमार्गः'

सत्य का बोध, सत्य पर श्रद्धा व सत्य के आचरण से जीवन में संयम आता है। भगवान की वाणी में इसे संयम कहा है। इसे जो ग्रहण करता है उसे तीर्थ कहते है। भगवान ने दो प्रकार का धर्म बताया आगार व अणगार धर्म।

आगार - गृहस्थ में रहकर संयम की आराधना करता है।

अणगार - घर-परिवार, संसार की जिम्मेदारी से, सम्बन्धों से मुक्त होकर अपनी आत्मा को समय देने के लिए महाव्रत ग्रहण करता है और गुरुकुल में आकर वास करता है और सारा समय जीव को देता है, वह संयमी कहलाता है। उसके लिए आधर है - त्याग, वैराग्य, वीतरागता।

त्याग - मिथ्यात्व का, मोह का व **वैराग्य**-राग का त्याग। मेरे पास, मेरे अलावा, मेरा कुछ नहीं, मेरा कोई नहीं। ये जिसे बोध हो जाता है वो वैरागी कहलाता है। इस **त्याग और वैराग्य के साथ जो संसार का त्यागकर, वीतरागता को लक्ष्य बनाकर जीवन के प्रत्येक समय का उपयोग करता है हम उसे त्यागी, वैरागी, संयमी कहते है।**

ऐसे त्यागी, वैरागी, संयमी शिवाचार्य भगवन् का 17 मई 2024 को 53वाँ संयम दिवस आ रहा है। उन्होंने उत्कृष्ट त्याग, वैराग्य के साथ वीतरागता को लक्ष्य बनाकर संयम ग्रहण किया। गुरुकुल में रहकर ज्ञान का अभ्यास किया। ध्यान की खोज में भारत भ्रमण को निकले और शोध करते-करते उन्होंने पंचम आरे में चतुर्थ आरे की साधना खोज निकाली। स्वयं अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी जी से जुड़कर वे वर्तमान में ज्ञान, ध्यान प्राप्त कर रहे है। उतना

ही नहीं भारत क्षेत्र के अनेकानेक आत्मार्थी बंधुओं के लिए वीतराग मार्ग, राजमार्ग खोल दिया है। वे स्वयं अपनी आराधना से वीतरागता की ओर बढ़ रहे है। हम सभी के लिए एक प्रकाशपुंज बन रहे है।

मई माह शिवाचार्यश्रीजी एवं शिवाचार्य गुरु शिष्य परिवार के लिए भी अनेक आध्यात्मिक अवसर लेकर आता है। अक्षय तृतीया पर गुरु ज्ञान जन्मोत्सव, वैशाख सुद तेरस गुरु ज्ञान दीक्षा एवं वैशाख कृष्णा अष्टमी गुरु ज्ञान पुण्य स्मृति दिवस आता है।

शिवाचार्यश्रीजी का दीक्षा दिवस 17 मई, युवाचार्य पद ग्रहण 13 मई, आचार्य पद चादर समर्पण 7 मई, शिरीषमुनि जी म.सा. दीक्षा दिवस 7 मई, श्री शुभमूमुनिजी म.सा. दीक्षा दिवस 18 मई को आता है। इस अवसर पर सभी के संयम दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं।

आप सभी वीतरागता के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य परम पद को प्राप्त करें, यही मंगलकामना। प्रत्येक आत्मार्थी साधक संकल्प करें मैं जहां हूँ वहीं से अपने जीव को समय देकर, जड़ जीव का भेद ज्ञान कर, पुद्गल के चिंतन का त्याग करते हुए अपने लक्ष्य को तय कर उसे प्राप्त करने की तीव्रता धरण करूंगा। वीतराग पथ का पथिक बनूंगा तो हमारा शिवाचार्य दीक्षा दिवस मनाना सार्थक होगा।

❖❖

छागल

- इस पीढ़ी में बहुत कम लोग होंगे जो इस मोटे कपड़े की थैली से परिचित होंगे इसे छागल कहा जाता है। ये नाम सुनकर कई लोग चौंक पड़ेंगे कि पानी कपड़े की थैली में ?

- ये उन दिनों की बात है जब न बाजार में बोतल बंद पानी मिलता था ना पानी का व्यापार होता था न कोई कैम्प थे न **Milton** की बोतलें थी।

- गर्मी में पानी पिलाना धर्म और खुद का पानी घर से लेकर निकलना अच्छा कर्म माना जाता था।

- गर्मी के दिनो मे उपयोग आने वाली ये छागल एक मोटे कपड़े (कैनवास) का थैला होता था, जिसका सिरा एक और बोतल के मुँह जैस होता था और वह एक लकड़ी के गुट्टे से बंद होता था।

- आप में से किसने इसक उपयोग किया है ?

- छागल में पानी भरकर लोग यात्रा पर जब जाते थे, कई लोग ट्रेन के बाहर खिड़की पर टं टांग देते थे, बाहर की हवा उस कपड़े के थैले के छिद्र से अंद जाकर पानी को ठंडा करती थी।

- गर्मी में जीप में अंदर बैठे उनकी छागल बाहर जीप पर लटकी रहती थी।

- किसान बैलगाड़ी के खल्ल पर छागल लटकाए मंडी की तरफ जाते देखे गए। ये हमा पूर्वज की पानी व्यवस्था थी और सबसे बड़ी बात रास्ते म किसी राहगीर ने अगर छागल का ठंडा पानी देखकर उसे मांग लिया तो कोई मना भी नहीं करता था। क्योंकि ये ईश्वर की आज्ञा थी।

- बैशाख की चटकी दुपहरिया में किसी प्यासे को पानी पिलाना, क्योंकि पानी खरीदा जा सकता है या बेचा जा सकता है ये कल्पना भी नही थी।

- अब 20 रुपये का एक लीटर पानी खरीदने वाली पीढ़ी ना छागल जानती थी ना उसके पानी का स्वाद...

साभार : फेसबुक

साभार :- जिनशासन की श्रेष्ठ मणियाँ ...

महासती कौशल्या

- जे. पारसमल नाहर, टी.नगर, चेन्नई (तमिलनाडु)

प्राचीनकाल में कुशस्थल नाम का एक सुन्दर नगर था। उस नगर के राजा का नाम सुकौशल था। राजा बड़ा ही न्यायप्रिय और प्रजापालक था। प्रौढ़ावस्था में महाराज सुकौशल की पटरानी महारानी अमृतप्रभा की कुक्षि से एक पुत्री-रत्न उत्पन्न हुई। राजकुमारी बड़ी ही रूपवती, लावण्यवान एवं सुकोमल थी। रूप-लावण्य के अनुसार ही उसके गुण थे। अतः उसका नाम अपराजिता रखा गया। राजा सुकौशल की अंगजाता होने के कारण वह कौशल्या के नाम से अधिक विख्यात हुई।

उसी काल में अयोध्या नगरी में महाराज दशरथ राज्य किया करते थे। उन्होंने एक बार कुशस्थल देश पर चढ़ाई कर दो। राजा सुकौशल ने देखा कि महाराज दशरथ की विशाल सेना का मुकाबला करना उनके लिए नामुमकिन है। अतः व्यर्थ में रक्तपात से बचने के लिए उन्होंने महाराज दशरथ की अधीनता को स्वीकार कर अपनी सुकोमल कन्या कौशल्या का विवाह उनके नाथ कर दिया।

राजा दशरथ के कौशल्या के अतिरिक्त तीन और रानियाँ थी - कैकेयी, सुमित्रा और सुप्रभा। महारानी कौशल्या सबसे बड़ी थी और उसका व्यवहार अन्य तीनों के साथ अति सुन्दर एवं मधुर था। वे उन्हें अपनी सगी बहनों से भी बढ़कर मानती थी। कुछ काल पश्चात् चारों रानियों को एक-एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। कौशल्या के पुत्र राम, कैकेयी के भरत, सुमित्रा के लक्ष्मण एवं सुप्रभा के पुत्र शत्रुघ्न कहलाये।

श्रीराम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न के मध्य अत्यन्त प्रगाढ़ प्रेम था। स्नेह का यह संस्कार उन्हें अपनी माताओं के आपसी स्नेह से प्राप्त हुआ था। उन्होंने एक-दूसरे को कभी सौतेला नहीं समझा। अपना शिक्षा काल सम्पूर्ण कर चारों भाइयों ने यौवनावस्था में कदम रखा। मिथिला के राजा जनक एवं महारानी विदेह की अंगजात राजकुमारी सीता ने स्वयंवर में श्रीराम को वरमाला पहनाई और बड़ी धूमधाम के साथ श्रीराम का विवाह सीता के साथ हो गया।

एक समय की बात है। अयोध्या में एक ज्ञानी मुनिराज का पदार्पण हुआ। महाराज दशरथ ने उनके प्रवचन का श्रवण किया और उनको इस संसार से विरक्ति हो गई। उन्होंने अपने बड़े पुत्र राम को अयोध्या की राजगद्दी सौंपकर भागवती दीक्षा अंगीकार करने का निश्चय किया। चारों रानियों ने महाराज दशरथ के इस प्रस्ताव की भूरि-भूरि सराहना की। श्रीराम के राजतिलक का दिन निश्चित हो गया। अचानक रानी कैकेयी के विचार बदल गये। उसे राजमाता बनने की धुन सवार हो गई। किसी समय युद्ध में उसने महाराज दशरथ को सहयोग दिया था और महाराज प्रसन्न होकर उसके वचनबद्ध हो गये थे। उस समय दिये गये वचन का उपयोग रानी कैकेयी ने इस समय किया। उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी की माँग कर दी। धृष्टता से परिपूर्ण इस मांग को सुनकर मारे दुःख के महाराज दशरथ मूर्च्छित हो गये। श्रीराम ने पिता को समझाया कि भरत भी आपका पुत्र एवं मेरा भाई है और भरत को राजगद्दी मिले तो मेरे लिये अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। लेकिन श्रीराम के इस प्रस्ताव को भरत ने अस्वीकार कर दिया। श्रीराम ने जब देखा कि उनकी उपस्थिति में भरत राजगद्दी को कभी स्वीकार को करने वाला नहीं है तो अपने पिता द्वारा दिये वचन की रक्षा हेतु उन्होंने वन की ओर प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया। सीता और लक्ष्मण ने भी उनके साथ वन की ओर प्रस्थान कर दिया।

महारानी कौशल्या को श्रीराम के वन में चले जाने का दुःख तो था, लेकिन भरत के राजा बन जाने का उन्हें कोई खेद न था। वे तो भरत को भी राम ही की तरह अपना पुत्र समझती थी। कैकेयी पर भी उन्हें किसी प्रकार से क्रोध नहीं आया। कौशल्या ने कैकेयी की प्रसन्नता के लिये श्रीराम को खुशी-खुशी वन में जाने दिया। महारानी कौशल्या की हृदय-विशालता का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है?

अपने पिता के वचन की प्रतिष्ठा के लिये श्रीराम, लक्ष्मण और सीता वनवासी बनकर वन में भ्रमण करते रहे तथा अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते रहे। एक दिन सीता को अकेला पाकर लंकापति रावण वहाँ आया और छल-कपट

से उसने सीता का अपहरण कर लिया। किष्किंधा के राजा सुग्रीव एवं वीर हनुमान की सहायता से सीता का पता लगाया गया और राम ने वानर सेना को लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी। रावण अपने परिवार सहित युद्ध में मारा गया। रावण के छोटे भाई विभीषण का राजतिलक करके श्रीराम ने उसे लंका का राजा बनाया और सीता के साथ पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या लौटे।

श्रीराम के इन्तजार में भरत आँखें बिछाये बैठा था। उसने अपने बड़े भाई राम, लक्ष्मण, सीता आदि का स्वागत -अभिनन्दन किया। श्रीराम का राजतिलक हुआ। माता कौशल्या की प्रसन्नता का पार नहीं था। श्रीराम के राजतिलक के अवसर पर किष्किंधा के महाराज सुग्रीव, मिथिला नरेश महाराज जनक आदि अनेक राजा-महाराजा उपस्थित थे। अयोध्या में चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण था।

राजमाता कौशल्या ने अपने जीवनकाल में सुख-दुःख की भारी उथल-पुथल का अनुभव किया, लेकिन हर परिस्थिति को उन्होंने समदृष्टि से सहन किया और धर्म की राह से अपने आप को विचलित नहीं होने दिया। धर्म के इन्हीं संस्कारों से उन्हें संसार के सुखों की असारता का अनुभव हुआ। उन्हें इस नश्वर संसार से विरक्ति हो गई और संयम धारण करने की अपनी इच्छा को श्रीराम के समक्ष प्रकट किया। भारी हृदय से श्रीराम ने माता कौशल्या को अपनी अनुमति प्रदान की। राजकीय सम्मान के साथ राजमाता कौशल्या की भागवती दीक्षा का महोत्सव सम्पन्न हुआ। असंख्य नर-नारियों ने उनके इस आदर्श से प्रेरणा ली। महाश्रमणी कौशल्या को शत्-शत् वन्दन !! ❖❖

पेड़ लगाएं, जागरूकता बढ़ाएं

- **श्री गौतमजी लोढ़ा जैन**, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, श्रीपेरुमबुदुर (तमिलनाडु)

बरगद एक लगाइये, पीपल रोपें पाँच ।
घर-घर नीम लगाइये,यही पुरातन साँच ।।
यही पुरातन साँच, - आज सब मान रहे हैं ।
भाग जाय प्रदूषण सभी अब जान रहे हैं ।।

विश्वताप मिट जाये होय हर जन मन गदगद।
धरती पर त्रिदेव हैं- नीम पीपल और बरगद।।

आप को लगेगा अजीब बकवास है, किन्तु यह सत्य है... पिछले 68 सालों में पीपल, बरगद और नीम के पेडों को सरकारी स्तर पर लगाना बन्द किया गया है। पीपल कॉर्बन डाई ऑक्साइड का 100% एबजॉर्बर है, बरगद 80% और नीम 75 % है। इसके बदले लोगो ने विदेशी यूकेलिप्टस को लगाना शुरू कर दिया, जो जमीन को जल विहीन कर देता है।

आज हर जगह यूकेलिप्टस, गुलमोहर और अन्य सजावटी पेड़ो ने ले ली है। अब जब वायुमण्डल में रिफ्रेशर ही नहीं रहेगा तो गर्मी तो बढ़ेगी ही और जब गर्मी बढ़ेगी तो जल भाप बनकर उड़ेगा ही। हर 500 मीटर की दूरी पर एक पीपल का पेड़ लगायें तो आने वाले कुछ साल भर बाद प्रदूषण मुक्त हिन्दुस्तान होगा। वैसे आपको एक और जानकारी दे दी जाए पीपल के पत्ते का फलक अधिक और डंठल पतला होता है जिसकी वजह शांत मौसम में भी पत्ते हिलते रहते हैं और स्वच्छ ऑक्सीजन देते रहते हैं।

वैसे भी पीपल को वृक्षों का राजा कहते है। इसकी वंदना में एक श्लोक देखिए -

मूलम् ब्रह्मा, त्वचा विष्णु, सखा शंकरमेवच । पत्रे-पत्रेका सर्वदेवानाम, वृक्षराज नमस्तुते ।।

अब करने योग्य कार्य इन जीवनदायी पेड़ों को ज्यादा से ज्यादा लगाने के लिए समाज में जागरूकता बढ़ायें।

साभार - फेसबुक

आत्मा और परमात्मा

- मेवाड प्रवर्तक पू. श्री मदनमुनिजी म.सा. 'पथिक'

आत्मा और परमात्मा एक ही है, दो नहीं। विवेक का हाथ पकड़ लेने से आत्मा की परमात्म से भेंट होती है और फिर आत्मा स्वयं परमात्मा के रूप में प्रकट हो जाता है। उदाहरण पत्थर की पुतली, कपड़े की पुतली और शक्कर की पुतली, ये तीनों पुतलियां स्नान करने को नदी पर गई।

1. पत्थर की पुतली पानी में डूबकर भी वैसे की वैसी ही बनी रही।
2. कपड़े की पुतली पानी में भीगी तो सही, पर धूप लगने पर फिर ज्यों की त्यों हो गई।
3. शक्कर की पुतली पानी में डूब कर उसी में रह गई।

इन तीनों में से आप कैसे बनना चाहते है। अर्जुन माली परमात्मा के दर्शन करने गया तो स्वयं परमात्मा बन गया।

आप सोचिये आत्मा और परमात्मा के एक होने की पहिचान यही तो है।

मानव और मानवता में अंतर : एक छोटा-सा प्रश्न है, मानव और मानवता में क्या अंतर है? संक्षिप्त रूप से इसका यही उत्तर दिया जा सकता है कि मानव और मानवता में उतना ही अंतर है जितना मिट्टी और घड़े में। कच्ची मिट्टी न जल भरने के काम आती है और न ही किसी अन्य पदार्थ को उसमें रखा जा सकता है। कुम्हार मिट्टी में पानी डालकर उसे पैरों से खूब गूंदता है, ठोक-पीट कर उसका पिंड बनाता है, चाक पर चढ़ा कर सही आकृति प्रदान करता है और उसके पश्चात् ही अग्नि में झोंक कर उसे पकाता है। तब कहीं जाकर वह मंगल कलश के रूप में दुनियां में आता है तथा सन्नारियों के मस्तक की शोभा बढ़ाता है।

आप समझ गये होंगे कि कितनी कठिनाईयों में से घड़ा गुजरा। तब कहीं लोग उसे शुभ और उपयोगी समझने लगे। इसी प्रकार जब तक मानव आकृति से ही मानव रहता है, वह मिट्टी के समान किसी के लिए भी उपयोगी नहीं होता, उलटे अपने स्वार्थ के कारण औरों के लिए सिरदर्द बन जाता है जबकि बेचारी मिट्टी तो मिट्टी के रूप में रहकर किसी का अहित नहीं करती।

मिट्टी के समान ही जब तक पत्थर-पत्थर रहता है तब तक उसका कोई मूल्य नहीं रहता, किन्तु कोई कारीगर जब उसे तराशकर सुंदर आकृति का रूप देकर उस पर पॉलिश कर चिकना बनाकर मूर्ति या पुतली का रूप देता है तो सारा विश्व उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। पुतली का मूल्य आंका जाता है। इसी प्रकार मात्र आकृति से रहा हुआ मानव सच्चा मानव नहीं कहला सकता। वह तभी मानव कहलाने का अधिकारी बनेगा जब उसमें मानवोचित गुण आएंगे। अर्थात जब दीन-दुःखी व्यक्ति को देखकर उसके हृदय में करुणा का उद्रेक होगा और वह अपनी शक्ति के अनुसार उनके कष्टों को मिटाने का प्रयत्न करेगा।

नारियों के प्रति माता और बहन का भाव रखते हुए समय आने पर उनकी इज्जत की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए कटिबद्ध रहेगा तथा धर्म का आचरण स्वयं करते हुए औरों को भी संमार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा, तभी वह सच्चा मानव या सच्चा इंसान कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकेगा। किसी कवि ने कहा हैः

नहीं आसान है इन्सान के घर में जन्म पाना।
जन्म लेने से भी मुश्किल है फिर इंसान कहलाना।

कवि का कथन है कि इंसान के घर में जन्म प्राप्त करना अर्थात् मानव पर्याय पा लेना आसान नहीं है।

कवि ने और एक बात अत्यंत महत्वपूर्ण कह दी है वह यह कि इंसान के रूप में जन्म लेने पर भी इंसान कहलाना अत्यंत कठिन है। आगे कहा है -

गति इंसान की सबसे है उत्तम इसलिए मानी।
कि शक्ति है फकत इंसान की मुक्ति को पा जाना।
यह वो इंसान है, जिसको झुकाया सर है देवों ने।
वही इंसान सीखा है, जो ईश्वर बन के दिखलाना।।

इस संसार में जीव चार योनियों में जन्म लेता है। वे है नरक योनि, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति। अनन्तानंत काल तक नरक निगोदादि निकृष्ट योनियों में पुनः पुनः जन्म-मरण करने के पश्चात् जीव मनुष्य और देव योनि

प्राप्त करता है। मनुष्य गति और देव गति दोनों उत्तम है किन्तु इन दोनों में भी श्रेष्ठ है मनुष्य गति। आप सोचेंगे, मनुष्य तो स्वर्ग में देव बन जाने की अभिलाषा रखते है तथा इसीलिए प्रयत्न करते है कि हमें स्वर्ग मिले।

स्वर्ग में देव बनने पर जीव अतुल ऋद्धि का स्वामी बनता है और मनुष्य की अपेक्षा अधिक सुखों का उपभोग करता है। किन्तु उससे स्थायी लाभ क्या है? वहाँ का समय पूरा करने के पश्चात् पुनः उसका संसार भ्रमण प्रारम्भ हो जाता है, क्योंकि वह कर्मों को काट कर संसार से मुक्त होने की करणी तो स्वर्ग में कर ही नहीं सकता। ऐसी शक्ति, करणी सम्पूर्ण कर्मों का नाश करके मोक्ष गति प्राप्त करने की शक्ति केवल मनुष्य में ही है। वही अपनी उत्तमोत्तम करनी के द्वारा संसार से मुक्त होकर ईश्वरत्व को भी प्राप्त कर लेता है।

एक पाश्चात्य विद्वान डिजरायली का कथन है : -

"Man that is made in the image creator is made for godlike deeds.

मनुष्य ही सृष्टिकर्ता के प्रतिबिम्ब में ईश्वरतुल्य कार्य करने के लिए बनाया गया है।

तात्पर्य यही है कि इंसान चाहे तो देवता तो क्या ईश्वर भी बन सकता है, पर देव ऐसा नहीं कर सकते, अर्थात वे कदापि कर्मनाश करके ईश्वरत्व को प्राप्त नहीं कर सकते और इसीलिए उन्हें मनुष्य के समक्ष अपना मस्तक झुकाना पड़ता है।

मानव की दृष्टि : मानव की आंखे उसके हृदय की तालिका और आत्मा का प्रतिबिम्ब होती है। आंखें ही मनुष्य के चरित्र, व्यक्तित्व और उसकी अन्य प्रवृत्ति का एकमात्र दर्पण है। मन के प्रत्येक भाव को आंखों से भली-भांति जाना जा सकता है। जिस प्रकार आंखों से क्रोध स्पष्ट झलकता है उसी तरह स्नेह भी।

भगवान महावीर की आंखों ने ही उनके अंगूठे में दंश देते हुए चंडकौशिक सर्प को अपने स्नेह के द्वारा मुग्ध कर लिया था तथा उसे अपने कृत कर्म का पश्चाताप करने को बाध्य किया था। आंखों की भाषा तो पशु-पक्षी भी सहज ही पढ़ लेते है। अधिक क्या कहें, छोटे-छोटे शिशु भी जान जाते है कि उनकी ओर देखने वाले की दृष्टि में स्नेह है या नहीं। इसीलिए जन हितैषी पुरुष को अपने नेत्र सदा ही प्रेमामृत से छलकते हुए रखने चाहिए ताकि उसके कार्य का, उसकी बात का तथा उसके आचरण का प्रभाव लोगों पर शीघ्र और स्थायी रहने वाला पड़े।

दूसरी बात है, हृदय में दया रखने की। दया के विषय में आप भली भांति जानते है। जिसके हृदय में दया होगी वह कभी किसी का बुरा करने की भावना को भी अपने भीतर नहीं पनपने देगा। दयालु व्यक्ति प्रत्येक प्राणी की आत्मा को परमात्मा का ही अंश मानता है। महात्मा कबीर ने भी कहा है -

दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय,
साई के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।।

अर्थात् इस संसार में चीटी से लेकर हाथी तक सभी प्राणी तो उस एक ही परमपिता परमात्मा के अंश है, फिर किस पर दया की जाये और किस पर निर्दयी बना जाये? अभिप्राय यही है कि व्यक्ति के समक्ष महापापी हो या पुण्यात्मा उसे सभी पर समान भाव से दया रखनी चाहिये। आचार्य हरिभद्र सूरी ने बड़ी मर्मस्पर्शी बात बताई है।

सेयंवरो वा आसंवरो वा बुद्धोवा तहेव अन्नोवा,
समभावः भावि अप्पा सहइ मोक्खं न संदेहो।।

अर्थात् व्यक्ति चाहे श्वेताम्बर हो, दिगम्बर हो, बौद्ध हो अथवा अन्य कोई भी हो, समता से भावित आत्मा ही मोक्ष पा सकती है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। ❖❖

आप अपने जीवन में बहुत से ऐसे लोगों से मिलेंगे जो आपको बताएंगे कि आप काफी अच्छे नहीं हैं। जबकि आप कुछ चीजों के विशेषज्ञ नहीं हो सकते हैं, आपके पास अपनी ताकत और क्षमताएं होंगी और साथ ही ऐसे क्षेत्र भी होंगे जहाँ आप चमक सकते हैं। जबकि कई शैक्षिक उदाहरण होंगे जो आपको कभी हार न मानने के लिए कहेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात जो आपको ध्यान में रखने की आवश्यकता है वह है अपनी ताकत पर ध्यान केंद्रित करना और अपने लक्ष्यों को मील के पत्थर में बदलने के लिए अपने स्वयं के अद्वितीय कौशल और क्षमताओं का उपयोग करना। दूसरों को अपने दिमाग में न आने दें और लक्ष्य पर नजर रखें और आप वहाँ पहुँच जाएंगे। ❖❖

जैन धर्म में संघीय साधना का सर्वोपरि महत्व

- महासती श्री पुष्पवती जी म.सा.

इस पृथ्वी पर मानव एक सर्वाधिक विकसित प्राणी है। वह चिन्तनशील है। चिन्तन के महासागर में गहराई से डुबकी लगाकर जो उसने विचारों के मणिमुक्ता प्रदान किए हैं, वह अपूर्व है। उसने परिवार, समाज, राष्ट्र, धर्म, संस्कृति और सभ्यता का विकास किया है। मानव विकास की लम्बी कहानी है। वह चाहे तो आत्मा से परमात्मा बन सकता है। नर से नारायण बन सकता है।

जैन धर्म में जहाँ व्यक्तिगत साधना को महत्व दिया है, वहाँ सामूहिक साधना का महत्व उससे भी अधिक है। अहिंसा-सत्य आदि व्रतों की साधना वैयक्तिक रूप से की जा सकती है, पर संघीय रूप में सामूहिक साधना का अत्यधिक महत्व रहा है। अपरिग्रह, दया, करूणा- मैत्रीय आदि की साधना संघीय धरातल पर जितनी पल्लवित और पुष्पित होती है, उतनी वैयक्तिक नहीं? यही कारण है कि जैन परम्परा में संघीय साधना का जितना विकास हुआ, उतना व्यक्तिगत साधना का नहीं हो सका। प्राचीन ग्रंथ इस बात के साक्ष्य हैं कि जिनकल्पी मुनि व्यक्तिगत हित को ही सर्वोपरि मानता था, पर अन्त में जिनकल्पी मुनि भी संघीय साधना को स्वीकार कर अपने साधना का चरमोत्कर्ष करता था। संघीय साधना में अपना हित और अपने स्वार्थ को त्याग कर सामूहिक हित और साधना को महत्व देता है। वह परस्पर एक-दूसरे के कार्य में सहयोगी बनता है। एक-दूसरे की पीड़ा में सहयोगी बनकर उसके प्रतिकार के लिए प्रयास करता है। कभी जीवन में अन्तर्द्वन्द हो जाए और स्वयं उसका समाधान न कर सके, ऐसी स्थिति में परस्पर का सहयोग ही सम्बल का कार्य करता है और अंधेरे में उसे प्रकाश मिलता है। पराभव के कठिन क्षणों में वह विजय-वैजयन्ती फहराने के लिए वह अपने मुस्तैदी कदम आगे बढ़ाता है। सामूहिक साधना की यह अपूर्व उपलब्धि है। दूसरों के सुख और हित के लिए अपने हित और सुख का उत्सर्ग करना सामूहिक साधना का संलक्ष्य है।

जीवन को उन्नत और समुन्नत बनाने के लिए संघ का विशिष्ट महत्व रहा है। जिसमें परस्पर स्नेह-सद्भावना-सहयोग-सेवा और समर्पण आदि सद्गुण विकसित होते हैं और सामाजिक भाव का उदय होता है। एक-दूसरे के अवलम्बन और प्रेरणा से संघीय साधना विकसित होती है। व्यक्ति महान् है पर संघ उससे भी महान् है। व्यक्ति से समाज बड़ा है। जैसे समाज और राजनीति में समूह का महत्व है, तो अध्यात्म में भी समूह के महत्व को कम स्थान नहीं है। यदि संघ और समाज नहीं है तो ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धि का महत्व भी नहीं है। जैन साहित्य के प्राचीन पन्ने इस बात की गवाही देते हैं कि तीर्थंकर भी जब समवशरण में विराजते हैं, तब वे 'नमोतित्थस्स' कहकर तीर्थ को नमस्कार करते हैं। चाहे हम तीर्थ कहें, चाहे हम संघ कहें एक ही बात है। जो तीर्थंकर हैं, जिन्होंने साधना के सर्वोच्च शिखर का संस्पर्श कर लिया है, वे भी संघ को कितना महत्व देते हैं। आचार्य देववाचक ने नन्दीसूत्र में प्रारंभ में तीन गाथाओं के द्वारा श्रमण भगवान महावीर की वन्दना की और चौदह गाथाओं के द्वारा संघ की वन्दना की है। अनेक रूपकों के द्वारा संघ को अभिनन्दित किया है। संघ साधक का बहुत बड़ा आलम्बन है, इसीलिए आचार्य के हृततन्त्री के तार झंकृत हुए हैं- 'कल्याण हो संघ का, नमस्कार हो संघ को, यह एक सुन्दर रथ है, जिस पर शील की पताका लहलहा रही है। जिस रथ में दो घोड़े जुते हुए हैं-एक तपस्या का और एक नियम का। इन्द्रिय संयम, मन संयम यही नियम है। नन्दी घोष हो रहा है-आनन्द और मंगल प्रदान करने वाले वाद्य बजा रहे हैं।'

अपने आप में संघ गौरवशाली है। जब तक मछली पानी में रहती है, उसे कोई खतरा नहीं होता। पानी से बाहर निकलने पर वह छटपटाकर मर जाती है। मछली बिना पानी के जी नहीं सकती। पावर हाऊस से कटकर कोई भी बल्ब प्रकाश नहीं कर सकता। शरीर से पृथक् होकर अवयव अपनी कार्यक्षमता नहीं रख पाता। संघ से ही शक्ति का संचार होता है। संघ का सदस्य अपनी क्षमता के अनुसार संघ से शक्ति प्राप्त करता है।

कुछ व्यक्तियों का एक साथ रहना संघ नहीं है, संघ की अपनी एक निश्चित आचार-संहिता होती है। आज सभी व्यक्ति उस आचार संहिता के प्रति समर्पित होते हैं।

❖❖

कष्टों से भागो मत सिर्फ जागो

- साध्वी युगल पू. श्री निधि-कृपाजी म.सा.

मानव का जीवन आत्म-कल्याण हेतु एक वरदान स्वरूप उपलब्धि है। अगर ऐशो-आराम एवं भोग विलास ही मात्र इसकी सार्थकता है तो यह प्राप्ति पशु तुल्य है। देह से ऊपर उठकर आत्मा के केन्द्र पर जीने की जो कला है उसे मानव ही पा सकता है।

इस आर्ट को आत्मसात् करने का रहस्य बताते हुए श्री आचारांग सूत्र उद्‌बोधन देता है, उपसर्ग एवं कष्टों के मध्य भी जो दुःख का स्पर्श नहीं करता वह कष्ट सहिष्णु साधक एक दिन परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। (देखे आचा. सूत्र 5/2/152, अतः 'कष्टों से भागो मत सिर्फ जागो' इसे अपने जीवन का लक्ष्य वाक्य बनाओ।

प्रतिकूलता, संकट या मुसीबतों को सुख में रूपांतरित करने का नाम है कष्ट सहिष्णु बनना। माना कि कष्ट कर्माधीन है, किन्तु उसमें दुःख का एहसास करना है या उसे सुख में बदलना है यह अपने हाथ में है। अर्थात् परिस्थितियाँ सेल्फ निर्मित नहीं है किन्तु उसे कैसे महसूस करना यह स्टेट अहृफ माइंड होने से अपने पर निर्भर है।

जैसे सर्दी या गर्मी का कष्ट सबको है पर उसका दुःख उन्हें होगा जो गर्मी या सर्दी का वेलकम न करे। यही कारण है, स्वीकार भाव की वजह से साधु प्रतिकूलता में भी सुखी है तो अस्वीकार भाव के कारण गृहस्थ तमाम अनुकूलता में जीते हुए भी दुःखी है। कष्टों का सहर्ष वेलकम करना जिसने सीख लिया वह कष्ट सहिष्णु बन गया।

ध्यान दें, चाहे आप अकेले जीएँ या सोसाइटी में रहे किन्तु विचार, व्यवहार, इच्छा एवं संस्कारों की भिन्नता तो सर्वत्र है। इस वैविध्य में सम रहने का नाम सहिष्णुता है। हालाँकि मुसीबत में सहनशील होना इतना आसान नहीं है। इसलिए आज की जीवन शैली से 'सहना' शब्द मानो उड़न-छू हो गया है। मनुष्य ने जीवन की डायरी का वह पन्ना ही फाड़ दिया जहाँ 'सहना' शब्द लिखा गया था। फलतः इन्सान अनचाहा मिलने पर डिप्रेशन में चला जाता है और विपत्ति आने पर अपना दम तोड़ देता है। यहाँ तक कि अनिष्ट की आशंका में मनुष्य आपत्तियों का आकार इतना बड़ा कर लेता है जिसके तले उसका मूल्यवान जीवन भी दब जाता है। रात दिन आत्महत्या की खबरें इसका प्रकट प्रमाण है। आज का इन्सान भूल चुका है, जीवन का दूसरा नाम 'कष्ट' है जो विकास की दस्तक है और संभावनाओं की प्रेरणा है। इसलिए जो प्रतिकूलता को स्वीकारते हैं उनके जीवन में निखार आता है और तेजस्विता जागती है। क्योंकि जब आप दुःख का स्वीकार करोगे तो उसका नेगेटिव पॉवर समाप्त हो जाएगा। अतः ज्ञानी कहते हैं, कष्टों से भागों मत बल्कि कष्टों में जागो।

जीवन में आनेवाले संकट पानी में पैदा होने वाली लहरों जैसे हैं इसलिए न उन्हें पकड़ो और न उनमें उलझो। याद रखना, जो दुःखों से लड़ेगा उसके दुःख भी दीर्घजीवी बन जायेंगे। कहते हैं, जो कष्टों को न स्वीकारे उसके दुःख आकार में बड़े एवं वजन में भारी हो जाते हैं। कष्ट सहिष्णु बनने से दुःख का आकार छोटा हो जाता है और वजन इतना कम कि एक दिन कष्ट स्वयं अपना दम तोड़ देते हैं। इसलिए संकट के समय अपने मन को शरीर, पदार्थ, व्यक्ति और परिस्थिति से ऊपर उठाकर आत्मचिन्तन में लगाना।

मान लो, तेज भूख लगी है और भोजन तैयार नहीं है तो व्याकुल मत होना। बल्कि उस समय ऐसा चिन्तन करना, बहुत से त्यागी, वैरागी एवं तपस्वी संत ऐसे हैं जो तप आराधना में मग्न है। आज मुझे भी तप करने का सहज मौका मिल रहा है। साथ ही उन गरीबों को भी स्मृति में लाना जिन्हें भोजन नसीब नहीं होता। वे कैसे भूख के दुःख को सहते होंगे? मुझे रोज तो समय से पहले भोजन मिल जाता है आज तनिक देरी हो गई तो क्या हुआ?

इस प्रकार मन की बेसब्री और शरीर की डिमाण्ड को शांत करने हेतु मन को उद्‌बोधन देना, 'हे मन! जरा धैर्य रख। मांग पेट की है और तू क्यों नाहक उठापटक में लगा है। अपनी उछलकूद बंद कर। व्यर्थ में क्यों परेशान होता है?' जब भोजन सम्मुख आ जाए तो तपस्वियों को अहोभावपूर्वक

नमन करते हुए उस दिन स्वेच्छा से भोजन का त्याग करके देखना, कितना आनंद मिलता है। आज तक आपने आवेश, मजबूरी या बीमारी में तो बहुत बार आहार त्याग किया होगा परन्तु जिस दिन स्वेच्छा से आहार का त्याग होगा उस दिन भूख की पीड़ा समाप्त हो जाएगी।

बीमारी की अवस्था में सहिष्णु बनना हो तो ऐसा चिन्तन जगाना, शरीर व्याधियों का घर है। जब तक पुण्य का उदय है रोग दबे रहते हैं। आज असाता वेदनीय कर्म के प्रभाव से यह बीमारी उभरकर आई है ऐसे पॉजिटिव चिन्तन के साथ बीमारी का इलाज होगा तो दर्द की मात्रा बढ़ेगी नहीं। शरीर की अनित्यता का चिन्तन बार-बार दोहराने से आत्मिक बल प्रकट होता है और मन भी शांत हो जाता है। अतः कष्ट सहिष्णु बनने का अभ्यास सबसे पहले मन के लेवल पर प्रारंभ करना।

कहा जाता है, कौशाम्बी की महारानी गौतम बुद्ध से द्वेष करती थी। लोग बुद्ध को महापुरुष क्यों मानते हैं यह बात उसे बहुत खलती थी। अतः एक बार उसने यह सोचकर बुद्ध को कौशाम्बी पधारने का संदेशा भिजवाया कि जब वे यहाँ आयेंगे तो मैं मनचाहे ढंग से उन्हें पीड़ित करूँगी।

बुद्ध अपने सकल संघ के साथ कौशाम्बी पधारे तो महारानी ने अपने अनुचरों द्वारा उन्हें पीड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जहाँ भी बुद्ध जाते और उपदेश देते वहाँ वे अनुचर विविध बेहूदे ढंग से धर्मसभा में बाधा पहुँचाते। लोग बुद्ध के वचन न सुन सके ऐसे विघ्न पैदा करते थे। बार-बार ऐसा उपद्रव देख बुद्ध शांत रहे किन्तु शिष्य हैरान हो गए। आखिर परेशान होकर शिष्यों ने कहा, 'भंते! अन्यत्र चलते हैं। ये अनुचर जानबूझकर हमें तंग कर रहे हैं। यदि हम दूसरे शहर में चले जाएँगे तो इनके कष्टों से बच जाएँगे।'

बुद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा, 'यदि ये अनुचर वहाँ भी पहुँच गए तो क्या करोगे?' शिष्य बोले, 'फिर हम वहाँ से भी आगे चले जाएँगे।' बुद्ध ने कहा, 'यह तो कष्टों से भागने का अंतहीन सिलसिला है। ध्यान रखो, स्थान बदलने से कष्ट नहीं बदलते। कष्ट सब जगह आते हैं। कष्टों से भागना समाधान नहीं है, कष्टों में जागना सीखो। जब तक मन की खाल को गेंडे के समान मोटी नहीं बनाओगे तब तक कष्टप्रुफ नहीं बन सकोगे। अतः समाधान यह है, जीवन में पहृजिटिव सहिष्णुता को मजबूत बनाना ताकि निमित्तों की दुनिया का असर न हो।' कभी सोचा! कड़वा रस (चिरायता) प्रसन्न मन से पीने वाला मनुष्य कटु वचनों को क्यों नहीं पी सकता?

कारण स्पष्ट है, कटु रस से मेरा शरीर स्वस्थ बनेगा ऐसा मानकर वह उसका पान प्रसन्नता से कर लेता है। किन्तु कटु वचनों को सहर्ष सहने से मन सशक्त बनेगा और कर्मों की निर्जरा भी होगी ऐसी सम्यक् समझ अभी मन में फिट नहीं हुई है परमात्मा के वचनों में अभी इतनी गहरी निष्ठा नहीं है, इस कारण कटु वचन कड़वे लगते है।

कष्ट सहिष्णु बनने के लिए भगवान महावीर को अपना रोल मॉडल बनाओ। अपने बेचैन एवं व्यग्र मन की तुलना उनके महासंकल्पी मन के साथ करके देखो। साधना मार्ग पर सतत बढ़ने वाले प्रभु को स्मृति में लाओं जिन्होंने निम्न श्रेणी के मनुष्यों द्वारा बोले गए बेफालतू कटु वचनों का भी प्रसन्नता से स्वीकार किया। चूँकि उनका एकमात्र लक्ष्य था, कर्मों की निर्जरा करना अर्थात् आत्मशुद्धि करना।

सेल्फ से पूछो, आज तक मैंने अपने उपकारी व हितकारी माता, पिता व गुरुजनों द्वारा हित वृद्धि से कहे गये कटु वचनों को सहा है या प्रतिकार किया है? जैसे एक लाख का चेक कोई व्यक्ति आपको फटे हुए गंदे लिफाफे में दे तब भी आप सहर्ष स्वीकारते हो। इसी तत्र पर उपकारी हो या अपकारी, सहकारी हो या विरोधी उनके द्वारा प्राप्त शारीरिक मानसिक कष्ट को कर्म निर्जरा के महान उद्देश्य से सहने का संकल्प ही एक दिन कष्ट सहिष्णु बनाता है।

जैसे कपड़े पर लगा दाग आकुलाहट पैदा करता है, खिड़की के कांच पर जमी धूल बेचैन कर देती है, पैरों में चुभा कांटा पीड़ा देता है। इससे भी अनेक गुणी पीड़ा हमें जिस दिन आत्मा पर लगे हुए कर्मों की महसूस होगी उस दिन कर्म निर्जरा के ख्याल मात्र से सहनशक्ति जागेगी। कर्म निर्जरा का ख्याल जागे और मन कष्टों से भागे ऐसा नहीं हो सकता। याद रहे, कष्टों का होगा वेलकम तो कर्मों की होगी भीड़ कम। ❖❖

अक्षय-तृतीया : दान का फल अक्षय भण्डार, दान का महत्व

- डॉ. प्रेमसुख सुराणा जैन, अजमेर (राजस्थान)

संदर्भ - अक्षय तृतीया बैसाख शुक्ला 3, वि.सं. 2081-10 मई 2024 शुक्रवार

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप स्वरूप धर्म के माध्यम से मोक्षमार्ग का कथन किया जा रहा है। ज्ञान दर्शन-चारित्र-तप की आराधना करते हुए अनन्त प्राणी भव-बन्धन को काटकर मुक्ति की ओर बढ़े हैं। सम्यक् के 67 बोल में मोक्षमार्ग के जिन चार चरणों का उल्लेख है, वहाँ कहा है -

दानं सुपात्र सुभगं च शीलं, तपो विचित्रं शुभ भावना च।
भवार्णवोत्तारणयानपात्रं, धर्मश्चतुर्धा मुनयो वदन्ति ।।

यहाँ भी चार प्रकार के धर्म कहे हैं। संसार में समुद्र को पार करने के लिए जहाज या नौका काम आती है, उसी तरह संसार-सागर से पार होने में दान, शील, तप और भावना सहायक हैं। दान-शील-तप-भावना रूप धर्म जहाज भी तिराने में सहायक है, संसार-सागर से पार कराता है।

धर्म किसे कहते हैं? कहा है- 'दुर्गतौ प्रपततो जीवान् रुणद्धि सुगतौ तान् धारयतीति धर्मः' अर्थात् दुर्गति में गिरने वाले प्राणियों को जो धारण करता है, उसे धर्म कहते हैं। इस धर्म के लिए दान, शील, तप और भावना ये चार बातें कही हैं। एक-एक विषय का चिन्तन करें। शील पालना, तप करना और भावना भाने से दान करना सरल है। शील पालना सरल होता तो आज आपके सामने न जाने कितने-कितने झंझट हैं, उन्हें झेलना नहीं पड़ता। श्री चौथमलजी महाराज तो कहते थे कि एक भगवान की आज्ञा मान लेते तो रोज-रोज नारी की आज्ञा नहीं माननी पड़ती। शील पालना सरल नहीं है। यदि सरल होता तो अनेक शास्त्रों के ज्ञाता, वासना के दलदल में फँसकर नीचे गिरते नजर नहीं आते। शील पालना सरल नहीं है तो तप करना भी उतना सरल नहीं है। बन्धुओं! हर एक से सुनना और सुनाना या लड़ना और लड़ाना सहज है, पर अन्न से लड़ना बहुत मुश्किल है। भूख सबसे बड़ा परीषह है। भूख में दो अक्षर हैं। एक है 'भू और दूसरा है 'ख।' भू यानि पृथ्वी, ख अर्थात् आकाश। भूखे को रात में तो तारे दिखते ही हैं, दिन में भी तारे नजर आते हैं। आदमी रहता भले ही जमीन पर है, देखता आकाश की ओर है। शास्त्र कह रहा है भूख न जाने आदमी से कैसे-कैसे पाप कराती है। इस भूख की ज्वाला ने हिंसा कराई, झूठ बोलने पर मजबूर किया। भूख से किसी की गाँठ काटी तो कभी किसी का शील सदाचार भी दाँव पर लगा दिया।

शील पालना सरल नहीं, तो तप करना भी सरल नहीं है। रही भावना की बात तो कहना होगा - भाव शुद्ध हो जाते तो भगवान् बनते देर नहीं लगती। शुभ भावना आना अति कठिन है, बहुत मुश्किल है। शुभ भावना आना सरल नहीं है। बाकी सारे काम किए जा सकते हैं, लेकिन भावों में पवित्रता शुद्धता सहज नहीं आती। आप चाहे घर पर हों या दुकान पर, टी.वी. देख रहे हों या सिनेमा, आप घर परिवार के सारे काम करते हैं, आमोद-प्रमोद के कामों में थकते नहीं, पर क्या सारे काम करते हुए सामायिक स्वाध्याय की बात याद आती है? आप कभी माला जपने बैठ भी जायें तब एक-दो नहीं कई काम याद आ जाते हैं। माला फेरते, संवर-सामयिक करते-करते ज्ञान-ध्यान सीखते कई तरह के विचार आना सहज है। धर्म करते पाप-कार्यों पर ध्यान चला जाता है, किन्तु पाप करते हुए पुण्य की बात याद नहीं आती है।

दान सब कर सकते हैं

ज्ञानियों ने दान को सरल तो बताया ही, पर उसे पहले स्थान पर रख दिया। दान, शील, तप और भावना में दान का स्थान पहला है। कारण है, दान सबसे सरल है। हर व्यक्ति दान दे सकता है चाहे वह छोटा हो या बड़ा। अमीर-गरीब सब दान कर सकते हैं। इस पंचम आरे के रूप कलियुग में सबसे सरल कोई धर्म है तो वह है दान। शील पालना अवस्था के साथ होता है, तपश्चर्या समझदारी से होती है, भावना ज्ञान जगने से बनती है। दान सबके लिए है, सब कर सकते हैं। नीतिकारों ने कहा है -

ब्याजे स्याद द्विगुणं वित्तं, व्यवसाये स्यात चतुर्गुणम्।
क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं दानेऽनन्तगुणं तथा ।।

आप व्यापारी हैं। जानते हैं ब्याज में लगाया धन दिन-रात कमाता है। ब्याज पर लगाया धन दो गुना हो सकता है। व्यवसाय में लगाया धन आदमी की किस्मत चमके

तो चौगुना हो सकता है। खेत में डाला गया दाना सौ गुणा हो सकता है। दान दिया हुआ अनन्त गुणा हो सकता है। आप सब धन बढ़ाना चाहते हैं, इसके लिए अनुभवियों ने कहा - 'दें।' आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने अपने गुरुदेव आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज से दान के सन्दर्भ में सुना।

आप चाहे जिसे दें, दिया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता। भारतवर्ष के सभी धर्मों में विभिन्न व्रत - पर्व, त्यौहारों आदि के प्रति विशेष आस्था है। भारतीय संस्कृति के इतना समृद्ध और विस्तृत होने का एक कारण ये पर्व-त्यौहार भी है। लगभग हर भारतीय अपनी आस्था, विश्वास और पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति के अनुसार इन त्यौहारों को मनाता है। व्यक्ति की जीवनचर्या में ये व्रत और त्यौहार नई प्रेरणा, स्फूर्ति एवं जीवन के प्रति आशावान दृष्टिकोण का संचार करते है। इनके प्रति आस्था, विश्वास मानवीय मूल्यों में वृद्धि करता है और व्यक्ति को गलत रास्ते पर जाने से रोकता है।

दान अगर किसी दीन को देंगे तो वह जहाँ कहीं भी जायेगा, वहाँ कहेगा- अमुक सेठ बड़ा दयालु है। मित्र को देने पर मित्रता प्रगाढ़ होती चली जाएगी। नौकर को देने पर वह दौड़कर हर काम उत्साह के साथ करेगा। सेवक को दान करोगे तो वह धन्यवाद तो करेगा ही, पूरी मेहनत भी करेगा। वह समय असमय की बात भुलाकर हर समय समर्पित बना रहेगा। जो सेवक है उसे दिया गया लाभ भले ही तत्काल न दिखाई दे, परन्तु संघ-समाज की सेवा करने वाला अधिक विश्वास से काम निष्पादित करेगा। याचक को देंगे तो वह जहाँ जायेगा, आपकी यशोगाथा कहेगा। दान सुपात्र को दिया जाय, अभय दान दिया जाय, उसका तो कहना ही क्या! सब दानों में श्रेष्ठ दान है अभयदान। सुपात्रदान, स्वधर्मी दान और अभयदान से पुण्य का उपार्जन होता है, सद्गति प्राप्त होती है, स्थाई सुख मिलता है। दिया गया दान कभी निष्फल नहीं जाता।

दान कौन दे सकता है? शास्त्रकारों ने कहा है- **'स्वर्गश्च्युतानां इह जीवलोके, चत्वारि चिह्नानि भवन्ति लोके।'** स्वर्ग से आने वाले के चार चिह्न हैं। देना है, दीजिये। त्यागियों की सेवा करनी है, कीजिए। दुःखीजनों के दुःख दूर करने हैं, कीजिए। जिसके पास है, वह देगा। देने की भावना होगी तो ही दिया जा सकेगा। कंजूस के पास है, पर उससे देना नहीं होता। कई ऐसे भी हैं जो कहते हैं - किन-किनको दें, इसी तरह देते रहेंगे तो यह जो भी धन है, वह एक दिन समाप्त हो जाएगा।

बादल देते हैं। काले-कजरारे बादल गाँव, जंगल, पहाड़ सब जगह वर्षा करते हैं। देते-देते उनका कालापन दूर होता है, बादल सफेद हो जाते है। वृक्ष देते हैं। देते-देते सूख सकते हैं। कुआँ पानी देता है। कुएँ में पानी निकालते-निकालते हो सकता है पानी कुएँ में रहे नहीं। जो बादल वर्षा करते-करते सफेद हो गए, वे समुद्र से पानी लेकर फिर बरसते हैं। पेड़ फल देता है। फल देते-देते सूख भी जाय तो फिर से हरा-भरा हो जाता है। पानी निकालते-निकालते कुआँ खाली हो गया, ऐसा दिखता है, लेकिन रात में सीरें आएँगी तो खाली कुआँ पानी से लबालब हो सकता है। इसलिए एक कहावत प्रचारित हो गई -

चिड़िया चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर ।
दान दियाँ धन ना घटे, कह गए दास कबीर ।।

देने से कमी आ जाएगी, ऐसा मत सोच लेना। ज्ञान है वह भी यदि दिया जाय तो बढ़ता है। यह तो सरस्वती के भण्डार की महिमा है -

सरस्वती के भण्डार की बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचे त्यों-त्यों बढ़े, बिन खरचे घटि जात ।।

ज्ञान दिया नहीं जाएगा तो विस्मृत हो जाएगा ! ज्ञान-दान में कभी संकोच मत करना। ज्ञान दें। क्यों दें? आचार्य भगवन्त ने तीन दानों को अखण्ड निर्जरा वाले कहा है। वे तीन दान हैं - ज्ञान दान, सुपात्र दान और अभय दान। अगर मिथ्यादृष्टि को सम्यग्दृष्टि बनाना है, अधर्मी को धर्मी बनाना है, पापी को पुण्यात्मा बनाना है, तो दें। आचार्य हरिभद्रजी ने बताया है कि - दान सकल जीवलोक में अमरता की घोषणा करता है।

आप जहाँ है वहाँ संस्कारों का दान करें। आज घर-परिवार में और संघ-समाज में सबसे ज्यादा जरूरत संस्कारों की है। आज आप में से कई लोग हैं जो बातों में बैठ जायें तो घंटों पूरे कर देंगे। तेरी मेरी में समय जाया करने में विचार तक

नहीं आता। राजनीति की क्या गुत्थियाँ हैं, उनको सुनने एवं सुनाने में कितना वक्त बर्बाद हो रहा है, इसकी किसी को परवाह नहीं, पर घर के बच्चों को संस्कार देने का न आपके पास समय और न ही तैयारी। संघ और समाज में समस्याएँ होना नई बात नहीं, लेकिन समस्याओं के समाधान के लिए किसी का कोई चिन्तन नहीं। आप संघ या समाज में अधिकारी हैं, आप जिस दायित्व को लेकर चल रहे हैं, वहाँ कंजूसी नहीं हो।

अगर घर, परिवार, संघ और समाज में धर्म एवं नीति के संस्कार नहीं दिए तथा संस्कारों के अभाव में घर का या समाज का कोई सदस्य अधर्मी अज्ञानी रह गया तो कितना नुकसानदेह होगा? यहाँ बैठे लोगों में से कई ऐसे हैं जो शास्त्र पढ़ते हैं, जानते हैं, बोल और थोकड़े उनको याद हैं, परन्तु यदि वे अपने घर के बच्चों को संस्कार देने में सजग नहीं है, तो मान कर चलिये घर में अन्धेरा है।

आज एक-एक व्यक्ति कई संस्थाओं से जुड़ा है। वह संस्थाओं के काम तो देखता है, परन्तु उसे अपने घर के बच्चों से बात करने की फुर्सत नहीं है। आप पिता हैं, पर जब तक परिवार के बच्चों को संस्कारित नहीं करते हैं तो कैसे पिता हैं? 'पातीति पिता।' संस्कारों का रक्षण करे वह पिता। सन्तानें पशुओं के भी होती हैं, गधों के, कुत्तों के संताने हैं, पर क्या वे पिता कहलाते हैं? मानव, पिता है। इसलिए उसका दायित्व है कि वह अपने बच्चों को संस्कार दे।

आप संघ-सेवी हैं तो स्वधर्मियों के बीच बैठकर धर्म की चर्चा करें, संघ सदस्यों की क्या समस्याएँ हैं, उन समस्याओं को सुनें, समझें और सम्यक् समाधान निकालें तो संघ-सेवी होना और कहलाना सार्थक होगा। घर में बच्चों को, परिवारजनों को और समाज में संघ-सदस्यों को संस्कारों का दान करें। अगर ऐसा करते हैं तो आप इन्द्रनाथजी मोदी की तरह याद किए जाएँगे। आपमें से किसी ने न्यायमूर्ति इन्द्रनाथजी मोदी को देखा है? वे कैसे मधुर सम्भाषण करते थे। वे छोटे बालक से भी बात करते तो आदर के साथ बोलते और मधुरता के साथ समस्या का समाधान करते। जो सबको जँचे और रुचे, उसके अनुसार देते। आज आप घर पर बच्चों को कहीं तूकारे-रेकारे से तो सम्बोधित नहीं करते हैं? किसी बच्चे को बुलाना हो तो कहते हैं - 'अठी आइजे।' एक बार, दो बार कहने पर भी बच्चा नहीं आए तो आपमें से कुछ बोल जाते हैं - 'कठे बळियो, बोळो है काँई, सुणिजे कोनी।' आज घर-घर की स्थिति विचित्र है। बड़ों का मान कम हो रहा है, छोटों का मन नहीं रखा जा रहा है तो कहना होगा 'महलों बैठी कहे, उकरड़ी बैठ सुणे।' कुएँ में जैसी आवाज दी, लौटकर वैसी आवाज आएगी। आपकी भाषा मधुर होगी, ऊँची होगी, अच्छी होगी तो बच्चों में वैसे संस्कार बनेंगे। आप स्वयं बोलने में विवेक न रखो और चाहो कि बच्चे मधुर बोलें, धीरे बोलें, अच्छा बोलें तो यह नहीं हो सकता। बच्चे बड़ों की नकल करते हैं। आपमें से कुछ ऐसे भी मिलते हैं, जिन्हें कहा जाता है कि ज्यादा ऊँची आवाज में नहीं बोलना। उनका जवाब होता है-' बाबजी! म्हारी तो आवाज ही बुलन्द है, धीरे तो बोलीजे कोनी। क्यों? आपका अपनी आवाज को बुलन्द कहना ठीक नहीं है। कारण है कि आप अपने खास लोगों के साथ समय-समय पर कानाफूसी भी करते हैं। बहुत धीरे बातें भी करते हैं। आप जैसा मौका देखते हैं, वैसा आपको बोलना आता है। बुलन्द आवाज कहना तो बहाना है। दुकान पर कोई सेल्स टैक्स या इन्कम टैक्स का इन्सपैक्टर आ जाय तो उसके साथ कैसे बात करते हैं? आप बच्चों को अच्छे संस्कार दें। जरूरत है आप अपना आचार व्यवहार सबके साथ मधुर रखें। जिस घर में संस्कारों की अमर बेल होगी, वह घर स्वर्ग-सा होगा।

जैन धर्मावलम्बी वर्षीतप करते हैं तो अक्षय तृतीया को इक्षु रस ग्रहण करके पारणा सम्पन्न करते हैं। आपका दिया हुआ दान अक्षय कोटि फल प्रदान करता है।

ज्ञानदान एकान्त निर्जरा का कारण है। सुपात्रदान और अभयदान भी एकान्त निर्जरा का कारण है। जीव रक्षा, जीव दया, जीव पर अनुकम्पा सबसे श्रेष्ठ दान है। अभयदान को सर्वश्रेष्ठ दान कहा गया है।

दूसरों पर दया श्रेष्ठ है, पर दूसरों पर दया के साथ अपनी दया भी करें। अपने-आपको अभयदान देना, पाप से निवृत्ति करना है। मैंने तीन करण-तीन योग से हिंसा का त्याग कर लिया। जीव चाहे सूक्ष्म हो, बादर हो अथवा त्रस हो या स्थावर हो, सब जीवों की हिंसा का केन्द्र, सेवा

प्राकृतिक केन्द्र त्याग कर दिया, अभयदान दे दिया, फिर आगार की जरूरत नहीं।

एक है-सुपात्र दान। संसार का प्रत्येक जीव शान्ति चाहता है। हर जीव सुख चाहता है, समाधि चाहता है। भगवती सूत्र स्पष्ट करता है कि तथारूप श्रमण निर्ग्रन्थ को दान देने वाला एकान्त समाधि प्राप्त करता है। जो दूसरों को साता पहुँचाए, सुख समाधि पहुँचाए तो निश्चित मानकर चलिये समाधि देने वाला स्वयं समाधि पायेगा। सुपात्रदान सरल है। अनुभवियों की भाषा में समझें - सुपात्रदान समकित दिलाने वाला है। सुपात्रदान शालिभद्र बनाने वाला है। सुपात्रदान तीर्थंकर नामकर्म गोत्र का उपार्जन कराने वाला है। सुपात्रदान सिद्ध बनाने वाला है। आपने पाया है तो दें। भावना से दें। मुट्ठी बन्द रखने के बजाय खुले हाथ से दें। किसी दीन - दुःखी को, गरीब को, भूखे को देखकर उसका तिरस्कार न करें, बल्कि आपके पास जो है उसमें से कुछ दें।

यह दान-धर्म आज से है, ऐसा नहीं है। यह तो अनादि धर्म है। धर्म तीर्थ की स्थापना नहीं हुई तब भी दान धर्म था। अज्ञानी-मूढ़ तक भी बिना माँगे कुछ न कुछ देते थे। उन्हें कोई बताने, सिखाने, पढ़ाने नहीं आया। चींटी को आटा डालते हैं, चीलों को बड़े लुटवाते हैं, पक्षियों को दाना चुग्गा देने की परम्परा वर्षों पहले की है। कहना होगा जब से मानव है, तभी से दान धर्म हैं। नीतिकारों ने कहा-सूरदास चलते-चलते गड्डे में गिरने लगा, पास में बैठा एक व्यक्ति देखता रहा, पर उसे आगाह नहीं किया तब दूर बैठा तीसरा बोल उठता है - उस बेचारे की तो आँखें नहीं हैं, तुम्हारी आँखें कहाँ गई? तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है?

आपको तैरना आता है। आप तालाब के किनारे खड़े हैं। आपके देखते-देखते कोई बच्चा डूब रहा हो तो उस समय आपका क्या कर्त्तव्य है? आप न जात देखेंगे, न पाँत,- छोटा-बड़ा, गरीब-निर्धन देखे बिना डूबते बच्चे को बचायेंगे, पानी से बाहर निकालेंगे। कोई भूखा है, आपके पास टिफिन भरा हुआ है, उस समय क्या करना चाहिये? क्या उसे देने से मना कर देना चाहिए?

आपके पास है तो घर के दरवाजे खुले रखिये। दान सहज धर्म है, यह तिरने का रास्ता है। आप सुख चाहते हैं तो दान करें। दान चाहे ज्ञान का हो, संस्कारों का हो, अभयदान या सुपात्रदान हो, अगर है तो दें। जिसने दिया है, उसने पाया है। देने वाले को मिलता है। कोई भीखमंगा है वह आपके घर माँगने ही आया है, एकान्त ऐसा नहीं कहा जा सकता। वह यह कहने आया है कि मैंने कभी दिया नहीं, इसलिए आज मैं भीखमंगा हूँ, आपके द्वार पर हाथ फैला रहा हूँ। आपने पाया है तो दे दें, नहीं तो आपको भी एक दिन माँगना पड़ेगा। आप यदि खुशहाल रहना चाहते हैं तो दें।

हम अक्षय तृतीया दिवस मना रहे हैं। सुपात्र दान में केवल सन्त ही नहीं आते। सुपात्र दान में साधु, श्रावक और सम्यग्दर्शनी तीनों आते हैं। साधु को आप देते हैं, देना चाहिए, पर स्वधर्मी बन्धु भी आपसे अपेक्षा रखते हैं। आप शादी-विवाह में पार्टियों में सौ-डेढ़ सौ आइटम बनाकर, बारात को हवाई जहाज से बुलाकर न जाने क्या-क्या करते हैं, पर स्वधर्मी बन्धु जो धर्म से डिंगायमान हो रहा है, उसके लिए क्या करते हैं? इस पर भी कुछ चिन्तन करें। आपने वासुदेव श्रीकृष्ण का जीवन सुना है। उन्होंने घोषणा करवा दी 'जो भी संयम लेना चाहें वे लें, मैं उनके परिवार की देख-रेख करूँगा। धर्मी, धर्म में कठिनाई महसूस कर रहा है। ऐसे समय में आपका दान, उसे धर्म में स्थिर कर सकता है। दान से आप मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ सकते हैं। जो देगा, वह पाएगा। आप ज्ञान दान दीजिये, सुपात्रदान दीजिए, अभयदान दीजिए। दान देने वाला सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त करेगा। लक्ष्मी विद्युतवत् चंचल एवं अस्थिर है। ज्ञानियों ने धन को मांसपिण्ड की उपमा दी है जैसे मांसपिण्ड आकाश में खेचरों के कारण, जल में जलचरों के कारण व स्थल में कुत्ते, असुर के कारण सुरक्षित नहीं रहता वैसे ही घन भी सुरक्षित न होने से उसके धारक को कहीं चैन नहीं मिलता है। अन्ततः धन का वियोग निश्चित होता है।

अतएव धन की गति को समझकर, सद्गृहस्थों को समय रहते उसका सदुपयोग दान द्वारा कर लेने में ही बुद्धिमत्ता है। आज अक्षय-तृतीया के पावन पर्व पर हम दृढ़ संकल्प लें कि हम अपने जीवन में धनलक्ष्मी का उपयोग दान-धर्म व अवश्य करेंगे। इससे हमारा धन अक्षय भण्डार बनेगा। यही दान का महत्व है। ❖❖

संस्कार रक्षा युद्ध में डट जाओ यही समय का तकाजा है
जाग उठो ए युवा साथियों अब समाज ने तुम्हे चेताया है

- श्री विजय कुमार चोपड़ा जैन, अजमेर (राजस्थान)

सरकार ही समाज सुरक्षा की नीव होती है यदि नींव कमजोर पड़ने लगे तो समाज की मजबूती एवं सुरक्षा पर खतरे मंडराने लग जाते है। वर्तमान में हमारा स्थानकवासी जैन समाज नीव की मजबूती पर जोर नहीं देकर आडम्बर, प्रदर्शन, फिजूलखर्ची करके एवं अपनी मूल मान मर्यादा सभ्यता, संस्कृति को गौण करके गलत दिशा की ओर अग्रसर होता जा रहा है जिससे समाज विकास की ओर नहीं बल्कि विनाश की ओर बढ़ रहा है। जोकि चिन्तनीय ही नहीं अपितु निन्दनीय भी है। निन्दनीय कार्य सदैव निंदा के योग्य होते है, यह शाश्वत सत्य है चाहे धार्मिक कार्यक्रम / समारोह हो अथवा सामाजिक कार्यक्रम / समारोह हो। अधिकांशत आडम्बर, प्रदर्शन, फिजूलखर्ची दिखावे से सराबोर रहते हैं। जोकि समाज की मूल मर्यादा, सभ्यता, सस्कृति के विपरीत आचरणयुक्त लगते हैं। यहीं कारण है कि वर्तमान में ऐसी कई घटनायें घटित हो चुकी है, जिससे समाज का वातावरण दूषित होता जा रहा है। प्रेम वात्सल्य, स्नेह के स्थान पर रागद्वेष कटुता पनप रही है। संप्रदायवाद की कट्टरता पनपना, अधिकांशत शिथिलाचार पनपने से शुद्ध साध्वाचार लुप्त होता जा रहा है जिससे धर्म के मर्म पर प्रश्नचिन्ह लग जाते हैं।

सुधार करना एवं अंकुश लगाना बहुत जरुरी है यह वर्तमान समय की आवश्यकता प्रतिपादित हो रही है। समाज के उच्च्व पदों पर पदासीन पदाधिकारी ही सर्वप्रथम संस्कारों के हनन के लिए जिम्मेदार ठहराये जा सकते हैं। चूंकि गहन चिन्तन मनन किया जाये तो यही पायेंगे कि समाज के शीर्ष पदों पर पदासीन अधिकांशतः पदाधिकारी जो है वो स्वयं ही समाज की मूल मर्यादा सम्भयता, संस्कृति से ओत-प्रोत नहीं होकर धन के बल पर स्वयं की झूठी शानों शौकत के लिये समाज को गलत दिशा में धकेलने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

अतः समाज के सजग युवाओं को जाग्रत होकर समाज सुधार के लिए क्रांति का शंखनाद करना होगा। युवा शक्ति ही समाज सुधार करने में सक्षम सिद्ध है। युवाओं को समाज की मूल मान मर्यादा, सभ्यता, संस्कृति, संस्कारों का ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन में संस्कारों का स्वयं वास करके अब समाज की सुरक्षा के लिए संस्कार रक्षा युद्ध में डटकर एकजुट होकर जुटना होगा। यही वर्तमान समाज का महत्वपूर्ण तकाजा है। यही मेरे प्रिय सजग युवा साथियों से विनम्न अर्ज है। किसी भी प्रकार की अविनीत अशातना के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। ❖❖

सुख - दुःख

प्रस्तुति - अरुण कुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

सुख दुःख, देह का, संदेह का
योग का, वियोग का, मन का
मान का, अभिमान का, वेश का, परिवेश का,
पद का, मद का, धन का
वैभव का, स्मृति का, विस्मृति का
गुरुता का, निजता का, रिजुता का
धर्म का, अधर्म का, आध्यात्म का
आसक्ति का, शक्ति का,
ज्ञान का, अज्ञान का,
समझ का, नासमझी का
दिल का, दिमाग का
भाग का, प्रभाग का,
समग्र का,
संक्षिप्त का, असंक्षिप्त का
लोक का, इहलोक का, श्लोक का, परलोक का
हर तरह का, हो सकता है। बशर्ते आप महसूस कीजिए। वरना मन की सब स्थिति है, भ्रम है और यही जीवन विभ्रम है ❖❖

परिस्थिति को जाने, समझे फिर आंकलन करें

- श्री अनिल चतर जैन, जयपुर (राजस्थान)

एक बार समुद्र के बीच में एक बड़े जहाज पर बड़ी दुर्घटना हो गयी। कप्तान ने शिप खाली करने का आदेश दिया। जहाज पर एक युवा दम्पति थे।

जब लाईफबोट पर चढ़ने का उनका नम्बर आया तो देखा गया नाव पर केवल एक व्यक्ति के लिए ही जगह है। इस मौके पर आदमी ने औरत को धक्का दिया और नाव पर कूद गया।

डूबते हुए जहाज पर खड़ी औरत ने जाते हुए अपने पति से चिल्लाकर एक वाक्य कहा... अब प्रोफेसर ने रुककर स्टूडेंट्स से पूछा... तुम लोगों को क्या लगता है, उस स्त्री ने अपने पति से क्या कहा होगा ?

ज्यादातर विद्यार्थी फौरन चिल्लाये... स्त्री ने कहा होगा- मैं तुमसे नफरत करती हूँ! I hate you !

प्रोफेसर ने देखा एक स्टूडेंट एकदम शांत बैठा हुआ था, प्रोफेसर ने उससे पूछा कि तुम बताओ तुम्हे क्या लगता है?

वो लड़का बोला... मुझे लगता है, औरत ने कहा होगा- हमारे बच्चे का ख्याल रखना !

प्रोफेसर को आश्चर्य हुआ, उन्होंने लडके से पूछा.. क्या तुमने यह कहानी पहले सुन रखी थी ? लड़का बोला - जी नहीं, लेकिन यही बात बीमारी से मरती हुई मेरी माँ ने मेरे पिता से कही थी। प्रोफेसर ने दुःखपूर्वक कहा... तुम्हारा उत्तर सही है!

प्रोफेसर ने कहानी आगे बढ़ाई... जहाज डूब गया, स्त्री मर गयी, पति किनारे पहुँचा और उसने अपना बाकि जीवन अपनी एकमात्र पुत्री के समुचित लालन-पालन में लगा दिया। कई सालों बाद जब वो व्यक्ति मर गया तो एक दिन सफाई करते हुए उसकी लड़की को अपने पिता की एक डायरी मिली।

डायरी से उसे पता चला कि जिस समय उसके माता-पिता उस जहाज पर सफर कर रहे थे तो उसकी माँ एक जानलेवा बीमारी से ग्रस्त थी और उनके जीवन के कुछ दिन ही शेष थे। ऐसे कठिन मौके पर उसके पिता ने एक कठोर निर्णय लिया और लाईफबोट पर कूद गया। उसके पिता ने डायरी में लिखा था... तुम्हारे बिना मेरे जीवन का कोई मतलब नहीं, मैं तो तुम्हारे साथ ही समंदर में समा जाना चाहता था, लेकिन अपनी संतान का ख्याल आने पर मुझे तुमको अकेले छोड़कर जाना पड़ा। जब प्रोफेसर ने कहानी समाप्त की तो, पूरी क्लास में शांति थी।

इस संसार में कईयों सही गलत बातें हैं, लेकिन उसके अतिरिक्त भी कई जटिलतायें हैं, जिन्हें समझना आसान नहीं। इसीलिए ऊपरी सतह से देखकर बिना गहराई को जाने-समझे हर परिस्थिति का एकदम सही आंकलन नहीं किया जा सकता।

साभार - फेसबुक

प्राकृत महाकाव्य 'वीरब्भुदयं' की कृति दिनेशमुनिजी म.सा. को भेट

उदयपुर (राजस्थान) : 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जीवनवृत्त पर डॉ. उदय जैन द्वारा स्व रचित 'वीरब्भुदयं' प्राकृत महाकाव्य की प्रथम कृति श्रमण संघीय सलाहकार श्री दिनेशमुनिजी म.सा. को भेंट की। भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण कल्याणक वर्ष के उपलक्ष्य में डॉ. जैन ने 'वीरब्भुदयं' महाव्य में भगवान महावीर के जन्म, दीक्षा, साधना, उपसर्ग व निर्वाण प्राप्ति के साथ-साथ आदिवासी संस्कृति तथा पर्यावरण व तात्कालिक वैशाली के कुंडग्राम की सांस्कृतिक परम्परा को भी सुदर रूप से प्राकृत में प्रस्तुत किया है।

चार सौ आठ पृष्ठों के इस महाकाव्य में 26 अध्यायों सहित 100 से अधिक छंदों का उपयोग किया गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2010 में प्राकृत साहित्य के लिये राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. जैन का यह 'वीरब्भुदयं' 23वाँ महाकाव्य है।

प्रेषक : श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय

वृद्धावस्था को सुखमय कैसे बनाएं ?

- श्री अभयकुमार जैन, भवानी मंडी (राजस्थान)

'बूढ़े होने का अफसोस मत करो, बहुतों को बड़ा होना नसीब नहीं होता।' - सिसरो

'लोग बूढ़े हो जाने के कारण खेलना नहीं छोड़ते, खेलना छोड़ देने के कारण बूढ़े हो जाते हैं।' - होल्म्स

'मनुष्य उतना ही वृद्ध होता है जितना वह महसूस करता है,!' - कोलिन्स

'चाहे 20 की उम्र हो या 80की (आठ हो या 60) का आदमी जब सीखना बंद कर देता है तभी बूढ़ा हो जाता है।
- हैनरी फोर्ड

'व्यस्त आदमी को बूढ़ा होने की फूर्सत ही नहीं।
- आन्द्रेमोरन आ

कहते हैं सीखने सिखाने की कोई उम्र नहीं होती है। कुछ विश्व विख्यात लोगों के नाम का उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा। ग्रांड मोजेज ने 80 वर्ष की आयु में चित्रकला में दक्षता प्राप्त की, माइकल एंजेलो ने अपनी श्रेष्ठ कलाकृतियों का निर्माण 70 वर्ष की उम्र में किया, गुरुवर रविंद्र नाथ टैगोर ने उम्र के 65 वर्ष में चित्रकला सीखना प्रारंभ की। दो वर्षो में 300 से भी ज्यादा चित्र विभिन्न विषयों में बनाकर इतिहास बना दिया। थॉमस एडिसन ने 80 वर्ष की आयु में भी अपने वैज्ञानिक प्रयोग करते रहे और नए आविष्कारों का क्रम चलता रहा। जॉर्ज बर्नार्ड 90 वर्ष की उम्र में भी नाटक लिखते थे। राबर्ट फास्ट्र अपनी मृत्यु के समय 89 वर्ष की आयु तक काव्य लेखन करते रहे।

जैन संत श्रुतधर ज्ञान गच्छाधिपति श्री प्रकाशचंदजी अभी 80 वर्ष की उम्र में प्रतिवर्ष चातुर्मास के पश्चात 8 माह में 600/700 या इससे भी अधिक पैदल विहार करते हैं तथा 500 संत स्त्रियों के मुखिया हैं। उनके समस्त विहार आदि की व्यवस्था देखते हैं तथा सूर्योदय से सूर्यास्त तक अपने स्वाध्याय, पठन, पाठन, प्रवचन, वाचनी आदि धार्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहते हैं तथा शाम को प्रतिक्रमण के पश्चात श्रावको से धार्मिक चर्चा करते हैं। दिन, रात में बिजली, पंखे, तथा मोबाइल किसी भी प्रकार के उपकरणो का प्रयोग नहीं करते हुए अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। गर्मी, सर्दी के दिनों में सूर्योदय के पश्चात 10/15 किमी. पैदल विहार करना, रात्रि में सूर्यास्त पश्चात अन्न/जल ग्रहण नहीं करना आदि बहुतेरी बातें हैं जीवन के इस पड़ाव में कर रहे हैं।

इसके अलावा भी बहुतेरे लोग होंगे जो अपने जीवन की संध्या बेला में जीवन में जड़ता या ठहराव नहीं आने देते हैं। अपनी रूचि के कार्यों में लगे रहते हैं और एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचते है कि वह बूढ़े हो गए हैं, अब उन्हें विश्राम करना चाहिए।

शरीर शास्त्रियों का भी मत है कि शरीर और दिमाग निरंतर काम लेते रहने पर यह लंबे समय तक कार्यक्षम बने रहते हैं। काम लेना बंद करने पर मंद पड़ जाते हैं और बेकार हो जाते हैं।

मनुष्य को उम्र बढ़ने पर बुरा नहीं बनना चाहिए बल्कि वरिष्ठ बनना चाहिए इसीलिए तो आजकल वरिष्ठ शब्द का प्रयोग होने लगा है। बुढ़ापा अन्य लोगों का आधार ढूंढता है और वरिष्ठता तो लोगों को आधार देती है। बुढ़ापा छुपाने का मन करता है और वरिष्ठता को उजागर करने का मन करता है। बुढ़ापा अपने अनुभव का अहंकारी होता है और वरिष्ठता अनुभव, संपन्न, विनम्र और संयमशील होती है। बुढ़ापा नई पीढ़ी के विचारों से छेड़छाड़ करता है और वरिष्ठता युवा पीढ़ी को बदलते समय के अनुसार जीने की छूट देती है। बुढ़ापा जीवन की शाम में अपना अंत ढूंढता है मगर वरिष्ठता तो जीवन की शाम में भी एक नए जीवन का संचार ढूंढती है।

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि बुढ़ापा जीवन का वह पड़ाव है जहाँ व्यक्ति सुख और आराम की जिंदगी जीना चाहता है। चाणक्य ने बताया कि इस पड़ाव में खुशियाँ और चैन पाने के लिए व्यक्ति को बड़ा पैसा किन चीजों का साथ नहीं छोड़ना चाहिए यही आपको हमेशा स्वस्थ और सुखी रहने में सहायक होगी। **1.** धन का सदुपयोग, **2.** अनुशासन, **3.** मददगार

धन का सदुपयोग - पैसा ऐसी चीज है जो अपने

पराये का भेद समझा देती है जब तक आपके पास पैसा है रिश्ते नाते सब जगह आपकी पूछ परख होगी, लेकिन जब धन का अभाव होता है तो अपने भी साथ छोड़ देते हैं। इसलिए चाणक्य कहते हैं कि धन का सदुपयोग करो। पैसों की बचत करोगे तो बुढ़ापे में आपको किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं है।

अनुशासन - अनुशासन और अभ्यास से ही आत्म विश्वास पैदा होता है। चाणक्य कहते हैं कि जो लोग अपना हर काम समय पर करते हैं, अपनी दिनचर्या को अनुशासन से जीते हैं, उन्हें कभी किसी पर निर्भर नहीं होना पड़ता है। वह अपने हर लक्ष्य को प्राप्त ही कर लेता है। चाणक्य के अनुसार शुरुआत से ही व्यक्ति अपने काम को सही समय से सही तरीके से करने की आदत हो तो उसे बुढ़ापे में तकलीफ नहीं होती है। अनुशासन का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। कहते हैं कि जिनमें अकेले और अनुशासन से चलने का हौंसला होता है, एक दिन उनके पीछे काफिले होते हैं।

मददगार - चाणक्य कहते हैं कि जब व्यक्ति किसी भी निस्वार्थ भावना से मदद करता है वह जीवन में कभी उदास और परेशान नहीं रहता है। दान और दया ही सबसे बड़ा धर्म है आपकी आज की मदद आपके कल को सुधरता है। बुढ़ापा सुख और शांति से बीतता है। मदद के लिए अपने हाथ हमेशा खुले रखें, मदद धन के अलावा भी कई प्रकार से की जा सकती है।

इस संदर्भ में भवानी मंडी के निजी चिकित्सक डॉक्टर श्री जे. के. अरोड़ा साहब का उल्लेख करना भी उचित समझता हूँ ताकि आम नागरिकों / आदमियों में एक नया संदेश तथा जीवन जीने के प्रति लगाव वह आकर्षण पैदा हो।

डॉक्टर साहु लगभग 80 वर्ष के युवा है। प्रातः 10 बजे से 3 से 4 बजे तक मरीजों को देखते हैं तथा शाम को भी पुनः 7 बजे से 10 तक मरीजों को देखते व परामर्श देते हैं। हाल ही में 1 अप्रैल से उन्होंने भवानी मंडी के महत्वपूर्ण नून अस्पताल को भी अधिग्रहित किया है। वहाँ की भी समस्त व्यवस्था को भी देखने लगे हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी सदैव हंसमुख तथा प्रसन्नचित रहते हैं। उनके जीवन की यह विशेषताएं की कभी भी किसी मरीज से तेज आवाज में बात नहीं करते हैं उनके चेहरे पर गुस्सा तो देखा ही नहीं है। अर्थात गुस्सा तो उनसे कोसों दूर है। मरीजों से बहुत ही धीमी आवाज में बात करते हैं तथा गंभीर बीमारी में भी इतना वात्सल्य, प्रेम, विश्वास जताते हैं कि बीमार व्यक्ति भी मानसिक रूप से स्वस्थ हो जाता है। एक विशेष बात यह है की भवानी मंडी से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर बूंदी, केशोराय पाटन आदि के बीमार भी कोटा ना जाकर डॉक्टर श्री अरोड़ा साहब में विश्वास जताकर भवानी मंडी आते हैं।

यदि कोई मरीज की आर्थिक हालत खस्ता है तो उसका इलाज निःशुल्क भी करते हैं। नगर की कई सामाजिक संस्थाओं में प्रमुख हैं तथा उनको तथा धार्मिक संस्थाओं को, मुक्तिधाम में खुले हाथों से दान देते है। अभी हाल में ही उनका जन्मोत्सव मनाया तो नगर की अनेकों संस्थाओं, समितियों, नगर के गणमान्य नागरिकों ने उनका सम्मान किया। ऐसा सम्मान पूरे कोटा संभाग में नहीं हुआ, ऐसा पुराने लोग कहते हैं। कुछ बिंदु है जिनको ध्यान में रखकर अपने बुढ़ापे को सार्थक ही नहीं दूसरों के लिए मिसाल बना सकते है।

बचपन-ज्ञानार्जन, जवानी धनार्जन और बुढ़ापा पुण्यार्जन, धर्माजन तथा शांति मुक्ति तथा दूसरों के लिए सहयोगी बनने के लिए है। जो जवानी में बुढ़ापे की सही व्यवस्था कर लेते हैं, उनका बुढ़ापा सुख शांति और तनाव रहित व्यतीत होता है। बुढ़ापा जीवन का सुनहरा अध्याय है। जवानी में तो व्यक्ति दूसरों के लिए जीता है, लेकिन बुढ़ापे में व्यक्ति अपने जीवन के कल्याण, मुक्ति के लिए अपने कदम बढ़ाता है। जीवन भर जो परिश्रम भागदौड़ की है, बुढ़ापे में उसे शांति, विश्राम और आनंद से जीने की कामना करता है, जीवन का वसंत जवानी नहीं बुढ़ापा है।

दिनचर्या - अपनी दिनचर्या नियमित रखें। प्रातः घूमना, व्यायाम, मालिश करें। नियमित समय पर सोना व समय पर प्रातः जल्दी उठें। पर्याप्त नींद ले। उचित आहार-उचित, संयमित संतुलित और सात्विक आहार लें। भूख से कम खाना, अधिक पानी पीना, मिर्च, मसाले, तली हुई वस्तुओं तथा मैदा, शक्कर नमक, घी आदि का प्रयोग सुमचित मात्रा में करें।

स्वास्थ्य के प्रति उदासीन न रहे - अपने स्वाद के प्रति सचेत व सावधान रहें जो जो दवाइयां नियमित चलती है उन्हें समय पर लेते रहे भूल न करें, अपनी दवाइयां 15 दिन की स्टॉक में रखे। अपने सिरहाने अर्थात सोते समय विक्स, झंडु बाम या अन्य कोई जिसकी जरूरत रात में पड़ सकती है बिलकुल नजदीक रखें।

रात में बाथरूम के लिए उठे तो बेहद सावधानी रखें, यदि सहारे के लिए लकड़ी का उपयोग करते हैं तो बिल्कुल पास रखें। बाथरूम में नहाते समय विशेष सावधानी रखें, खुली चप्पल फिसल सकती है अतः सूती कपड़े का पायदान रखें। कपड़े पहनते समय पलंग या कुर्सी का पुनः करें ताकि संतुलन बिगड जाने पर गिरने का डर नहीं रहेगा।

संवाद व सम्पर्क बनाए रखें। पारिवारिकजनों, परिचितों, मित्रों, पड़ोसियों, सामाजिक जीवन में सभी से संपर्क संवाद बनाए रखें। सबसे मिलते-जुलते रहे, किसी के कार्य में व्यर्थ हस्तक्षेप ना करें, व्यर्थ के रायचंद न बनें कोई सलाह ले, परामर्श ले तो सहर्ष दे, बड़ों का सम्मान व बच्चों को प्रेम वात्सल्य दे।

अपने मित्र समूह में उन लोगों को शामिल करें जो आपके जीवन को प्रसन्न देखना चाहते हो या आपके सच्चे हितैषी हो। स्वावलंबी बनें तथा बाजार में जाये तो सावधानी रखें - जब तक शरीर चले स्वयं का कार्य स्वयं करें। किसी की सहायता ना ले। किसी से किसी प्रकार की शिकायत ना करें, अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखें।

बाजार में जब भी सब्जी लेने, दूध लेने बच्चों को स्कूल छोड़ने, लेने जाते समय बहुत सावधानी रखें। आजकल दोपहिया वाहन, चार पहिया वाहन चालक, अंधाधुंध गति से चलते हैं। आवारा पशुओं, विशेष रूप से गाय, बैल, कुत्तों से दूरी बनाए रखें। बरसात के मौसम में चलते समय कीचड़ में फिसलने से बचे, अन्यथा इस उम्र में हड्डी टूटने पर पड़त सी जिंदगी जीनी पड़ती है।

सहयोग की भावना - व्यस्त रहे, आप प्राध्यापक रहे हो, न्यायाधीश, वकील या किसी विशेष, विशेष में विशेषज्ञ रहे हो तो अपने अनुभव का लाभ जरूरतमंद तथा भावी पीढ़ी को निःशुल्क देने का विचार रखें। यह आपको अनुपम अद्भुत मानसिक शांति के साथ आपकी लोकप्रियता को शिखर पर पहुंचा देगा। मस्त रहने के लिए व्यस्त रहना ही चाहिए अच्छी किताबे पढ़ें, स्वाध्याय करें। अच्छी-अच्छी बातों को नोट करें सामाजिक धार्मिक कार्य में रुचि ले।

धार्मिक जीवन - जीवन के संध्याकाल में आदमी अपना जीवन सादगी युक्त बनाएं। अपनी धार्मिक मान्यता अनुसार मंदिर, स्थानक, गुरुद्वारा, गिरजाघर इत्यादि स्थानों पर जायें। साधु, संत, महापुरुषों के संपर्क में रहे। प्रवचन का लाभ लें। इस प्रकार की गतिविधियों से हमें अभूतपूर्व मानसिक शांति और मानसिक ऊर्जा मिलती है तथा हमारा मन फालतू की बातों से हटकर धर्म के प्रति विशेष सूची जाग्रत करता है।

कुछ विशेष सावधानी - अपने स्वयं के स्थायी आवास पर रहे, ताकि स्वतंत्र जीने का आनन्द ले सके, खुले हवादार कक्ष में अपना निवास बनायें। अपना बैंक बैलेंस, भौतिक सम्पत्ति अपने पास रखें, प्रेम में पड़कर किसी के नाम न करें, वसीयत कर दें अपने जीवन के बाद। शुरू से ही अपने बैंक खाते, फिक्स डिपॉजिट व अन्य प्रपत्र संयुक्त नाम से खुलवाये ताकि एक पक्ष के बिछुडने पर भी असुविधा न हो।

अपने बच्चों पर इस वादे पर निर्भर ना रहे कि वृद्धावस्था में आपकी सेवा करेंगे, क्योंकि समय बदलने के साथ उनकी प्राथमिकता भी बदल सकती है और कभी-कभी ना चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाते हैं। अपनी संतानों को पारिवारिक जनों के कामों व जीवन में हस्तक्षेप ना करें। उन्हें अपने तरीके से जीवन जीने दे और आप अपने तरीके से जीवन व्यतीत करें। लोगों की बातें सुने, लेकिन अपने स्वतंत्र विचारों व विवेक से निर्णय लें, हमेशा भावनाओं में नहीं बहे।

फोन / मोबाईल या बातचीत के दौरान अपने प्रियजनों या जिनके साथ आप रहते हैं, उनकी आलोचना या उनकी कमियों का बखान नहीं करें जो भी बात हो सबके सामने हो। परिवार में पक्षपात सौतेला व्यवहार ना करें। व्यर्थ की राजनीति न करें, समान व्यवहार रखें। अपनी स्वजनों, मित्रों, हमउम्र के लोगों का समूह बनाएं ताकि कोई विशेष समस्या या मुसीबत हो तो उसका समाधान सामूहिक निर्णय के आधार पर किया जा सके।

सुखदायी बुढ़ापे हेतू आयुर्वेद के कुछ सूत्र - बुढ़ापे में वात का प्रकोप तो रहता ही है। वात कुपित करने वाले कारण या हेतु का अधिक प्रयोग करने पर वात व्याधियाँ भी विकसित हो जाती है इसलिए वात को भड़काने वाले आहार विहार नहीं करना चाहिए। बहुत रूखा, सूखा, ठंडा, बासी भोजन नहीं करना चाहिए। व्यायाम या टहलने में अति नहीं करना चाहिए, हल्का व्यायाम व टहलना जारी रखें।

उपवास या आंकठ भोजन दोनों से बचना चाहिए। झगड़ा या भिंड़त से बचना चाहिए। जोर लगाकर प्राकृतिक, शारीरिक वेग नहीं निकाले और न आये हुए वेगों का उदीकरण भी नहीं करना चाहिए। आये हुए शारीरिक वेगों को जबरन नहीं रोकना चाहिए। बहुत अधिक रोना या हंसना भी नहीं चाहिए। ऐसी स्थिति न बनायें या किसी प्रकार की चिंता रह जाए, किन्तु अति चिंता, अति प्रसन्नता या भयातुरता से बचें। विषम शारीरिक या मानसिक चेष्टाएं न करें। विरूद्धबान भोजन या विरूद्ध हार, विषमाशन या अजीर्ण या ठंडा बासी भोजन न करें। दिन में ज्यादा सोना और रात में जागने से बचना चाहिए।

मैंने कुछ दिन पहले कुछ पंक्तियां पढ़ी थी - 'बुढ़ापे का इलाज खाना कम और पानी ज्यादा, कर लो तुम स्वंय से वादा।' प्रोटीन अधिक शर्करा का त्याग, शारीरिक श्रम से कभी ना भाग, वाहन कम से कम चलाना, पैदल चलना, ना घबराना। गुस्से पर हे काबू पाना, बहस को कहना हरदम ना ना। धन की चिंता अब ना करना, मुश्किल हो जाएगी वरना। इच्छाओं को दे आहुति, 'इगो' से तुम पालो मुक्ति। बच्चे बड़ों में प्यार बांटना, गलती पर भी नहीं डांटना। इन बातों को कर लो पूरा इंसान कभी ना हो बूढ़ा।

❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 मई से 20 जून 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस

कवि प्रवर्तक श्री सूर्यमुनिजी म.सा.	23 मई
मेवाड प्रवर्तक श्री अंबालालजी म.सा.	09 जून
आचार्य श्री नानालालजी म.सा.	09 जून
आचार्य श्री अजरामरजी स्वामी	15 जून
उपाध्याय श्री हेमचंदजी म.सा.	16 जून
उप-प्रवर्तक श्री अमृतमुनिजी म.सा.	20 जून

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

आचार्य श्री रघुनाथजी म.सा.	25 मई
उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म.सा.	26 मई
उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म.सा.	16 जून

पुण्य स्मृति दिवस

आचार्य श्री जयमलजी म.सा.	22 मई
आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा.	23 मई
आचार्य श्री काशीरामजी म.सा.	31 मई
उपाध्याय श्री फूलचंदजी म.सा. 'श्रमण'	14 जून
आचार्य श्री धर्मदासजी म.सा.	17 जून

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

अरस्तू के सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक उदाहरणों में से एक यह कथन केवल उस संघर्ष की वास्तविकता को व्यक्त करता है जिसे हर कोई शिक्षा प्राप्त करने के वर्षों के दौरान झेलता है। जबकि आपको रास्ते में कई संघर्षों और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

केवल एक चीज जो आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि आप इसे अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहे हैं। अपनी गलतियों के साथ-साथ आपके सामने आने वाली कठिनाइयों से सीखें क्योंकि ये सभी आपके कौशल और क्षमताओं को निखारेंगे और अंततः आपको एक बेहतर और सीखा हुआ व्यक्ति बनाएंगे। ❖❖

राष्ट्रसंत पूज्य श्री कमलमुनि म.सा. 'कमलेश' के 45वें दीक्षा दिवस पर विशेष

- सौ. मधु संचेती जैन, बिगोद (राजस्थान)

श्रमण संघीय आधार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती प्रवर्तक गुरुदेव श्री रमेशमुनिजी म.सा. के सुशिष्य श्रमण संघीय मंत्री गौ प्रेमी राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' ने वैशाख शुक्ला अष्टमी विक्रम संवत् 2081 को अपनी दीक्षा के 44 वर्ष पूर्ण कर 45वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। जब विक्रम संवत 2037 वैसाख शुक्ला अष्टमी के दिन आपकी दीक्षा हुई थी, उस समय ईस्वी सन् की तारीख 22 अप्रैल 1980 थी, अतः बहुत से भक्त ईस्वी सन् की तारीख के अनुसार हर वर्ष 22 अप्रैल को भी आपका दीक्षा दिवस मनाते हैं। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिला अंतर्गत डूंगला में 13 फरवरी 1957 में गुलाबचन्द-मनोहरबाई के घर-आंगन में जन्मे कोमलवाट नागोरी से कमलमुनि बन गये।

यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि मेवाड़ सिंहणी सद्गुरुवर्या पू. श्री यशकंवरजी म.सा. एवं पू. श्री कौशल्याकंवरजी म.सा. ने राष्ट्रसंत के जन्मस्थल डूँगला में संयुक्त चातुर्मास किया था। तब उनके प्रवचनों से कोमलचन्द में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे। भावना इस तेजी से बदली कि वे कठोर साधना करने लगे एवं माताश्री से दीक्षा की आज्ञा माँग ली। अचानक दीक्षा की बात सुनकर भी काफी चिन्तित हो उठी। घबराये मन से माताश्री ने कहा- बेटा! तुम्हारे पिताश्री देवलोक हो चुके हैं। बड़े भाई सरकारी नौकरी में है। तुमने यह कदम उठाया तो फिर घर परिवार को कौन संभालेगा? कोमल ने अपने कोमल मन से ही माताश्री को खूब समझाया, किन्तु माँ नहीं मानी। तब काफी जद्दोजहद के बाद कोमल ने स्पष्ट कहा कि अब तक मुझे दीक्षा की आज्ञा नहीं दोगे, मैं आडा आसन नहीं करूंगा। इसके साथ ही आज्ञा न देने तक मीठे का त्याग सहित कठोर अभिग्रह ले लिया। दीपावली पर शमसान भूमि में जाकर साधना की। वैराग्य की प्रबलता के आगे बेबस माताश्री ने आज्ञा दी तब आपने गुरु के चयन तक एक वर्ष के लिए ब्यावर स्थित जैन दिवाकर छात्रावास में संस्कृत, प्राकृत आदि विषयों सहित जैनागमों का गहन अध्ययन किया। स्वाध्यायी बनकर प्रवचन भी दिए।

इसी दौरान पश्चिम भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव श्री रमेशमुनिजी म.सा. की सरलता, विनम्रता, विद्वता से प्रभावित होकर 22 अप्रैल 1980 को बैसाख शुक्ला अष्टमी पर डूंगला में मेवाड़ गौरव श्री प्रतापमलजी म.सा. के सान्निध्य में दीक्षा ग्रहण कर ली। वर्षीतप का प्रसंग भी साथ में था, करीब 40 संत-साध्वियों सहित हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति थी। दीक्षा के बाद आपको कमलमुनि का नाम दिया गया। अब कोमलचन्द कमलमुनि बनकर जैनागमों के अध्ययन को आगे बढ़ाने में लग गये तथा करीब 4 वर्ष तक गहन अध्ययन के साथ-साथ जैन सिद्धांताचार्य परीक्षा पास की। सरलता, विनम्रता, विनयशीलता, मिलनसारिता, दूरदर्शिता व विवेक से समाज सहित संत-साध्वियों पर आपने गहरा प्रभाव जमाया तथा इन्हीं गुणों की बदौलत दीक्षा के मात्र 5 वर्ष बाद ही गुरुदेव ने आपको अलग से स्वतंत्र चातुर्मास करने की आज्ञा प्रदान कर दी।

उस समय वीरवाल प्रवृत्ति को हाथ में लेकर रामपुरा में चातुर्मास किया, जो ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। शासन-प्रशासन को प्रेरित करके ग्राम प्रधानों को गौशाला खोलने के लिए तैयार किया। सैन्ट्रल जेलों में जाकर लोगों को अपराध मुक्त करने के प्रबल प्रयास किए। जेलों में गौशालाएँ खुलवाई, आतंकवाद व नक्सलवाद को समाप्त करने हेतु उसके बीच जाकर अहिंसा की अलख जगाई। कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा देश के विभिन्न प्रान्तों सहित नेपाल आदि देशों में पैदल विहार कर धर्म जागृति फैलाने वाले कमलमुनिजी म.सा. ने सभी धर्म पंथ के धर्म गुरुओं से मिलकर गहन विचार विमर्श किए। इतना सब होते हुए भी आप सदैव पद मोह से दूर रहे। फिर भी अनेकानेक पदवियों से विभूषित होते ही रहे। देश में राष्ट्रीय मुस्लिम अहिंसा मंच का गठन कर नवीन क्रांति का सूत्रपात किया।

आपकी ही प्रेरणा से बड़ी संख्या में मुस्लिम बन्धु गौरक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। श्रमण संघ में मंत्री पद को सुशोभित करते हुए अपने इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व से श्रमण संघ की शोभा में अभिवृद्धि कर रहे हैं। अपने जन्म स्थल हूँगला में जैन दिवाकर कमल तीर्थ की स्थापना की है, जिसमें पशु-पक्षी की सेवा कार्य के अलावा वृद्ध व अस्वस्थ संत-साध्वियों के आवास की व्यवस्था कर श्रमण संघ में भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया। विगत वर्ष ही आपने विधवा महिलाओं को हीन भावों से मुक्त करने का संकल्प लेकर प्रभावी प्रेरणाएँ दी एवं उन्हें वीरांगना का दर्जा दिलाते हुए उनमें नवीन उत्साह, उमंग व साहस भरने का सफल प्रयास किया है, उसकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। 44वें दीक्षा वर्ष की पूर्णता पर मेरी तो वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप दीर्घकाल तक निरोगी रहते हुए इसी भांति धर्म प्रेरणा के साथ सेवा के सौपान में नित नई गति-प्रगति करते रहें, यही शुभेच्छा। ❖❖

मार्च 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति अप्रैल माह में भी गति प्रदान की गई है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अप्रैल माह में भी अप्रत्याशित कार्य हुए। अप्रैल माह में राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 2,02,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की गई है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 1,32,200 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। इस प्रकार कुल 3,34,200 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में अप्रैल माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

ममतामयी धर्म परायण तपमूर्ति श्रीमती शारदाबाईजी कटारिया जैन का अक्षय-तृतीया पर 54वाँ वर्षीतप पारणा पर तप अभिनंदन

तपस्वीरत्न श्रीमती शारदाबाईजी कटारिया जैन धर्मपत्नी स्व. श्रीमान् सज्जनराजजी कटारिया जैन एक धार्मिक विचारों वाली नित्य साधु-संतों की सेवा में तल्लीन रहने वाली सुश्राविका है। अपने नित्य नियम के साथ ही आपने 1970 से वर्षीतप की आराधना प्रारंभ की जो आज तक चली आ रही है। इस प्रकार आपका 54वाँ वर्षीतप पूर्णता की ओर है। बेला, तेला, चोला, पचोला, अठाई कई बार किये। बड़ी तपस्या में 9,11,15,17,21,24 एवं 101 बार अठाई तप किया। 5 मासखमण तथा रोज की लगभग 18 से 20 सामायिक होते है। करीब 50 वर्षों से चप्पल का भी त्याग है।

दिनांक 10 मई को युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में श्री ए.एम.के.एम. जैन स्थानकवासी मैमोरियल सेन्टर, चेन्नई में आपका 54वाँ वर्षीतप पारणा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार ने आपके तप की अनुमोदना की। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने आपके तप की अनुमोदना करते हुए कहा कि आपने जिस प्रकार से 50 से भी अधिक वर्षों से दिन-रात तप आराधना की है वह वास्तव में अतुलनीय है। आपके पति श्रीमान् सज्जनराजजी कटारिया जैन ने 50 वर्ष तक सिकन्द्राबाद स्थानक में अपनी सेवाएं प्रदान की है तो वहीं जैन कॉन्फ्रेंस में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, वरिष्ठ मार्गदर्शक आदि अनेकों पदों पर रहते हुए निरंतर अपनी सेवाएं प्रदान की है। ऐसा संस्कारित, धार्मिक परिवार विरले ही देखने में आता है। हम आपका स्वागत अभिनंदन करते हैं। ❖❖

समाचार प्रकाश

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव समारोह का उद्घाटन
डाक टिकट तथा सिक्कों का विमोचन

नई दिल्ली : वर्तमान में वर्धमान की जरूरत है। आज भगवान महावीर के उपदेशों की सम्पूर्ण मानव समाज को अत्यधिक आवश्यकता है। विश्व की समस्यायों का निदान भगवान महावीर के शांति और अहिंसा के उपदेश से ही संभव है। उक्त बातें भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी ने नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक समारोह के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर 2550वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन करते हुये कहा। प्रधानमंत्रीजी ने इस अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट तथा यादगार 100 रुपये का सिक्का भी जारी किया। गरिमामय विमोचन समारोह में केन्द्रीय कानून मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल तथा संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी भी थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्रजी मोदी ने भगवान महावीर जन्म कल्याणक समारोह के शुभ अवसर पर 2550वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्रीजी ने कहा आज संघर्षों में फंसी दुनिया भारत से शांति की अपेक्षा कर रही है। नए भारत के इस नई भूमिका का श्रेय हमारे बढ़ते सामर्थ्य और विदेश नीति को दिया जा रहा है। लेकिन इसमें हमारी सांस्कृतिक छवि का वहुत बड़ा योगदान है। आज भारत इस भूमिका में आया है क्योंकि आज हम सत्य और अहिंसा जैसे व्रतों को वैश्विक मंचों पर पूरे आत्मविश्वास से रखते हैं। इसीलिए आज विरोधों में भी बंटे विश्व के लिए, भारत 'विश्व-बंधु' के रूप में अपनी जगह बना रहा है। स्कूली बच्चे द्वारा भगवान महावीर स्वामी पर प्रस्तुत नृत्य नाटिका 'वर्तमान में वर्धमान' का जिक्र करते हुए पीएम ने कहा कि भगवान महावीर के मूल्यों के प्रति युवाओं का समर्पण देश के सही दिशा में आगे बढ़ने का संकेत हैं।

प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए मिशन लाइफ और एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिड के रोडमैप के साथ एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य के दृष्टिकोण जैसी भारतीय पहलों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक संघर्षों के समय में तीर्थंकरों, श्रद्धेय आध्यात्मिक जैन गुरुओं की शिक्षाएं और भी अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा, हम 2500 वर्षों के वाद भी भगवान महावीर का निर्वाण दिवस मना रहे हैं और मुझे यकीन है कि देश आने वाले हजारों वर्षों तक भगवान महावीर के मूल्यों का जश्न मनाता रहेगा। उन्होंने पूर्ववर्ती संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने 2014 में सत्ता में आने पर ऐसे समय में विरासत के साथ-साथ भौतिक विकास को बढ़ावा देने पर जोर दिया जब देश निराशा में डूबा हुआ था। उन्होंने अपनी सरकार द्वारा योग और आयुर्वेद जैसी भारतीय विरासत को बढ़ावा दिए जाने का जिक्र करते हुए कहा कि देश की नई पीढ़ी अब मानती है कि स्वाभिमान ही उसकी पहचान है। प्रधानमंत्री ने भगवान महावीर की शिक्षाओं का पालन करने को कहा क्योंकि इन मूल्यों को पुनर्जीवित करना आज समय की मांग है। उन्होंने कहा, 'जैन धर्म का अर्थ ही है जिन का मार्ग, यानी, जीतने वाले का मार्ग। हम कभी दूसरे देशों को जीतने के लिए आक्रमण करने नहीं आए। हमने स्वयं में सुधार करके अपनी कमियों पर विजय पाई है। इसलिए, मुश्किल से मुश्किल दौर आए, लेकिन हर दौर में कोई न कोई ऋषि, मनीषी हमारे मार्गदर्शन के लिए प्रकट हुए। 'राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागरजी मुनिराज ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी को भगवान महावीर वाणी संग्रह कृति एवं आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज की शताब्दी जन्म जयन्ती का लोगो (स्मृति चिन्ह) भेंट किया। परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागरजी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में नव्य भारत सदाचार की नई वर्णमाला लिख रहा है।

प्रधानमंत्रीजी ने कहा कि भारत भ्रष्टाचार और निराशा के दौर से उबर रहा है क्योंकि 25 करोड़ से अधिक भारतीय

गरीबी से बाहर आ गए है। उन्होंने कहा कि केवल 10 साल पहले ही हमारे देश में कैसा महौल था, यह सबको पता है। चारों तरफ निराशा, हताशा और ये मान लिया गया था कि इस देश का कुछ नहीं हो सकता। भारत में ये निराशा, 'भारतीय संस्कृति के लिए भी उतनी ही परेशान करने वाली बात थी। इसलिए 2014 के बाद हमने भौतिक विकास के साथ ही विरासत पर गर्व का संकल्प भी लिया। आज हम भगवान महावीर का 2550वाँ निर्वाण महोत्सव मना रहे है। आज देश की नई पीढ़ी को ये विश्वास हो गया है कि हमारी पहचान हमारा स्वाभिमान है। जब राष्ट्र में स्वाभिमान का ये भाव जाग जाता है, तो उसे रोकना असंभव हो जाता है। भारत की प्रगति इसका प्रमाण है।

इस मौके पर श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर श्री रवींद्रमुनिजी म.सा. ने कहा कि महावीर का दर्शन युगों-युगों तक विश्व का मार्गदर्शन करेगा। साध्वी सुलक्षणाश्रीजी ने कहा कि जगत कल्याण के लिए निकले महावीर ने महिला सशक्तिकरण कर उन्हें समता का अधिकार दिया। साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा कि महावीर मानवता के महानायक थे। भगवान महावीर मैमोरियल समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालालजी पटावरी ने मोदीजी को शॉल ओढ़ाकर व श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भगवान महावीर 2550वें निर्वाण महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री गजराजजी जैन गंगवाल ने भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा भेंट कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन एवं अन्य राष्ट्रीय/प्रांतीय पदाधिकारीगण देशभर से पधारें।

इस भव्य समारोह का आयोजन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय तथा भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव समिति एवं भगवान महावीर मैमोरियल समिति के संयुक्त तत्वावधान में संयोजन किया गया। **प्रेषक : स्वराज जैन**

जैन भवन में सुश्री बाँसुरी जी स्वराज का स्वागत अभिनंदन कार्यक्रम संपन्न

नई दिल्ली : दिनांक 19 अप्रैल 2024 को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के केन्द्रीय कार्यालय जैन भवन, गोल मार्किट, नई दिल्ली के सांस्कृतिक हॉल में भारतीय जनता पार्टी की नई दिल्ली लोकसभा सीट से प्रत्याशी सुश्री बाँसुरीजी स्वराज के स्वागत अभिनंदन कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं व महिलाओं की उपस्थिति में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। उपस्थित सभी बन्धुओं ने सुश्री बाँसुरी जी स्वराज को आगामी लोकसभा चुनाव में भारी बहुमत से जीत हासिल करने की शुभकामनाएं प्रदान की। सुश्री बाँसुरी जी स्वराज ने सभी को धन्यवाद प्रेषित करते हुए श्रमण भगवान महावीर स्वामी एवं जैन समाज के लोगों एवं उनकी धर्म के प्रति आत्मीय लगन की बहुत तारीफ की।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महावीर प्रसादजी जैन, श्री विपिनजी आनंद प्रकाशजी जैन, श्री सुरेशजी जैन, कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जयप्रकाशजी ललवानी जैन, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री श्री रजनीशजी जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती शीलाजी जैन, दिल्ली प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री दिनेशजी जैन 'रिंढ़ाना' एवं अनेकों राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी तथा कार्यकर्तागण मौजूद थे। कार्यक्रम के पश्चात् गौतम प्रसादी की सुन्दर व्यवस्था कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री अतुलजी जैन-राष्ट्रीय महामंत्रीजी द्वारा रखी गई। कार्यक्रम का सुंदर संचालन राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन द्वारा किया गया।

प्रेषक : जयप्रकाश ललवानी जैन

प्रत्येक व्यक्ति इस दुनिया में एक विशिष्ट नियति के साथ आता है, उसे कुछ पूरा करना होता है, कुछ संदेश देना होता है, कुछ काम पूरा करना होता है। आप यहाँ संयोग से नहीं है। आप यहाँ सार्थक रूप से है। आपके पीछे एक उद्देश्य है।

युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. का पोरूर, चेन्नई महानगर में ऐतिहासिक प्रवेश

चेन्नई (तमिलनाडु) : दिनांक 28 अप्रैल को श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा., पूज्य श्री हितेन्द्रऋषिजी म.सा., नवदीक्षित पूज्य श्री धवलऋषिजी म.सा. आदि ठाणा 3 एवं उप-प्रवर्तिनी पूज्य श्री कंचनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 6 का चेन्नई महानगर में मंगलमय प्रवेश हर्षोल्लास के साथ हुआ। युवाचार्यश्रीजी वानग्राम से विहार कर पोरूर, चेन्नई पधारे। हजारों की तदाद जुलूस में जय-जयकारों की गूंज के साथ सभा स्थल पर पहुंची। पोरूर के महिला मंडल एवं बहु मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किए। **युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति में अगर धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा है तो वही सबसे बड़ा संबल है। आप हमारे माध्यम से धर्म से जुड़ें, क्योंकि धर्म एक जहाज का रूप है जो सबको पार लगा देता है। तमिलनाडु एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सदियों से श्रमण धर्म एक विशिष्ट छाप लिए हुए है। लगभग 32 वर्ष पूर्व आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. यहाँ पधारे थे। उन्होंने श्रमण संघीय श्रावक-श्राविकाओं के एकजुट होने का आव्हान करते हुए श्रमण संघीय एकता बनाएं रखने पर जोर दिया।** पूज्य श्री हितेन्द्रऋषिजी म.सा. ने कहा कि आप समाज के श्रावक-श्राविकाओं के निवेदन पर गुरुदेवश्री चेन्नई पधारे हैं। जहां भी जिस भी क्षेत्र में गुरुदेव हो ज्यादा से ज्यादा प्रवचन में पहुंचने का प्रयास करें। साध्वीजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि गुरुदेव का चातुर्मास चेन्नई को मिला है, सभी को इस पावन अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने कहा कि गुरुदेवश्री के कर-कमलों द्वारा अक्षय-तृतीया के दिन श्रमण संघ निष्ठा पत्र का शुभारंभ किया। यह चेन्नई के सभी लोगों का अहो भाग्य है कि युवाचार्यश्रीजी के चातुर्मास का लाभ हमें मिला है। संपूर्ण चेन्नई में धार्मिक अनुष्ठान, तप-त्याग-तपस्याओं के साथ यह चातुर्मास होगा। युवाचार्यश्रीजी के पावन सान्निध्य में चेन्नई जैन समाज के हर घर में धार्मिक सुसंस्कारों का बीजारोपण होगा, ऐसी मंगलकामनाएं करता हूँ। गुरुदेवश्री ने महती कृपा करते हुए हमें ये अवसर दिया है। संघ गुरुदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। **उन्होंने राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन सहित संपूर्ण कांकरिया लाभार्थी परिवार का अभिवादन करते हुए उनके एवं उनके संपूर्ण परिवार की धर्म के प्रति जागरूकता और अग्रणीय रहने की अनुमोदना की। उनका संपूर्ण परिवार सदैव से ही चेन्नई महानगर में धर्म के प्रति अग्रसर रहे हैं। मैं, उनके परिवार के प्रति उनके सहयोग एवं समर्पण की तहे दिल से मंगलकामनाएं प्रदान करता हूँ।** श्री धर्मीचंदजी सिंघवी जैन, श्री रमेशचंदजी कांकलिया जैन सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

संपूर्ण कार्यक्रम के लाभार्थी सुश्राविका कमलादेवीजी धर्मपत्नी नगरसेठ स्व. महावीरचंदजी कांकरिया जैन-श्री पदमचंदजी, श्री राजकुमारजी, श्री नरेशकुमारजी, श्री पकंजकुमारजी कांकरिया-जसनगर, पोरूर-चेन्नई परिवार का अभिनंदन संघ द्वारा किया गया। संचालक श्री जुगराजजी बोरूंदिया ने कहा कि पोरूर में इसके पूर्व में भी विभिन्न चारित्र आत्माओं का महानगर में प्रवेश हुआ है, जो हमारे संघ के लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के प्रमुखों तथा सभी उपनगरों एवं अनेक स्थानों से पधारे हुए अतिथियों का एस.एस. जैन संघ पोरूर एवं कांकरिया परिवार की ओर से स्वागत किया गया। संघ अध्यक्ष श्री ललितजी सांखला जैन ने कहा कि जिन घड़ियों का इंतजार था आज गुरुदेवश्री के पधारने से पूर्ण हुआ है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय विधायक गणपति सर, भामाशाह श्री सुनीलजी खेतपालिया, श्री नवरतनमलजी चोरड़िया, श्री पप्पूसा जी, श्री भीकमचंदजी लुंकड़ जैन, श्री सुरेशकुमारजी लुणावत जैन, श्री रतनचंदजी सिंघवी, श्री गौतमचंदजी कटारिया, श्री सुरेशजी शाह ललवानी, श्री ज्ञानंचदजी नाहर, श्री रिखबचंदजी बोहरा, श्री सुनीलजी बाफना, श्री प्रकाशजी बोहरा, श्री सुनीलजी लोढ़ा, श्री सुरेशजी गुगलिया, श्री देवराजजी कोठारी, श्री देवीचंदजी बरलोटा, श्री गौतमजी

लोढ़ा, श्री नवरतनजी तालेढ़ा, श्री गिरीशजी भंडारी, श्री नवरनतनमलजी मेहता, श्री मीठालालजी पगारिया, श्री चंद्रप्रकाशजी तालेड़ा, श्री उत्तमचंदजी गोठी, श्री सुदर्शनजी छल्लाणी, श्री अमरचंदजी कोठारी, श्री महावीरजी सिसोदिया, श्री अशोकजी कोठारी, श्री महावीरजी भण्डारी, श्री राजूजी बोहरा, श्री विकासजी कोठारी, श्री आनंदजी बालेचा आदि उपस्थित रहे। सर्वश्री किशनचंदजी छाजेड़, पुखराजजी सांड, जबरजी बंब, ज्ञानचंदजी पोखरना, रतनचंदजी तातेड़, प्रसन्नजी सुराणा, दिलीपजी छल्लाणी, संजयजी महावीरजी मेहता, अरविंदजी रूणवाल, मुकेशजी गुगलिया, कपूरचंदजी जैन सहित पोरूर संघ के सभी कार्यकर्ताओं का सहयोग सराहनीय रहा। संघ मंत्री श्री प्रकाशजी बंब जैन ने पधारे हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद प्रेषित किया।

अक्षय तिथि, श्रमण संघ स्थापना दिवस पर 'श्रमण संघ निष्ठा पत्र' का शुभारंभ

जैन कांफ्रेंस की उत्कृष्ट पहल : पावन निश्राय युवाचार्य भगंवत श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

चेन्नई (तमिलनाडु) : 10 अप्रैल को एम.के.एम. मैमोरियल ट्रस्ट, पुरुषवाकम, चेन्नई के प्रांगण में शिवाचार्य भगवंत के शुभ आशीष, युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. की पावन निश्रा व उप-प्रवर्तिनी महासती पू. श्री कंचनकंवरजी म. सा. आदि ठाणा की गरिमामय उपस्थिति में जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी जैन एवं उपस्थित जैन कॉन्फ्रेंस के वरिष्ठ पदाधिकारी राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेशजी लुणावत जैन, मंत्री राजूजी बोहरा जैन, तमिलनाडु प्रांतीय अध्यक्ष श्री गौतमचंदजी कटारिया जैन, आंध्र-तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारजी कटारिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री जयप्रकाशजी ललवानी जैन, श्री सुरेशजी गुगलिया जैन, श्री गौतमचंदजी दुगड़ जैन, श्री आनन्दजी बालेचा जैन, तमिलनाडु महिला अध्यक्षा श्रीमती सरलाजी सिसोदिया जैन, वर्धमान महासंघ तमिलनाडु के चौयरमैन श्री अभयजी श्रीश्रीमाल जैन, महामंत्री श्री धर्मीचंदजी सिंघवी जैन व एम.के.एम. ट्रस्ट अध्यक्ष श्री सुनीलजी बाफना जैन अन्य स्थानीय पदाधिकारियों के द्वारा **'श्रमण संघ निष्ठा पत्र'** का औपचारिक शुभारंभ विमोचन हुआ तथा विमोचन पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन द्वारा उपस्थित जनसमूह को विधिवत शपथ पत्र पढ़कर श्रमण संघ के संरक्षण संवर्धन हेतु प्रतिज्ञा कराई गई।

इससे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने वक्तव्य में वर्षीतप आराधकों के प्रति अपनी मंगलकामनाएं प्रेषित करते हुए श्रमण संघ निष्ठा पत्र के बारे में कहा कि आज समय की आवश्यकता है। हम अनेक है, किन्तु एक माला में नहीं है। उन्होंने कहा श्रमण संघ निष्ठा पत्र जैन कॉन्फ्रेंस पदाधिकारियों के पास उपलब्ध है तथा आगामी चातुर्मास काल में सभी श्रमण संघीय पूज्यवरो को प्रेषित कर उनसे अधिकाधिक प्रेरणा हेतु निवेदन किया है। उन्होंने इस अवसर पर सभी श्रमण संघीय श्रद्धावान श्रावकों से इसका लाभ उठाने की बात कही। सूरत में आचार्य भगवंत सहित अनेको स्थान पर गुरु भगवंतो के सान्निध्य में शुभारंभ हो रहा है। युवाचार्य भगवंत ने जैन कॉन्फ्रेंस की इस उत्कृष्ट पहल की अनुमोदना करते हुए कहा कि श्रमण संघ हमारे पूज्यवरों का आशीर्वाद, हमारी संस्कृति, आन-बान-शान अतुल्य धरोहर है। इसके लिए हम सबको एक होकर साथ आना ही होगा, इसके लिए कार्य करना ही होगा। स्वयं फार्म भरना है और अन्य आस्थावान को प्रेरणा देना है।

इसके अलावा गुरुदेव ने अक्षय-तिथि के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला तथा मरूधर केसरी मिश्रीमलजी म.सा के दीक्षा दिवस पर उनके गुण स्मरणों अवदानो को याद किया पूज्य श्री हितेंद्रऋषि ने भी सार्थक उपयोगी प्रेरणा प्रस्तुत कर सभा में उत्कृष्ट भाव रखे। आयोजन स्थल पर काउंटर लगाकर तमिलनाडु युवा शाखा के कार्यकर्ताओं द्वारा श्रमण संघ निष्ठा पत्र का सुचारू वितरण किया, जिसमें राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री हरीशजी खारीवाल, श्री शांतीलालजी रांका आदि कार्यकर्ताओं की सेवाएं सराहनीय रही। इस अवसर पर श्री सज्जनराजजी तालेड़ा, श्री ज्ञानचंदजी नाहर, श्री देवीचंदजी बरलोटा, श्री महावीरजी सुराणा, श्री मदनलालजी गुंदेचा, श्री रमेशजी कांकलिया, श्री मोतीलालजी ओस्तवाल, श्री रमेशजी दर्डा, श्री अभयजी कोठारी, श्री आशीषजी रांका, श्री नवीनजी जैन सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रेषक : गौतमचंद दुगड़ जैन

शोक समाचार

महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी का का देवलोकगमन

भारतवर्ष अवतारों की जन्मभूमि, वीरों की कर्मभूमि, विचारकों की चिंतनभूमि एवं महापुरुषों की पावन भूमि है। महापुरुष सूर्य की तरह तेजस्वी होते हैं, जिनमें तेज एवं ओज होता है। ऐसे महापुरुषों की श्रृंखला में आते हैं - हमारे महाराष्ट्र प्रवर्तिनी, संथाराव्रत-साधिका, उज्ज्वलसंघ प्रमुखा, श्रमणी सूर्या, डॉ. पू. श्री ज्ञानप्रभाजी म.सा.।

अस्वस्थता की तीव्र आंधियों से संघर्ष करती हुई एक मशाल अपने अस्तित्व एवं व्यक्तित्व को रत्नत्रय की सम्यक् आभा से प्रसारित करती हुई अनंत में विलीन हो गई। प्रवर्तिनीजी म.सा. एक व्यक्ति नहीं बल्कि श्रमण संघ एवं उज्ज्वल ग्रुप की एक विशिष्ट शक्ति थे।

महाराष्ट्र में जलगांव जिले के नाशीराबाद इस छोटे से कसबे में एक वीरांगना रत्नकुक्षिणी सीताबाई जो बंसीलालजी ललवाणी की सहधर्मिणी, जिन्होंने 22 फरवरी 1937 में अनंत क्षमता एवं संभावनाओं से समृद्ध ऐसे कन्यारत्न को जन्म देकर अपने मातृत्व को संतुष्ट किया।

युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही अपनी क्षमता एवं संभावनाओं को शिखर तक पहुंचाने के लिए गुरु माता पू. श्री विजयकंवरजी म.सा. एवं विश्वसंत, गुरुणी मैय्या पू. श्री उज्ज्वलकुमारीजी म.सा. का शिष्यत्व ग्रहण कर दो वर्ष तक वैराग्य अवस्था में जैन दर्शन का अध्ययन करते हुए 1 मई 1958 को अहमदनगर की पावन तीर्थ भूमि पर आत्मार्थी गुरुदेव पू. श्री मोहनऋषिजी म.सा. के श्रीमुख से सादगी से संयमरत्न ग्रहण करके अध्यात्म साधना हेतु प्रवज्या पथ पर प्रस्थान किया।

प्रबल पुण्योदय के साथ प्रबल पुरुषार्थ का ऐसा सुयोग आपश्री में रहा कि श्रद्धेय गुरुदेव, गुरुमाता, ज्येष्ठ गुरु भगिनी की हर इच्छा को आदेश की तरह समर्पित भावों से सिर आँखों पर रखकर तदनुरूप सम्पन्न किया और उनके संपूर्ण विश्वास का आधार आप बने। आज्ञा एवं अनुशासन की ऐसी कोई सीमा नहीं जिसे लक्ष्मण रेखा नहीं मानी हो।

वर्तमान पत्र में रही सारभूत जानकारी से लेकर आगम, दर्शन, तत्वज्ञान, साहित्य, व्याकरण, सिद्धांत आदि अनेक विधाओं से गहन अध्ययन करते हुए आपका प्रज्ञा और प्रतिभा का कोष सभी समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान केन्द्र बना। इतिहास की पकड़ तो बड़ी अदभूत रही। गुरुमाता पू. श्री विनयकंवरजी म.सा. की प्रेरणा से आपने जैन श्रमण परंपरा में सर्वप्रथम विद्यालय की 11वीं कक्षा की परीक्षा देकर क्रांतिकारी कीर्तिमान स्थापित किया।

मुंबई यूनिवर्सिटी से आपने बी.ए. किया और सर्वोच्च क्रमांक प्राप्त किया। तत्पश्चात् पूना यूनिवर्सिटी से आपने फिलोसॉफी में एम.ए. किया (इंग्लिश मिडियम) और सर्वप्रथम आये 'समयं गोयम मा पमायए' इस सूत्र की सार्थकता को आपके जीवन में दृष्टिगोचर हुआ और आचार्य सम्राट्, राष्ट्रसंत पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. तथा अध्यात्म योगी पू. श्री विनयऋषिजी म.सा. ने आपको पीएच.डी. के लिए प्रेरणा दी। इन महापुरुषों की प्रेरणा एवं अनुग्रह से आपने 'जैन दर्शन में जीवतत्व' इस विषय पर पीएच.डी. की। 1990 में आपको पीएच.डी. की उपाधि मिली।

चरवैति-चरवैति इस सूत्र को सामने रखकर आपने महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान, विदर्भ, मध्य प्रदेश की विहार यात्रा करते हुए जिनशासन की प्रभावना की।

आपके चारित्र की निर्मलता, आचार शुचिता, विचारों की शुभ्रता, व्यवहार में निष्पक्षता, चिंतन की गहनता, संघहित में पराक्रम एवं नेतृत्व क्षमता आदि दुर्लभ विशेषताओं से प्रभावित होकर, आचार्य पू. श्री शिवमुनिजी म.सा. की आज्ञा से, प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म.सा. ने उज्ज्वल संघ की तथा अन्य सभी साध्वियों की सहमति से 6 सितम्बर 2014 के पावन दिवस पर विशाल जाप अनुष्ठान में गोरेगांव (मुंबई) के मेवाड़ भवन में आपको प्रवर्तिनी पद से अलंकृत किया। संघीय एकता एवं गरिमा संवर्धन में आपश्रीजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मानव सेवा, वैय्यावच्च, जन कल्याण, साधर्मी सेवा आदि अनेकविध क्षेत्रों में प्रेरणा देकर जिनशासन प्रभावना की।

8 जनवरी से शारीरिक अस्वस्थता का मानों भूंकप ही आया। आनंद हॉस्पीटल में ट्रीटमेंट से स्वस्थता का अनुभव करने लगे। मार्च महीने से आहार त्याग की प्रोसीजर प्रारंभ कर दी थी और संपूर्णतः आत्मचिंतन में आत्मस्थ हो गए। अप्रमत्त अवस्था की मस्ती में साधना प्रवर्धमान थी। चेहरे पर अनूठी शांति-समता दृष्टिगोचर होती थी। 19 अप्रैल 2024 को ही स्वयं ने चोविहार के प्रत्याख्यान ले लिए थे। 20 अप्रैल को सुबह 4:45 को सागारी संथारा तथा 21 अप्रैल को महावीर जयंति के दिन संपूर्ण संथारा। इस प्रकार संपूर्ण सजग अप्रमत्त अवस्था में भक्तामर श्रवण करते-करते अपनी इस शरीर की यात्रा के साथ समाधीभाव की यात्रा संपन्न की अंतिम उद्गार थे मैं एक या तीन भव करके अपने स्थान (सिद्धक्षेत्र) को प्राप्त करूंगी। समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से वंदन, नमन एवं श्रद्धांजलि **प्रेषक : अशोक बाबूसेठ बोरा जैन**

महासाध्वी पू. श्री सुलक्षणाजी म.सा. का देवलोकगमन

जालंधर (पंजाब) : महासती पूज्या श्री मोहनदेवीजी म.सा. की पौत्र सुशिष्या महासती पूज्या श्री राजेश्वरीजी म.सा. की सुशिष्या, सरलमना, तपोनिधि, मौन साधिका परम पूज्या महासाध्वी पूज्या श्री सुलक्षणाजी म.सा. का दिनांक 10 मई 2024 को जालंधर (पंजाब) में देवलोकगमन हो गया। जैसा कि ज्ञात ही है कि महासतीजी ने निरंतर तप साधना, मौन साधना, धर्म आराधना के द्वारा जिनशासन की निरंतर सेवा की है और भगवान महावीर स्वामी के धर्म संदेशों को चहुंओर फैलाकर समाज में धर्म का, शांति का प्रचार-प्रसार एवं जन-जागरण किया है। ऐसी परम पावन दिवंगत आत्मा के प्रति हम स्वयं की ओर से तथा समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से वंदन, नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि-विनयांजलि-भावांजलि अर्पित करते हैं। अरिहंत परमात्मा दिवंगत आत्मा को अंमि लक्ष्य सिद्धालय प्रदान करें, यही प्रर्थना है।

प्रेषक : संजीव जैन

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

स्वधर्म - परधर्म

एक धोबी के पास गधा और एक कुत्ता था। कुत्ते ने देखा कि मालिक उसे गधे से कम खाना देता है, इसलिए वह मालिक से खफा रहने लगा। एक रात धोबी के घर चोरी हो गई। मगर खफा कुत्ता नहीं भौंका, गधे ने उसे समझाया कि इस वक्त भौंककर मालिक को जगाना तेरा फर्ज है। मगर कुत्ता जिद् में चुप बैठा रहा। उसे इस तरह चुप देख गधे ने खुद ही रेंकना अपना धर्म समझा। उसके जोर-जोर से रेंकने से मालिक की नींद खुल गई। वह गुस्से में उठा और गधे की पिटाई करनी शुरू कर दी। गधा बेचारा मार खाकर चित्त पड़ गया। उसके बाद धोबी अपना खुला घर देख समझ गया कि चोर सारा सामान ले उड़े हैं अब वह कुत्ते की ओर बढ़ा और उसी डंडे से उसने कुत्ते को भी बुरी तरह पीट दिया। थोड़ी ही देर में गधा और कुत्ता दोनों जमीन पर पड़े हुए थे। एक को स्वधर्म पालन नहीं करने की सजा मिली थी तो दूसरे को परधर्म के पीछे भागने की कीमत चुकानी पड़ी। **- रमेश जैन (दिल्ली)**

श्रमण संघीय युवाचार्य भगवंत का चेन्नई महानगर प्रवेश कार्यक्रम पोरूर श्रीसंघ के तत्वावधान में सम्पन्न। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमजी छल्लाणी, कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदसा कांकरिया, उपाध्यक्ष श्री सुरेशसा लुणावत, अध्यक्ष वैय्यावच्च श्री रतनचंदजी सिंघवी, मंत्री श्री राजेन्द्रजी बोहरा सहित अनेक पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का लाभ श्रीमती कमलाबाई सा नगर सेठ महावीरचंद सा कांकरिया परिवार ने लिया।

श्रमण संघीय युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्रऋषि जी म. एवं महासती श्री कंचनकंवरजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में एम.के.एम.मेमोरियल स्थल पर आखातीज (अक्षय तृतीया) के पारणे सुखसता पूर्वक संपन्न ।

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

दिल्ली : संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा भारत मण्डपम प्रगति मैदान नई दिल्ली में आयोजित भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक समारोह में माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री भारत, राष्ट्रसन्त परंपराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज तथा श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्रमुनिजी म. को नमन अभिवनादन करते हुए ।

इस अवसर पर श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म. ने मा. प्रधानमंत्री को साहित्य भेंट किया।

चेन्नई : श्रमण संघीय युवाचार्य भगवंत के सान्निध्य में श्रमण संघ निष्ठापत्र का शुभारंभ उपस्थित जैन कान्फ्रेंस एवं स्थानीय पदाधिकारीगण।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष | अशोक मेहता जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष | अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री | पदमचंद कांकरिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित